RNI No- UPHIN/2017/74520
ISSN: 2584-0843 (Print)
जनवरी 2024 से मार्च 2024,
वर्ष-10 अंक - 1, मुल्य 50 रूपये

# साहित्य सरोज

मेरी अयोध्या

क्यों देखें 12वीं फेल

उफ्फफफ्फ ये प्री –वेडिंग शूट

# महिला दिवस की आपको हार्दिक बधाई

साहित्य सरोज पत्रिका बेसहारा एवं असक्षम महिलाओं को सम्मानजनक जीवकोपार्जन के संसाधन उपलब्ध कराने एवं उनकी प्रतिभा को निःशुल्क समाज के सामने लाने का सम्पूर्ण प्रयास करती है।

# त्रैमासिक पत्रिका
# साहित्य सरोज

**वर्ष–10 अंक –1**

**माह जनवरी 2024 से मार्च 2024**

RNI No- UPHIN/2017/74520

**ISSN: 2584-0843 (Print)**

संस्थापिका –: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

**प्रकाशक** –: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

**कार्यवाहक संपादक** –: अखंड प्रताप सिंह

**प्रधान कार्यालय** –: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

**पिन 232327 (उ0प्र0) मो0 9451647845**

प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत सिंह गहमर, गाजीपुर

विधिक सलाहाकार-श्री अशोक कुमार सिंह, गहमर, गाजीपर

तकनीकि संपादक- राजीव यादव, नोएडा सक्टेर **59**

**ईमेल** sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-:

**https://www.sarojsahitya.page**

**https://sahityasaroj.com/**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।


पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉं एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

**प्रति अंक –50 रूपये मात्र**

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र –गूगल ईमेज द्वारा।

**लेखकों एवं रचनाकारों से अनुरोध** है कि प्रकाशन हेतु अपनी लेख/कविता/कहानी भेजते समय अपनी एक फोटो, पूरा पता एवं मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें, संभव हो तो अपने विषय वस्तु पर एक चित्र भी संलंगन करें।

**पत्रिका प्रतिनिधि बनें सम्पर्क करें 9451647845**

## इस अंक में

### लेख


मनोज सिंह 04
समीक्षा तेलंग 05
संतोष शर्मा शान 07
सतेनद्र कुमार पाठक 13
सीमा मधुरिमा 18
विवेक रंजन श्रीवास्तव19
डॉ शंकर सुवन सिंह 27
सोनल मंजू श्री ओमर 31
सुनीता छाबड़ा 40


### काव्य जगत


ओम जी मिश्र 03
हीरल कावलानी 10
रेनुका सिंह 22
अर्चना बाजेपेई 26
मृदल कुमार 26
विनय बंसल 37
उमेश पाठक 39
कुमकुम कुमारी 42
अर्चना बाजपेई 42


### कहानी


डा अपूर्वा अवस्थी 04
पूनम झा 06
संजय कुमार गिरी 17
सपना चंद्रा 25
पीयूष गोयल 33
राजेश भटनागर 38
पर्यटन जानकारी सुनील जैन राही 21
हमारी मांगे पूरी हो -हास्य 24
संस्मरण -पूजा गुप्ता 37
सत्यकथा -बेदर्द दिल 34
शोध पत्र-प्रियंका खंडेलवाल- 41
शुभकामना अखंड गहमरी 11
जासूसी कहानी लेखन 23
राजधानी के 55 साल 35

# पत्रिका कहिन

मैं साहित्य सरोज पत्रिका 10 अंक में आपका हार्दिक स्वागत करती हूँ। मैं अपने 09 वर्ष के सफ़र को तय करती हुई इस अंक के साथ 10वें वर्ष में पहुँच चुकी हूँ। इन 9वर्षो में आपके साथ-साथ मैनें भी बहुत ही उतार-चढ़ाव देखे। लेकिन सबसे लड़ते-जूझते आपके प्यार और आर्शीवाद के बल पर अपने उद्वेश्यों अपने कार्यो को सफलता के साथ पूरा किया। आर0एन0आई0 और आई0 एस0 एस0एन0 जैसे मानको को प्राप्त किया।

मैं न किसी दबाब में झुकी और न अपने स्वाभिमान अपनी प्रकृति के साथ कोई समझौता किया। मैनें इस बात की परवाह किये बिना कि कौन क्या कहेगा समाजिक बुराईयों, जन-समस्याओं के प्रकाशन के साथ-साथ साहित्य जगत के व्यवसायीकरण ,सम्मानों की खरीद जैसे विषयों पर न सिर्फ बेबाकी से अपनी राय रखी। बन्कि विरोध भी किया।

आज देखा जा रहा है कि कई संस्थाएं साहित्य सेवा के नाम पर बिना किसी योग्यता के बिना किसी सेवा के 1000-1000 रूपये लेकर सम्मान का बंदरबाट कर रही हैं। 500-500 रूपये लेकर सम्मान घर भेजवा रही हैं। ऐसे में साहित्य और सम्मान का स्तर कहां जायेगा आप कल्पना करके देखीये, परिणाम कितने भयानक दिखाई देगें। मैं ऐसे सम्मान बिक्री करने वाली संस्थाओं एवं खरीद करने वाले लोगो को जनमानस के सामने लाती रही है और लाती रहूँगी। साथ ही हकीकत के धरातल पर उतर कर निस्वार्थ साहित्य, कला, बाल एवं महिला उत्थान के क्षेत्र में कार्य करने वालों को खोज कर उनका परिचय समाज से कराते हुए उन्हें सम्मानित करने का काम करती रही हूँ, करती रहूँगी। मैनें साहित्य मठाधीशी प्रथा का अंत करते हुए योग्य लोगों का खुल कर साथ देते हुए उन्हें आगे लाने का काम किया। जो आपके सहयोग के बिना संभव न था।

मैने अप्रैल 2023-24 में अपने कार्यक्रमों की शुरूआत अपनी संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 6वीं बरसी पर श्रद्धांजलि सभा से किया।

इस दौरान मां कामाख्या धाम गहमर में देश के साहित्यकारों, कलाकारों एवं शिक्षाविदों के सौजन्य से 9दिवसीय दर्शनार्थी सेवा शिविर आयोजित किया, जो पूर्ण रूप से सफल रहा।

उसके बाद पत्रिका दिसम्बर माह में 09वें गोपाल राम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव का सफलता पूर्वक आयोजन किया जिसके बारें में आप वर्ष 09 अंक 4 में पढ़ चुके हैं। यदि नहीं पढ़ा तो आप 9451647845 पर काल करके मुझे मंगा सकते हैं।

08 मार्च 2024 को मैनें वर्ष के अंतिम कार्यक्रम के रूप में अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर 11 महिलाओं को सम्मानित कर किया।

**वर्ष 2024-25 के आयोजन व कार्य**

02 अप्रैल 2024 को साहित्य सरोज पत्रिका की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 7वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम।

09 से 17 अप्रैल 2024 तक माँ कामाख्या धाम गहमर में 9 दिवसीय माँ दर्शनार्थी सेवा शिविर।

20 से 22 दिसम्बर 2024 तक 10वां गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव।

08 मार्च 2025 को महिला दिवस पर कार्यक्रम।

पत्रिका में संस्मरण एवं जासूसी कहानियों को प्राथमिकता।

पत्रिका में उनकी ही कहानियों, लेखों, कविता का प्रकाशन कर लेखक प्रति भेजा जायेगा जो पत्रिका की वेबसाइट पर लोकप्रिय होगी।

पत्रिका अपने प्रतिनिधि बनने हेतु आपको आमंत्रित करती हैं। आपके सहयोग से वह आपके शहर में जासूसी कहानियों, संस्मरण, फिटेनस, पर कार्यशाला का आयोजन भी करेगी।

पत्रिका आपके स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की कामना करते हुए आपसे सदैव सहयोग की अपेक्षा रखती है। प्रणाम।

"पहला सुख निरोगी काया"
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

# माँ के नौ रूप

छंद

नव देवियों में रूप आपका प्रथम पूज्य
शैलपुत्री मंजु मन मोह रहा आपका।
मन में बसा के तव मूर्ति यदि मातु अम्ब,
साधना करे तो शीघ्र नाश होवे पाप का।
कवच का पाठ आठ याम में जो एक बार,
करता है नित्य तो प्रभाव हो न शाप का।
नाम-जाप काटता,अनन्त दुःख-दाप देवि!
ऋद्धि-सिद्धि बाँटता,प्रताप मंत्र- जापका।।

अप्रतिम तेज , अद्वितीय कल कान्तियुत
मातु मुख से हैं होते तीनों लोक दीप्तिमान
तप त्याग की विराग, सदाचार संयम की
अभिवृद्धि करती स्व-भक्त का बढ़ाती मान
मातु ब्रम्हचारिणी कृपा है पूर्ण सिद्धि-सेतु
आत्म-ज्ञान अम्ब,अति शीघ्र करती प्रदान
तीनों-ताप-हारी,मातु शैलजा-दुलारी का है,
नाम-रूप-गुण गान,जप-लीला- धाम-ध्यान।

दिव्य अस्त्र-शस्त्र दस हाथ युद्ध उद्यत सी,
सिंह की सवारी मनोहारी छवि माँ की है।
माथे अर्ध चन्द्र शुभ्र घंटिका सा साज रहा,
फलदायी सुखदायी यह झाँकी है।
सर्वशक्तिमान माँ सर्वत्र ही विराजमान,
नकी अकूत शक्ति जाए नहीं आँकी है।
सौम्यता विनम्रता व वीरता प्रदान करे,
कष्ट सब हरे माँ की दिव्यदृष्टि बाँकी है।

अन्धकार व्याप्त चहुँ ओर सृष्टि पूर्व रहा,
किंचित प्रकाश नहीं सब ओर काला है।
चौथी दुर्गा-शक्ति ने कूष्माण्डा रूप धारा रम्य,
ईषत सुहास्य से ब्रह्मांड रच डाला है।
गदा,धनु,बाण,चक्र,कमण्डल,घट,पुष्प,
एक एक निज सात हाथ में सँभाला है।
और हाथ आठवें में उनके अनूप दिव्य,
अष्ट-सिद्धि ,नव-निधियों की मंजु माला है।

मां शैलपुत्री

मां स्कंदमाता

मां ब्रह्मचारिणी

मां कात्यायनी

मां चंद्रघंटा

मां कालरात्रि

मां कुष्मांडा

मां महागौरी

माँ का पाँचवाँ स्वरूप,दिव्य भब्य औ अनूप,
प्रेम वात्सल्य भाव मन में जगातीं हैं।
तुंग शृंग राजतीं विराजतीं हैं पद्म पुष्प,
सुप्त चेतना में प्राणवायु भर जाती हैं।
सिंह की सवारी भुजचारी स्कंदमात सदा,
बालरूप कार्तिकेय संग मोद पातीं हैं।
कालिदास जैसे मतिमूढ़ से भी गूढ़ ग्रन्थ,
रघुवंश मेघदूत आदि रचवाती हैं।

मातु कात्यायनी का स्वरूप है अनूप दिव्य,
चार भुजधारी करें ,सिंह की सवारी मातु।
ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्र तेज से प्रकट हुईं,
हेमावती उमा गौरी काली नामधारी मातु।
साधक का मन आज्ञा, चक्र में रमा हो जब,
आत्मदान करने से,सिद्धि देती सारी मातु।
साधक को देती है,अलौकिक प्रभावी तेज,
रोग -शोक शाप - ताप, भव-भयहारी मातु।

कालिका के श्वास-प्रश्वास अग्निज्वाल बहे,
वाहन गर्दभ सप्त-सिद्धि की प्रदात्री मातु।
वरमुद्रा हेतु उठा ऊर्ध्व हाथ दायाँ और
अभय की मुद्रा अधो हाथ से बनाती मातु।
बाम ऊर्ध्व हाथ लौह काँटा और अधो हाथ,
असुर संहारिका कटार हैं चलाती मातु।
काल की भी काल विकराल रूप धारे किन्तु,
शुभ फल दात्री भयमुक्त कर जाती मातु।

शुभ्र शंख,शशि, कुन्द सम गौरवर्ण वपु
दुर्गा महागौरी शक्ति अष्टम कहाती हैं।
भूषण वसन श्वेत, श्वेत वृष वाहन है,
सौम्य शान्त मुद्रा द्वारा मन को लुभाती हैं।
सद्य फलदायिनी अमोघ शक्तिवान मात
दैन्य-दुख पाप से संताप से बचाती हैं।
शरण में आया भक्त नहीं रहता अशक्त,
देकर अभय वरदान उसे जाती हैं।

मां सिद्धिदात्री

अष्टदस सिद्धि की प्रदात्री सिद्धिदात्री मातु
एकमात्र सिद्ध मेरी लेखनी को कीजिए।
बुद्धि व विवेक मातु लेश नहीं शेष रहा,
रिक्त ज्ञान-कोष को अशेष भर दीजिए।
घोर अन्धकार मन मानस में व्याप्त हुआ,
अन्तस का तम मातु आप हर लीजिए।
शरण हूँ तेरी, मत देरी करो जगदम्ब,
सुनके पुकार आर्त कुछ तो पसीजिए।

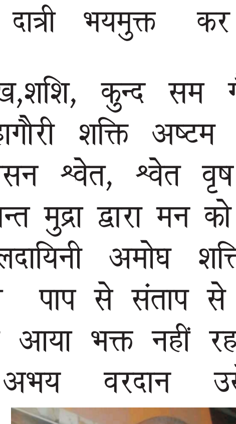

ओमजी मिश्र ,लखनऊ
94500 82362

लेख

# घर की मुर्गी

आज समय है ,समय निकाल लें ,नहीं तो कल सिवा पश्चाताप के कोई और विकल्प नहीं रहेगा। आज के दूषित वातावरण और खान-पान के बीच कब हमारे शरीर में चर्बी जमा होकर एक किलो, आधा किलो करते-करते हमारे शरीर के वज़न की सीमा कब पार कर देती है, हमें ही पता नहीं चलता। पता तो तब चलता है,जब कपड़े रोत हुए कहते है कि हमारे ऊपर दया करें। पता तो तब चलता है जब हम हाई बीपी,बाझपन, डायबिटीज, हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया,हार्ट संबंधी समस्या, जोड़ों में दर्द, जैसी परेशानियों का सामना करते हुए जवानी में बुढ़ापे का एहसास और खाते-पीते घर के लगते हैं जैसे व्यंग सुनने लगते हैं।

सही कहे तो शरीर की इस परेशानी को भी हम तब नहीं समझ पाते जब तक चिकित्सक एक लम्बे-चौड़े रकम का बिल पकड़ाते हुए यह न कह दे कि “दवा तो हमने लिख दिया है लेकिन आप अपने वजन को कम करीये”। अब आप ही बताईये, अस्पताल की दौड़, दर्जनों जाँच, लम्बे बिल के बाद आपको डाक्टर सलाह दें कि वज़न कम करने के तरीके अजामाईये तो आप पर क्या बीतती होगी। क्योंकि यह सलाह तो आपको पहले ही आपके आस-पास या आपकी अपनी मित्रमंडली में मौजूद किसी फिटेनस कोच ने मुफ्त में आपको अपना समझ कर दिया। मगर आप उसकी बात नहीं माने। गलती आपकी भी नहीं। कहा गया है कि “घर की मुर्गी दाल बराबर” लेकिन आप भूल रहे है कि मुर्गी आप रोज नहीं खाते, वह तो किसी न किसी अवसर पर, मेहमानों के आने पर ही खाते हैं, मगर दाल तो आपके जीवन का हिस्सा है।उसे रोज खाते ही खाते नहीं बल्कि विशेष अवसरों पर उसे देवताओं को भी किसी न किसी रूप में चढ़ाते हैं। तो बताईये दाल अहम हुई या मुर्गी।दाल न? उसी तरह आपके अपनों के बीच छुपा हुआ फिटनेस कोच महत्वपूर्ण हुआ न? आप सोचते होगें कि वह अपने फायदे के लिए आपको डरा रहा है। तो आप सोच कर देखीये वह आपसे अधिक से अधिक कितना कमा लेगा, हजार दो हजार, इतना तो आप न जाने कितने अवसरों पर खर्च कर देते होगें। तो आप से जब कोई आपसे वज़न की समस्या पर बात करें तो एक बार अपने आपको हकीकत के धरातल पर रख कर देखीये। वह आपको अपना हितैशी नज़र आयेगा।आज आपको अपने बढ़ते वजन पर अधिक से अधिक ध्यान देना होगा। भले ही आप स्वस्थ हो लेकिन आपको एक अच्छे फिटनेस कोच के मार्ग दर्शन में न्युट्रिशियन और योगा का प्रयोग करते हुए अपने वज़न को मानक के अनुसार करने की कोशिश करना होगा। ताकी आप स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की तरफ अग्रसर रहे।

**मनोज कुमार, महराजगंज**

**79857 98456**

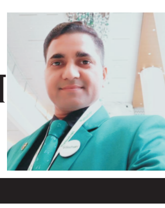

# सौ का नोट

कहानी

दिवाली का समय था, पूरे बंगले को बिजली की नयी डिजाइन की झालरों से सजाया जा रहा था। सभी लोग मन लगाकर काम कर रहे थे ,अरे ईनाम मिलनाथा, मैडम आकर कहती अरे सबसे सुंदर हमारा घर लगाना चाहिए कोई कमी ना रहे। नया घर और दिवाली मैडम ने इस बार कोई कमी नहीं रखी। पूरा घर सज गया जगमग करती लाइटें बहुत सुंदर। लग रहीं थीं। मैडम के घर पीछे एक बहुत छोटा सा घर रमयीलाल का था जो कपड़े प्रेस करके अपना गुजारा करता था।मैडम के कपड़े भी वही प्रेस करता था।

दिवाली वाले दिन सुबह जब वह कपड़े लेने गया तो मैडम ने कहा अरे रमयी अब दो तीन दिन मत आना त्योहार के बाद ही कपड़े देंगे। रमयी उदास हो गया क्योंकि उसको सौ दौ सौ की कमाई मैडम के यहां से ही हो जाती थी। वह जाने लगा तो मैडम ने सौ का एक नोट निकाल कर उसे दिया बच्चो के लिए पटाखे ले लेना।रमयी खुश होकर चला आया। शाम को दिवाली के पूजन के बाद रमयी एक दिया लेकर जो उसकी बेटी ने बनाया था मैडम के दरवाजे पर पहुंचा मैडम और साहब अपने रिश्तेदारों के साथ अपने बंगले को निहार रहे थे । रमयी को देखकर मैडम ने कहा अरे कैसे आना हुआ कुछ नहीं साहब बिटिया ने दिया बनाया था सो आपके लिए लाए हैं। अच्छा तो वहीं दरवाजे के पास रख कर जला दो । अच्छा साहब कहकर रमयी ने दिया जला दिया । तभी अचानक आवाज आयी और पूरे बंगले की बिजली गुल हो गई।सब परेशान मैडम चिल्ला रही थी।ये अचानक क्या हो गया । कोई देखो रमयी बाहर खड़ा था उसका लाया हुआ दिया जल रहा था और मैडम का दिया हुआ सौ का नोट उसकी जेब में अभी भी पड़ा था ।

**डॉ अपूर्वा अवस्थी,लखनऊ**

**97941 18960**

# 12वीं फेल क्यों देखना है?

**12वीं** फेल क्यों देखना है? क्योंकि वो मेरे गृहनगर ग्वालियर और उस क्षेत्र की कहानी है इसलिए? या इसलिए कि लाइफ में सक्सेसफुल कैसे बना जाता है? इसमें कोई दो राय नहीं कि गृहनगर और उसकी कहानियों को बड़े पर्दे पर देखना रोमांचित करता है। हम अपनी माटी से प्यार करते हैं इसलिए यह सहजभाव आना ही है। अब यदि सक्सेस स्टोरी आपको रिझाती है तो बहुत सारे मोटिवेटर स्पीकर आपको इस समय बाज़ार में दिख जाएंगे। वो स्पीकर तो बन जाते हैं मगर अपनी ही ज़िंदगी को कितना मोटिवेट कर पाते हैं ये बाद में पता चलता है।

इस फ़िल्म को देखा जाना चाहिए और ज़रूर देखा जाना चाहिए उन बच्चों, युवाओं और उनके माँ-बाप के साथ हर व्यक्ति को जो अपना करियर बनाने के लिए घर से दूर रहता है। या घर में रहकर भी सबसे दूर हो जाता है। कॉम्पीटिशन की तैयारी करता है। कितना बोझ और कितने तरह के विचारों से वो गुजरता है उस दौरान। बच्चे यदि सीखें इस फ़िल्म से तो जरा से फेल होने के कारण वे अपना जीवन समाप्त करने के बारे में नहीं सोचेंगे। इस फ़िल्म को देखकर वे अपनी ज़िंदगी से लड़ना सीखेंगे। एक के बाद एक मिलती शिकस्त से जैसे आईपीएस मनोज कुमार शर्मा ने हार नहीं मानी वैसे ही विपरीत परिस्थितियों में वे जीना सीखेंगे। संघर्ष करना सीखेंगे। यही तो जीवन है। बिना संघर्ष जीवन कैसा? और बच्चे ही क्यों बड़े भी देखें इस फ़िल्म को।

यह फ़िल्म यूपीएससी, इंजीनियरिंग आदि आदि प्रतियोगी परीक्षाओं में कैसे पास हुआ जाए इस विषय पर तो है ही नहीं। इसका विषय खोजो तो गहरी खाई जैसा गहरा है। ये आज उन सबको देखने के लिए फ़िल्म बनी है जो रोज़मर्रा के स्ट्रेस से खुद को नहीं बचा पाते। और कई बार ग़लत रास्ता चुनते हैं।मैंने इस फ़िल्म को देखने के बाद लल्लनटाप पर आईपीएस मनोज शर्मा का इंटरव्यू देखा। उन्होंने अपना स्ट्रेस कम करने के लिए बड़ी अच्छी बात कही कि वे डायरी लिखकर अपना तनाव कम करते थे और आज भी वे वही करते हैं। जो भी मन में हो उसे निकाल देने के बाद मन हल्का हो जाता है और आप आगे बढ़ने के लिए सज्ज हो जाते हो। उनके अनुसार उस दौर में एक अच्छा दोस्त खोजें और एक अच्छा गुरु होना ज़रूरी है जो हर पल आपकी मदद के लिए तैयार हो। तो क्या सबको ऐसे लोग मिल जाते हैं? हाँ मिलते हैं यदि काम में सच्चाई है और मन कपटहीन हो तब।

ग्वालियर चंबल का वो हिस्सा आज की तारीख़ में पहले से काफ़ी विकसित हो चुका है। मगर ये उस दौर की कथा है जब फ़ोन करने के लिए पीसीओ जाना पड़ता था और दिन के रेट भयानक महँगे होते थे। उस दौर को बख़ूबी इस फ़िल्म में उतारा है। मुझे समझने में इसलिए भी आसानी हो रही है क्योंकि उसी दौर की मैं भी हूँ। और मेरा अपना ठिकाना भी वही ग्वालियर था। दौलतगंज की मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा के पुस्तकालय में रहना, काम करना और एक समय पेट भरना कितना कष्टदायक होगा? हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं।

उस दौर में काले वाले टेंपो चलते थे और वही गाँव-गाँव तक सवारी ले जाते थे। ग्वालियर के प्रतिष्ठित एमआईटीएस इंजीनियरिंग कॉलेज के बाद तो जैसे सन्नाटा रहता था। उस इलाक़े की गुंडागर्दी से सभी वाक़िफ़ होंगे जिन्होंने अपना जीवन ग्वालियर चंबल संभाग में बिताया है।चंबल का क्षेत्र रहने के लिए आसान कहाँ था और नौकरी करने के लिए कठिनतम था। छोटे से चुनाव में भी बूथ लुट जाते थे और कोई कुछ कर भी नहीं सकता था क्योंकि अगले को अपनी जान प्यारी होती थी। मुरैना-भिंड में सामूहिक नकल के बारे में हम अक्सर अख़बार में पढ़ते थे। और इस बंदे को भी जब सामुहिक नकल नहीं करने मिली तो बंदा बारहवीं फेल हो गयी। मगर बंदे ने हार नहीं मानी और आगे एक पुलिस अधिकारी की बात सुनकर नकल करना बंद कर दिया।

इस फेल ने उस व्यक्ति का पीछा सिलेक्शन के बाद हुए इंटरव्यू तक किया और उन्होंने इसका मुँह तोड़ जवाब भी दिया। मैं हमेशा कहती हूँ कि जिसका जन्म चंबल के पानी में हुआ है वो विसंगतियों में जीकर उन्हें तराशने

का माद्दा रखता है। जितना वो पानी इंसान को सच्चाई और ईमानदारी सिखाता है उतनी ही दबंगाई भी सिखाता है। मगर एक बात जो सबसे अच्छी है कि उस दबंगई में भी अपनापन नहीं भूलता। यही सब कारण हैं जो उसे जीवन में कुछ पाने के लिए लढैय्या बनाते हैं। वो इतनी आसानी से हार नहीं मानता।इस फ़िल्म को उन सबको देखना चाहिए जो लोग छोटी-छोटी सी बातों को लेकर हताश-निराश हो जाते हैं। मनोज कुमार शर्मा ने १२वीं फेल होने के बाद भी हार नहीं मानी। अँग्रेजी तो ख़ैर उस दौर में हमारे इलाक़े में सभी की कमजोर होती थी या सिर के ऊपर से निकल जाती थी। लेकिन वो तो उससे भी नहीं घबराए और अपना इंटरव्यू हिन्दी में देकर आये। सीधी-सी बात है कि जो तुम्हें आता है उस पर गर्व करना सीखो। इसी से कॉन्फ़िडेंस भी आता है। अपने बच्चों को मज़बूत बनाने का काम माता-पिता का ही है। निश्चित ही ऐसे बच्चे भटकते नहीं है।

युवाओं और बच्चों में यह फ़िल्म खासी चर्चित हुई है। वे चाहते हैं कि इस फ़िल्म को ऑस्कर मिले तो क्या ग़लत है? हम भी चाहते हैं कि इसे यह सम्मान मिलना चाहिए। ऐसी फ़िल्मों को प्रमोट भी करना चाहिए। विक्रांत मस्सी जो उस पात्र में उतरे हैं एक्टिंग तो क़तई नहीं दिखती। इतनी सच्चाई है उस कलाकार में कि कितनी ही बार आँखें भर आती हैं। श्रद्धा मतलब मेधा शंकर ने भी दिल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस फ़िल्म के लेखक अनुराग पाठक ने एक संवेदनशील पुस्तक लिखकर आज के दौर के युवाओं को प्रोत्साहित किया है।बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएँ डॉ मनोज कुमार शर्मा, उनकी पत्नी आईआरएस श्रद्धा शर्मा और फ़िल्म की पूरी टीम को। जिस शिद्दत से फ़िल्म के डायरेक्टर विधु विनोद चोपडा ने थ्री इडियट्स बनायी थी उसी समर्पण से इस फ़िल्म को भी बनाया है।

**समीक्षा तैलंग**
**ग्वालियार,मध्यप्रदेश**
**96376 97550**

**"पहला सुख निरोगी काया"**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

# हस्ताक्षर

**मेरा** सबसे खास दोस्त रहा हमेशा। दोस्त क्या मेरे परिवार का हिस्सा ही रहा। मेरी एक भी बात उससे छुपी नहीं है। तभी तो उसके साथ बिजनेस भी शुरु किया। मेरी पत्नी को बहन मानता था। रोमा भी तो उसे राखी बांधती थी। बिजनेस में घाटा हुआ तो हम दोनों ने ही मिलकर अपने घर गिरवी रखकर भरपाई किया था । फिर ये कैसे संभव है ?' विनोद अपने हाथ में कोर्ट का नोटिस और दोस्त विशाल का पत्र लिए अपने अंदर के तूफान में खुद को संभालने की नाकाम कोशिश करते हुए सोफा पर बैठा था।

'आखिर कब, कहाँ, क्यों, कैसे चूक गया मैं ?'इन सवालों से घिरा विनोद अपने हाथ में पकड़ा विशाल के पत्र को बार-बार पढ रहा था । जिसमें लिखा था।

विनोद,

ये बिजनेस और तुम अपना घर सब मेरे नाम कर दिए हो। कोर्ट का नोटिस तुम्हारे पास पहुँच ही गया है। मैं नहीं चाहता कि मुझे पुलिस की मदद लेनी पड़े। इसलिए तुम इस नोटिस के समय के अनुसार स्वंय ही घर खाली कर देना।

विशाल

विनोद को याद आ रहा था 'सात साल पहले जब विशाल हमारे घर आया था तो घूम-घूमकर घर देख रहा था और प्रशंसा करते हुए कहा था "विनोद बहुत सुंदर बंगला बना रखा है तुमने। मुझे भी ऐसा ही बंगला बनाना है।"

आज सच में उसने मेरे घर पर अपना मालिकाना हक जमा लिया पर कैसे ? रोमा आगाह करती रहती थी कि किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे अच्छे से पढ लिया करो। शायद मैंने ही जरूरत से ज्यादा भरोसा कर लिया था उस पर।'विशाल का पत्र विनोद को पीठ पर सटी बंदूक की नोक सी लग रही थी।

**पूनम झा 'प्रथमा'**
**जयपुर, राजस्थान**

# बराबरी में अस्तित्व खोती नारी

**स**माज में खुद को जागरूक समझने वाली किशोर एवं युवा पीढ़ी से लेकर उम्र दराज़ कुछ सर्व बुद्धिमान लोग भी जिस तरह से संस्कृति, परंपरा और संस्कारों की मिट्टी पलीत करने में लगे हैं , उसे देख सुन कर तो सिर के बाल भी नोंच लें तो भी कम है। आखिर कब तक विज्ञान और आधुनिकता के नाम पर खुद को छलते जाएंगे ? एक तरफ विज्ञान के नाम पर बिना पंख इतना उड़ रहे हैं कि इस उड़ान ने हमें हमारी धरती की मिट्टी से ही दूर कर दिया है।जबकि इनके भयानक परिणाम से हम इतने अनभिज्ञ भी नहीं हैं। दूसरी तरफ आधुनिकता के नाम पर दोहरी मानसिकता लिए हम इस कदर जिंदगी जी रहे हैं मानों ये जिंदगी जिंदगी ना हुई एक दोहरी मानसिकता से भरी ख्वाहिशों की गठरी का बोझ मात्र हो गई। जिसे बस ढोना है, सो ढोये जा रहे हैं। कभी देखा-देखी में, तो कभी होड़ में या कभी अहंकार वश।परंतु दोनों रुपों में ऐसे लोग जीवन जी नहीं रहे बस बर्बाद किये जा रहे हैं । जैसे की आज नारी सशक्तिकरण एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के आड़ में अधिकांश महिलाएं, बेटीयां इन अधिकारों का नाजायज फायदा उठाने से नहीं चूकतीं । घर से स्कूल-कालेज ,सरकारी गैर सरकारी एवं निजी संस्थानों में अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहतीं है चाहे वह उचित हो या अनुचित।

आप सभी इस बात का थोड़ा सा तो ज्ञान रखते होंगे कि आज कहीं ना कहीं एक नारी ही दूसरी नारी की दुश्मन है बल्कि ये कहूँ कि सबसे बड़ी शत्रु है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज इस पर विचार विमर्श करना अति आवश्यक है।अधिकांश परिवारों में हमारी बेटीयाँ पढाई के नाम पर टच मोबाइल, स्कुटी - बाइक की मांग करतीं हैं आवश्यकता है तो भी नहीं है तो भी। प्रश्न यह है कि इन सभी वस्तुओं का सही उपयोग कितनी बेटीयाँ करतीं हैं या कर रहीं हैं?

जब भी कोई अप्रिय घटना घटती है तो सबसे ज्यादा उस घटना का संबंध मोबाइल के संपर्क से जुड़ा सामने आता है हालांकि मोबाइल को कई प्रकार से नारी सुरक्षा एवं अन्य सुरक्षा के लिए उपयोगी बनाया गया है देखा गया है कि आज न जाने कितनी लड़कियां घर से निकलती हैं स्कूल-कॉलेजों के लिए लेकिन मित्रों के साथ कॉफी शॉप, मॉल,पिक्चर, पिकनिक स्पॉट , रेस्टोरेंट अथवा लॉग ड्राइव पर निकल जाती है। ऐसी बेटीयों को शर्म महसूस नहीं होती कि माँ बाप किस तरह उनकी ख्वाहिशें पूरी कर रहे हैं?वह उनकी आंखों में धूल झोंकने से बाज नहीं आती। क्या यही उद्देश्य हैं नारी सशक्तिकरण और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का ? कितनी बेटीयां मान रखतीं है ऐसे अधिकारों का ? फिर जब कोई अप्रिय घटना घटती है तो दोष पुरुष पर दे दिया जाता है, आखिर क्यों ?

बहुतायत घरों में देखा गया है कि महिलाएं केवल अपना राज चाहती हैं । वह सास-ससुर ,देवर-जेठ या ननद के साथ रहना पसंद ही नहीं करतीं हैं। इसके लिए वह किसी ना किसी प्रकार आये दिन बात -बेबात कलह क्लेश उत्पन्न करने के लिए उतारु रहतीं हैं क्योंकि वे एकलवादी हो गईं हैं स्वयं को आधुनिक समझते हुए वह इस बात को समझना ही नहीं चाहतीं की भारतीय संस्कृति में परिवार का मुख्य अंश होतीं हैं नारी जिन्हें शास्त्रों में भी गृहलक्ष्मी माना गया है। आज क्यों संयुक्त परिवार अभिशाप बन गया है? पति यदि अपनी पत्नी और माता पिता के बीच सामंजस्य स्थापित करके रहना भी चाहे तो कुछ महिलाएं ऐसा होने नहीं देतीं क्योंकि इसके लिए उसके पास दहेज-प्रताड़ना, सास-ससुर द्वारा शारीरिक - मानसिक शोषण, देवर-जेठ द्वारा जोर जबरदस्ती - बुरी नज़र रखने जैसे कई हथकंडे हैं। अब भला एक भरा पूरा परिवार इस बात को कैसे झेले अतएव समाज में थू-थू और अपनी इज्जत को बदनामी के दाग से बचाने के लिए वे बहू पर अत्याचार करने के झूठे नाम पर चुपचाप खुद अत्याचार सहते रहते हैं ।काश की ऐसी महिलाएँ समय के चक्र को देख पातीं क्योंकि अंततः एक समय ऐसा भी आता है जब वो परिवार का साथ पाने को

फड़फड़ातीं नज़र आतीं हैं, लेकिन समय सब कुछ लेकर उड़ चुका होता है।

आज महिलाओं का किसी पर पुरुष से आकर्षण भी एक बसे बसाये घर परिवार को न सिर्फ बदनामी के कटघरे में लाकर खड़ा कर देता है बल्कि उस परिवार के बर्बादी का कारण भी बनता है।महिलाओं को ईंट पत्थरों से बने मकान को "घर" बनाने वाली लक्ष्मी के रूप में देखा और पूजा जाता है लेकिन इस आधुनिक यगु में कितनी महिलाएं इसमें सफल होतीं हैं?

जैसे आज की तारीख में शादी ब्याह भी टेढ़ी खीर हो गई है एक तरफ तो समाज में दहेज के लालची लोगों ने बेटीयों को बेजान वस्तु समझ रखा है तो वही दूसरी ओर कुछ बेटीयों ने भी किसी के बसे घर को उजाड़ने का प्रशिक्षण बखूबी ले रखा है

आज कल अखबारों में आम पढ़ने को मिलता है कि शादी के मंडप या शादी के लिए लड़की फरार या शादी हुई बड़ी धूमधाम से और पहली रात को ही दुल्हन गहने कपड़े व नगदी लेकर तो कहीं दूसरे पुरुष के साथ गायब । क्या यह शोभनीय है ? शादी के दिन या शादी के मंडप या शादी के बाद ऐसी हरकत नारी स्वतंत्रता का कैसा पैमाना? क्या इससे लड़की और लड़के दोनो कुल के मान-सम्मान पर प्रहार नहीं हुआ? क्या वह समाज में हंसी के पात्र नहीं बने। आज की बेटीयों की शिक्षा व विवेक पर सवाल तब खड़े होने लगे जब कोई संपन्न परिवार का मुखिया गरीब घर की बेटी को एक कपड़े में यह सोच कर बहू बना लाता है कि गरीब की बेटी का भला हो जायेगा और मेरे बेटे का घर भी बस जायेगा । आभावों में पली बेटी हमारे घर में सुख से रहेगी और घर को घर बना देगी। लेकिन यहाँ भी हमारे ब्रज की एक कहावत है

"नंगा ए मिल गई पीतर,बाहर धरुं कै भीतर "

अर्थात जिसके पास रोटियां भी मुश्किल से नसीब न थी फिर उसे सीधे मालपुए मिलने लगें तो वह बिना उत्पात मचाये नहीं पचती ...सो आये दिन नखरे ,बात बात पर धौंस। अब बात फिर वहीं आकर रुक जाती है कि इतना कुछ किया फिर भी समाज में बदनामी और थू थू होगी सो उसके मन मुताबिक परिवार को चलने पर मजबूर होना पड़ता है। यहाँ एक प्रश्न फिर उठता है कि क्या ऐसी बेटीयों का फर्ज नहीं बनता की वह अपने पति के परिवार की उन भावनाओं की कदर करें और एक अच्छी बहू बनकर खुद भी खुश रहे और परिवार को भी खुश रखे ?

आधुनिकता और स्वतंत्रता पर माना कि सजना-संवरना हर नारी का मौलिक अधिकार है। लेकिन सजने-संवरने के नाम पर अंगों का सरेआम प्रर्दशन करना क्या उचित है? देखा गया है कि महिलाएं बिना उम्र, अवसर और स्थान को नजरअंदाज कर कुछ भी पहन कर चल देतीं हैं। फैशन करना , आज के मुताबिक खुद को ढालना ये अलग बात है लेकिन इतनी भी नासमझी क्या सही है कि किसी के शोकाकुल परिवार या कोई धर्म स्थल , शिवालय देवालय में पूजा प्रार्थना एवं दर्शनों के लिए भी पूरे जिस्म की नुमाईश करते ऐसे छोटे एवं पारदर्शी कपड़े पहन कर चली जाती है जिससे कपड़ो की ही गरिमा गिर जाती है। और अपने इस पहनावें को वह आधुनिकता एवं फैशन बताते हुए फर्क महसूस करती हैं, जबकि होता बिल्कुल इसका उल्टा है। समझ नहीं आता है कि आज हम और आप अपनी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को किस रूप में देख रहे हैं?

हमारी सनातनी सभ्यता की यह खूबसूरती है कि महिलाओं के हर उम्र के हिसाब से परिधान और साज-सज्जा बने हुए हैं, मगर आज के इस आधुनिकता की आंधी में कौन कुवांरी है कौन विवाहिता या कौन विधवा पता ही नहीं चलता है, क्योंकि इन्होंने अकारण अपनी वेषभूषा ऐसी ही बना डालीं हैं कि बस -यहाँ पर हम आपको राम चरित मानस की एक चौपाई पर लिए चलते हैं जो हमारी संस्कृति एवं पौराणिक इतिहास से जुडा है इस चौपाई में काकभुशुण्डि जी गरुड़ जी को आज की सच्चाई बता रहे हैं कि

" सौभागिनी विभूषन हीना ।<br>
विधवन्ह के सिंगार नबीना ।।

इस चौपाई के अर्थानुसार आज की कुछ सुहागन स्त्रियाँ तो पूरी तरह श्रंगार और आभूषणों से खुद को दूर रख रहीं हैं, परंतु कुछ विधवाओं को नित नये श्रंगार में देखा जा सकता है और नाम परिवर्तन एवं पाश्चात्य आधुनिकता का ऐसा दृश्य क्या हमारे आसपास नहीं दिखाई देता ? हम यह नहीं करते कि विधवाओं को समाज से कट कर अपना जीवन बर्बाद कर देना चाहिए, लेकिन अति भी कहीं से ठीक नहीं है। जो आज हो रही है।

हम मानते हैं कि पुरुष वर्ग में वहसीपन , अहंकार और हिंसक प्रवृत्ति होती है और इसके लिए वे दोषी भी हैं, लेकिन हर दृष्टि कोण से केवल पुरुषों को ही दोषी ठहराना कहाँ की बुद्धिमत्ता है ? मात्र पांच दस रूपये

के ब्लेड से सेविंग कर फैशन के बावजूद पूरे कपड़े पहनकर भी खूबसूरत दिखने वाले पुरुष और सौ रूपये से लेकर हजारों रुपये खर्च करने मेकप करने के बाद खूबसूरत दिखने वाली स्त्रियों के बीच क्या कोई अंतर नहीं ?

हम अक्सर बड़ी बड़ी बातें करते हैं कि बेटीयों को पंख दो उन्हें खुले आसमान में उड़ने दो, बात विचारणीय है कि क्या बेटीयाँ परिंदा है या कोई पक्षी हैं जो उन्हें पंख दिए जाएं? हाँ बेटीयों को हिम्मत और हौसला दें ये अवश्य तर्कसंगत है।

आज हमारी जाबांज बेटीयों ने फाइटर प्लेन चला कर उसमें उड़ते हुए परिवार और देश का नाम क्या रौशन कर रही हैं। लेकिन जमीन पर भी ठीक से पैर न रख पाने वाली चालीस मन कर्म और वचन की पंगु बेटीयाँ भी बिना वजह खुद को उनके बराबर आंकने लगीं हैं। यह हास्यास्पद नहीं लगता ? क्या जींस शर्ट पहनना , बाइक चलाना सिर के छोटे- छोटे बाल रखना या पुरुषों की सीना तानकर चलने को ही पुरुष की बराबरी करना कहते हैं ?

हम इस बात को कतई नहीं नकार सकते की हर युग में पृथ्वी पर नारी हमेशा से श्रेष्ठ थीं और रहीं हैं परंतु आज वह श्रेष्ठ होते हुए भी पुरुषों की बराबरी के चक्कर में अपने वास्तविक व्यवहार और नारी शिष्ठता से इतना नीचे उतर रहीं हैं कि उन्हें इसका भान ही नहीं । स्वतंत्रता एवं पुरुषों से बराबरी के नाम पर केवल दिशाहीन होकर अंधाधुंध दौड़ती जा रहीं हैं और इसी के चलते ऐसी कुछ बेटियां एवं महिलाएं कम कपडों में वह घर से बाहर किसी भौगिक वस्तु की भांति नज़र आतीं हैं।

आधुनिकता की दौड़ में दोहरी मानसिकता का एक कारण यह भी है कि हमने किसी मजबूर को उसके तन ढकने के लिए अपनी जेब से एक पैसा नहीं खर्च कर सकते लेकिन उसी तन को फैशन का नाम देकर उघारने में करोड़ों की दौलत लुटा देते हैं। यह दोहरी मानसिकता नही तो क्या है? विडम्बना देखीये आज जिसका मजबूरी में तन दिखता है वह फूहड़-निर्लज्ज और ना जाने क्या -क्या कहलाती है वहीं फैशन तथा समय की मांग बता कर और डिजाइन का नाम देकर कर जो नग्नता परोसी जाती है उसे स्मार्ट , ब्युटी फुल सोशलिस्ट विमेंस के साथ सम्मानजनक रूप में देखा जाता है। अब ऐसे में युवा पीढ़ी यदि संस्कारित हों भी तो कैसे ? इसलिए आज अधिकांश बेटीयाँ सब कुछ बनना चाहती है सब कुछ लेकिन एक कुशल ग्रहणी एक संस्कारी बहू एक ऐसी पत्नी जिसमें पति को पत्नी एवं मित्र दोनों का साथ मिले समाज के लिए मिसाल बने ऐसा संयुक्त परिवार कायम कर सकने की सामर्थ रखने वाली महिला नहीं बनना चाहती ?

जिस प्रकार ईंट पत्थरों से बने मकान को घर बनाने की शक्ति सामर्थ एक बहू में होती है वैसे ही समाज को सही अथवा गलत दिशा देने में भी इन्हीं महिलाओं बेटी नारी शक्ति का बहुत बड़ा हाथ है जिसे आज वह नज़र अंदाज करतीं जा रहीं हैं।

और इन्हीं दोहरे चरित्र एवं मानसिकता के चलते वह समाज में पुरुष वर्ग की आपराधिक प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दे रही हैं चाहे वो माँ हो पत्नी हो या कोई मित्र।

आये दिन जगह-जगह भ्रूण हत्या के रूप में खून से सने लथपथ मांस के लोथड़े, बुजुर्गो से भरे वृद्धाश्रम आज आजाद और संस्कारहीन होते समाज का भयानक रूप है। यदि संस्कार की छाया ही पडी होती तो अपने ही मेहनत से बनाये आशियाने में माता-पिता गैरों की तरह दयनीय स्थिति में किसी कोने में उपेक्षित ना पड़े होते। और यदि बेटी संस्कारों से झोली भरकर मायके से विदा होती तो पुरुष अपनी माँ और पत्नी के बीच सामंजस्य बिठाते बिठाते एक घुटन भरी जिंदगी से बेबस होकर जीवन-लीला समाप्त करने को मजबूर न होते।

मानते हैं कि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं बेटीयों के साथ गलत हुआ है और हो भी रहा है लेकिन सारा का सारा दोष एक तरफ मढ़ कर पूरे पुरुष समाज को गलत ठहराना मूर्खता नहीं होगा? एक तरफ हम ट्रेन बस अथवा किसी भी कार्य वश लम्बी लाइन में खड़े-बैठे पुरुषों को ये कहकर हटा या उठा देतीं हैं कि “लेडीज फस्ट” या फिर किसी अन्य महिला के लिए बेहिचक कहतीं हैं कि “अरे ! आप को शर्म आनी चाहिए आपकी माँ बहन जैसी महिला खड़ी है और आप आराम से बैठे हैं”। और वहीं दूसरी तरफ कहती हैं कि “हम किसी पुरुष से कम हैं क्या? यही सब दोहरापन सोचने पर विवश करता है कि आखिर हम कहना क्या चाहते हैं अथवा करना क्या चाहते हैं । क्या पुरुषों के पैर-सिर में दर्द नहीं होता? कब तक इस दोहरी मानसिकता में जिएंगे? आप बराबरी नहीं कर रही हैं बल्कि बराबरी के चक्कर में अपने नारीत्व का अस्तित्व ही खो रहीं हैं।

हमारे कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि स्त्रीयों

की युवा पीढ़ी ऐसी दोहरी मानसिकता से बाहर आ कर वास्तविक धरातल, अपनी जमीन अपनी मिट्टी से जुड़ कर जियें क्योंकि स्वतंत्रता और स्वछंदता दोनों ही अलग है .... स्वतंत्रता विचारों में रहे तो अति उत्तम है परन्तु स्वछंदतावाद आपको अनुचित मार्ग भी दिखाते हैं जिनपर ना चाहते हुए भी अनायास खींचे चले जाना स्वाभाविक है।

रास्ते बेशक लम्बे हो यदि सही है तो अवश्य चुनें छोटे रास्ते के चक्कर में गलत रास्तों का चयन भविष्य में अनेक मुसीबतों को आमंत्रित करता है यदि फिर भी कहीं कुछ गलत या अप्रिय घटना घटती है तो उसकी सही जांच हो महिला हो अथवा पुरुष वह अपराधी है तो सजा अवश्य मिले । यहाँ ना तो महिलाओं का विरोध है और ना ही पुरुषों की सिफारिश या समर्थन बात केवल उचित एवं अनुचित की है "दोषी बचें नहीं और निर्दोष फंसे नहीं " क्योंकि जितनी भी महिलाओं पर अत्याचार, प्रताड़ना, हिंसा और दुर्गति दिखाई देती है या फिर दिखाई जाती है वह पूरी तरह सत्य हो यह स्वाभाविक नहीं। कभी कभी ईमानदारी से जांच करने पर ऐसे सत्य उजागर होते हैं जो सोच से भी परे होते हैं फिर बाद में पश्चाताप से निष्कर्ष ही क्या निकलता है?

यदि एक बेटी कुशल बहू बनकर परिवार में ग्रहणी का दायित्व निभाएगी तो एक अच्छी माँ बनेगी और जब एक अच्छी माँ बनकर अपने बच्चों की परवरिश करेगी तो शक ही नहीं की वे बच्चे संस्कारवान ना बनें । क्योंकि जब बच्चों को हर किसी की भावनाओं की कद्र करना बचपन में अपने परिवार से ही सीखने को मिलेगा तो वह कभी किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाने की सोच भी नहीं सकेगा या सकेगी तब जाकर हमारे बच्चों को दिये अधिकार सही मायने में सफल होंगे फिर चाहे वह "नारी सशक्तिकरण" हो या "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" वरना पता नहीं आधुनिकता की अंधी दौड़ में ये आज की कुछ भटकी हुई युवा पीढ़ी कहाँ जा कर समझ पाएगी?और इसके क्या परिणाम होंगे इसलिए आज आवश्यकता सिर्फ शिक्षा की ही नहीं वरन् संस्कारों की भी है इस लिए कहती हूँ कि हमें नारा बदलना चाहिए और " बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" के साथ-साथ "बेटी को संस्कार सिखाओं" भी जोड़ना चाहिए।

**संतोष शर्मा शान**

**हाथरस उ0प्र0**


**कविता**

# मेरा प्रिय कवि

क्यों ना करूं मैं इनसे प्यार,  
साहित्य जगत में जो करें चमत्कार,  
हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार,  
'जय हो' से पाया अहस्कर पुरस्कार।  
कवि, पटकथा लेखक, नाटककार,  
फिल्म निर्देशक,शायर,कलमकार,  
नाम से ही इनके दिल गुलज़ार,  
ग्रैमी, पद्मभूषण से जय जयकार।  
सशक्त लेखनी पर जाऊं बलिहार,  
पाया साहित्य अकादमी पुरस्कार,  
हिंदी,उर्दू,पंजाबी आदि में होनहार,  
किया मात-पिता का स्वप्न साकार।  
'संपूर्ण सिंह कालरा'से बने गुलज़ार,  
'छैया-छैया' पर नाचा हर दिलदार,  
चौरस रात,रात पश्मीने की,रावी पार,  
लघु कथाएं,कविता संग्रह है अपार ।  
भूल ना पाते पुराने गीतों की बहार,  
भाव जैसे अनुपम क्षितिज के पार,  
दिल की गहराइयों में उतरता प्यार,  
'सजदे' और 'दिल ढूंढता है' हर बार।  
आपकी कुछ पंक्तियों से विशेष प्यार,  
किताबों के विषय में आपके ये विचार,  
बी.एम.बी. के सदस्यों को भी सरोकार,  
साझा करती हूँ, आप भी करें विचार।  
"किताबें झांकती हैं बंद अलमारी के शीशों से  
बड़ी हसरत से तकती हैं  
महीनों अब मुलाकातें नहीं होती  
जो शामें उनकी सोहबत में कटा करती थीं  
अब अक्सर गुज़र जाती है कम्प्यूटर के पर्दों पर  
बड़ी बेचैन रहती हैं क़िताबें"  
"इतना क्यों सिखाए जा रहे हो जिंदगी हमें कौन सी यहहं सदियॉं गुजारनी है"

**हीरल कवलानी**

**नोएडा 52**

# बधाई हो आप और आपकी टीम को

सबसे पहले मैं ममता सिंह को हर्बा लाइफ वर्ल्ड टीम का सदस्य बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ और माँ कामाख्या से प्रार्थना करता हूँ कि आप निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। ममता सिंह के सफलता का श्रेह सबसे अधिक किसी को जाता है तो वह है इनके सहकर्मी और मार्गदर्शक श्री धमेन्द्र सिंह जी को, उनको भी अपने डाउनलाइन के प्रमोशन पर हार्दिक बधाई। उसने साथ मैं धन्जय सिंह, संजय सिंह, मनोज सिंह, धर्मराज सिहं को भी बधाई देना चाहूँगा जिनके मार्गदर्शन में ममता सिंह ने अपने मंजिल के पथ पर एक मील का पत्थर पार किया।

ममता सिंह के इस सफर की शुरूआत वर्ष २०२१ में हुई थी। एक दिन मैं अपने आफिस में काम कर रहा था। ममता सिंह जो गहमर के ही कम्पोजिट विद्यालय में शिक्षामित्र के रूप में कार्यरत हैं मेरे पास आई और बोली कि स्कूल में उनके सहकर्मी धर्मेन्द्र सर हर्बा लाइफ में जुड़ने के लिए कह रहे हैं आपका क्या विचार है?

यहां कहना चाहूँगा कि हम लाख महिला उत्थान की बात कर लें लेकिन किसी काम के लिए महिला को पति और परिवार की स्वीकृति लेनी ही पड़ती है और मेरे मानने के हिसाब से यह बिल्कुल सही भी है, क्योंकि नारी का मन पवित्र होता है, वह जरा सा स्नेह और सम्मान में पिघल जाती है उसे कुछ दिखाई नहीं देता। मैंने कहा कि यह वही काम है न कि तुम दो बनाओं वो दो बनाये, यह बिल्कुल फालतू काम हैं नहीं करना है। उस वक़्त तो वह वहां से चली गई लेकिन फिर रात को वही बात । देखीये कोई पति पूरी दुनिया से तो भाग सकता है लेकिन अपनी पत्नी से नहीं, यदि वह घर पर है तो रात में भाग कर कहा जायेगा, और परदेश में तो पत्नी पहले प्रेम से हाल-चाल, खाना-पीना पूछेगी और फिर बाद में अपनी बात रख देगी।

मेरे साथ भी यही हुआ। तीन-चार दिन लगातार पूछने का क्रम चलता रहा और मैं टालता रहा। लेकिन मैं जानता था कि कुछ तो कहना पड़ेगा, इस लिए मैं यू-टियूब पर हर्बा लाइफ को देखने-समझने लगा। आदत के अनुसार मैनें निगेटिव खोजना शुरू किया ताकि इनका दिमाग इस काम से हटाया जा सके। खोज चलती रही और धीरे-धीरे मेरा रूझान भी बढ़ने लगा। मैं १ सप्ताह में लगभग ३०० निगेटिव वीडियों देखें और सारे हर्बा लाइफ प्रोडेक्ट और उसके निगेटिव में ४ चीज कामन लगी। मैनें यह देखा कि इनके यह करने से मेरे ऊपर या मेरे समाजिक स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा मैंने इस शर्त पर कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊँगा स्वीकृति दे दिया।

यह अपने टीम के साथ उसमें लग गई। स्कलू जाना, आना, मिटिंग, घर, बच्चों की जिम्मेदारी के साथ-साथ घर से न निकल पाने की मजबूरी जैसे चुनौतियों के बीच इन्होनें अपना रास्ता बनाया। धीरे-धीरे मंजिल दर मंजिल पार करने लगी। जिन्दगी में पहली बार फाइव स्टार होटल में रूकने और जयपुर शहर को दूसरे के खर्च पर रूकने का सुख मुझे अपनी पत्नी के इस काम से ही मिला।

चूकि मैं बाहर अधिक रहता था, इनके सेमिनारों में इनके साथ जा नहीं पाता था इस लिए मैं और मेरे परिवार ने इनको कही भी अकेले या किसी के साथ जाने को स्वंतत्र किया। वर्ष २०२४ के सितंम्बर माह में इनके एक सिनियर धर्मराज सिंह द्वारा एक टार्गेट दिया गया। चार महीनें लगातार एक लक्ष्य को पाना था। उस टार्गेट को पाने पर इनको दाजर्लिग का फ्री टूर मिलना था। दूसरी तरह एक बात और थी, लक्ष्य पूरा करने से टूर का पैकेज तो मिलता ही साथ ही इनका प्रमोशन भी वर्ल्ड टीम में हो जायेगा। चूकि मैं बार-बार दारजलिंग जाना चाहता था, तो यह टूर मुझे भी अच्छा लगा, मैं भी टूट के लालच में आ गया सोचा दूसरों के खर्च पर फिर मज़ा, यह सेमिनार करेगी और मैं फिल्म शूटिंग।

सितम्बर माह में ममता सिंह ने दिये लक्ष्य को पूरा कर लिया। जब मैने पहले महीने के सफलता की बधाई दिया तो ममता सिंह ने कहा कि प्रोमशन और टूट का लक्ष्य तो पिछले साल भी सितम्बर में पूरा कर लिया था मगर अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर तो नहीं हो पाया। मैनें कहा कि इस बार प्रयास करों हम साथ देगें। लेकिन मैं अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर पूरा व्यस्त हो गया। यह चलती रहीं। मेरे मोबाइल से साहित्यकारों का, दोस्तों का नम्बर निकाल-निकाल कर उनको मैसेज करना, उनसे बात करना। अपने और मेरे रिश्तेदारों से घर या स्कूल से बात कर उनसे नम्बर लेकर लोगों से बात करना शुरू किया और घर से ही धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी।

आखिर विकल्प ही क्या था लोगो से संम्पर्क का? सिनियर तो रास्ता ही दिखा सकता है, क्योंकि कि उसके लिए आप अकेले तो हैं नही, चलना तो आपको ही है। मेरे द्वारा भी सहयोग जरा भी नहीं हो पा रहा था। ले देकर केवल धमेन्द्र सिंह ही सहारा थे। दूसरी तरफ मनोज सिंह एवं धर्मराज सिंह जो इनके सिनियर के सिनियर थे वह भी समय-समय पर इनसे बात कर इनका मार्गदर्शन और सहयोग कर रहे थे।

गिरते चलते वह अक्टूबर माह में भी इस लक्ष्य को पा गयीं। नवम्बर त्यौहारों का महीना था, दिपावली और महापर्व छठ होने से घर में काम की व्यस्तता इनके ही साथ नहीं बल्कि इनके सहयोगीयों और आम आदमी के साथ भी थी। हिम्मत इनकी टूट चुकी थी लेकिन हौसला नहीं हारी चलती रही और उसका परिणाम यह हुआ कि ३० नवम्बर को अंतिम समय में यह तीसरे महीने भी अपने लक्ष्य को पूरा करने में सफल रही। बीच नवम्बर का अंत एक बड़ी समस्या लेकर आया, वाइफ के खाते से १.३० लाख रूपये की रकम बैंक फ्राड से निकल गई। उधर दिसम्बर चढ़ते ही बेटे की तबीयत बहुत खराब हो गई। इस वक्त मेरी मदद अरूण अर्णव सर ने बहुत बड़ी मदद किया। अभी भी एक महीना बाकी था, आगे क्या होगा मैं नहीं जानता था। मैं दिसम्बर के आने के साथ-साथ गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में व्यस्त हो गया। दिसम्बर पूरा बीतने को था और यह लक्ष्य से कोसो दूर। मेरा कार्यक्रम बीत चुका था,कोई रास्ता दिख नहीं रहा था। मेरे हाथ में एक रूपया नहीं कि अपने स्तर से लक्ष्य पूरा किया जा सके। लेकिन कहते हैं न कि कोई आ ही जाता है, गोप कुमार मिश्र के रूप में फिर एक व्यक्ति आया और इनकी वह मदद किया जिसे भूल पाना भी संभव नहीं है। अभी सब चल रहा था कि ३० दिसम्बर को बेटे का एक्सीडेंट हो गया। लेकिन ममता सिंह सबसे लड़ते, गिरते, मिलते अपने मंजिल के एक मील के पत्थर को पार गयीं जिससे वह पिछले साल चूक गई थी।

ममता सिंह अपनी मंजिल का एक मील का पत्थर अपने मेहनत, लगन और हिम्मत के बल पा कर फिर निकली हैं एक नये को लेकर अपनी मंजिल का एक और मील का पत्थर पार करने। आशा है कि वह अपने मेहनत और अपने लगन के बल पर आप सब के सहयोग से इस मील के पत्थर को भी पार करेगीं।

**अखंड गहमरी 9451647845**

लघुकथा

## ठंड क्या भूख से खतरनाक है?

"आज बहुत ठण्ड है।" ठिठुरते हुए लक्खी ने अपनी पत्नी कुंती से कहा।
"अजी! ठण्ड का मौसम है तो ठण्ड तो लगेगी ही न। क्यों बाहर निकलते हो ?
डॉ.ने भी तो यही कहा था न कि,आराम करना है,काम बाद में करना ,पहले ठीक हो जाओ।जान है तो जहान है।" बीबी ने प्रेम और सहानुभूति दिखाते हुए लक्खी से कहा।
वह उसकी बात को अनसुना कर धीरे से बुदबुदाता हुआ बाहर निकल अपने प्रिय रिक्शे की गद्दी पर प्यार की दो थपकी देता सड़क पर सवारी लेने को निकल पड़ा और इधर कुंती की आँखों से ओझल होता चला गया ! बस उसके कानों में देर तक गूंजते रह गए यह शब्द-" बच्चे कैसे पलेंगे इस गरीबी में अगर मैं घर बैठ गया तो .... ठंड क्या भूख से खतरनाक है। "

**संजय कुमार गिरि, करतार नगर दिल्ली ,9871021856**

# मेरी अयोध्या - परिभ्रमण

पुराणों , रामायण , अध्यात्म रामायण , कम्ब रामायण , रामचरितमानस, में अयोध्या का उल्लेख किया गया है । त्रेतायुग एवं द्वापरयुग में अयोध्या महत्वपूर्ण स्थल है। विष्णु पुराण , २२ वां अध्याय के अनुसार इक्ष्वाकु वंशीय राजा भगवान राम के वंसज वृहद्वल , वृहत्क्षण , उरुक्ष्य , वत्सव्यूह , प्रतिव्योम, दिवाकर ,सिहादेव ,वृदृतग, भानुरथ ,प्रतिताश्व , सुप्रतीक , मरूदेव ,सङ्क्षत्र।किन्नर ,अन्तरिक्ष , सुपर्ण , अमित्रजीत , वृहद्रज ,धर्मी ,कृतंजय , रण जय ,संजग , शाक्य , शुद्धोदन , राहुल , प्रसेनजित , शूद्रक कुंडक , सूरथ , सुमित्र राजा अयोध्या के थे । अयोध्या के अंतिम राजा सुमित्रा द्वारा अयोध्या का चतुर्दिक विकास किया गया था । उत्तर प्रदेश राज्य में समुद्र तल से ९३ मीटर ऊंचाई पर १२०. ८ वर्ग किमी अवस्थित अयोध्या जिला मुख्यालय सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या की आबादी २०११ की जनगणना के अनुसार जनसंख्या ५५८९० है। कौशल की राजधानी अयोध्या थी । जैन ग्रंथों में तीर्थंकरों, ऋषभनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ की जन्मस्थली वर्णित है। सनातन, जैन, बौद्ध, ग्रीक और चीनी स्रोतों में वामन शिवराम आप्टे के अनुसार, “साकेता” शब्द संस्कृत के शब्द सह (साथ) और अकेतेन (घर या भवन) से बना है। आदि पुराण मे अयोध्या “अपनी शानदार इमारतों के कारण साकेत कहा जाता है, । ब्रिटिश साम्राज्य में “अवध” या “औड” था । १८५६ तक अवध स्टेट व औड रियासत की राजधानी , बाल्मीकीय रामायण में कौशल साम्राज्य की राजधानी अयोध्या थी ।अयुत्या (थाईलैंड) और योग्यकार्ता (इंडोनेशिया) में अयोध्या को कहा जाता है अयोध्या का टेराकोटा का उत्खनन में चौथी शताब्दी ईसा पूर्व की जैन तीर्थंकर की टेराकोटा प्रतिम प्राप्त हुई है ।- पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतंजलि की टिप्पणी, साकेत का उल्लेख हैं। बौद्ध ग्रंथ महावस्तु में साकेत को इक्ष्वाकु राजा सुजाता की स्थल के रूप में वर्णित है ।

राजा सुजाता के वंशजों ने शाक्य राजधानी कपिलवस्तु की स्थापना की थी। बौद्ध पाली-भाषा ग्रंथों और जैन प्राकृत-भाषा ग्रंथों में कोसल महा जनपद के महत्वपूर्ण शहर के रूप में साकेता , प्राकृत में सगेया या सैया शहर का उल्लेख है। बौद्ध और जैन ग्रंथों का संयुक्त निकाय और विनय पिटक के अनुसार, साकेत श्रावस्ती से छह योजन की दूरी पर स्थित था। चौथी शताब्दी के बाद, कालिदास के रघुवंश सहित ग्रंथों में अयोध्या का उल्लेख साकेत के दूसरे नाम के रूप में किया गया है। जैन विहित पाठ जम्बूद्वीप-पन्नति में भगवान ऋषभनाथ के जन्मस्थान के रूप में विनिया व विनीता शहर का वर्णन किया गया है । कल्प-सूत्र में इक्खागाभूमि को ऋषभदेव का जन्मस्थान बताया गया है। जैन पाठ पौमचरिया पर सूचकांक में अओझा (अयोध्या), कोसल-पुरी (”कोसल शहर”), विनिया, और सैया (साकेता) का राजा चक्रवर्ती भरत हैं। जैन ग्रंथों में ”अओज्झा” को अवस्सागाकुर्नी का कोसल के प्रमुख शहर के रूप में वर्णित है । अवस्सागानिजुट्टी सागर चक्रवर्ती की राजधानी के रूप में वर्णित है। अवससागनिजुट्टी का तात्पर्य विनिया (”विनिया”), कोसलपुरी (”कोसलपुरा”), और इक्खागाभूमि अलग-अलग शहर थे, अभिनामदान, सुमाई और उसाभा की राजधानियो नामित था। पाँचवीं या छठी शताब्दी ई. पू. तक अयोध्या विकसित था।

बौद्ध धम्मपद- अट्ठकथा में कौशल की राजधानी श्रावस्ती का राजा प्रसेनजीत के निदेश पर विशाखा के पिता व्यापारी धनंजय द्वारा साकेत नगर की स्थापना की

गई थी । जैन ग्रंथों नयाधम्मकहाओ और पन्नवन सुत्तम, और बौद्ध जातक में, साकेत को कोशल की राजधानी के रूप में उल्लेख किया गया है। जैन ग्रंथ अंतगदा-दसाओ, अनुत्तरोवैया-दसाओ, और विवागसुया में कहा गया है कि महावीर , नयाधम्मकहाओ का कहना है कि पार्श्वनाथ ने साकेत का दौरा किया था। जैन ग्रंथ, विहित और उत्तर-विहित में , अयोध्या को विभिन्न तीर्थस्थलों के नाग ,यक्ष पसामिया, मुनि सुव्रतस्वामिन और सुरप्पिया के मंदिर का उल्लेख मिलता है।

पांचवीं शताब्दी ई.पू.में मगध सम्राट अजातशत्रु द्वारा कोसल पर विजय प्राप्त करने के बाद वाणिज्यिक केंद्र बना था । तीसरी शताब्दी ई.पू. में मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान साकेत शहर मे बौद्ध इमारतों का निर्माण का अयोध्या मे मानव निर्मित टीलों पर स्थित थीं। अयोध्या में स्थित टीलों का उत्खनन पुरातत्वविद बी बी लाल द्वारा किए जाने पर ईंट की दीवार किले की दीवार के रूप में पहचान है। देव वंश के शासक मूलदेव का सिक्का अयोध्या, कोसल में ढाला गया था। अवलोकनः मूलदेवसा, हाथी बाईं ओर का प्रतीक है। युग पुराण में मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, साकेत पुष्यमित्र शुंग के शासन के अधीन आने के बाद धनदेव के प्रथम शताब्दी ई. पू. के शिलालेख के अनुसार अयोध्या में राज्यपाल नियुक्त किया था। यूनानियों, मथुराओं और पंचालों की संयुक्त सेना द्वारा हमला किए जाने के रूप में किया गया है। पाणिनि की पतंजलि की टिप्पणी में साकेत की यूनानी घेराबंदी का उल्लेख है। युग पुराण के अनुसार यूनानियों के पीछे हटने के बाद साकेत पर सात शक्तिशाली राजाओं का शासन था। वायु पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण में कोसल की राजधानी अयोध्या में सात शक्तिशाली राजाओं ने शासन किया था। अयोध्या राजाओं में धनदेव सहित देव वंश के राजाओं के सिक्कों प्राप्त है।

शिलालेख में कोसल के राजा ( कोसलाधिपति ) के रूप में वर्णित किया गया है। देव राजाओं के बाद साकेत पर दत्त, कुषाण और मित्र राजाओं का शासन था । पहली शताब्दी ईस्वी के मध्य में दत्त देव राजाओं के उत्तराधिकारी बनने के बाद कौशल राज्य को कनिष्क ने कुषाण साम्राज्य में मिला लिया। तिब्बती पाठ एनल्स ऑफ ली कंट्री के अनुसार ११वीं शताब्दी में खोतान के राजा विजयकीर्ति, राजा कनिका, गु-ज़ान के राजा और ली के राजा ने भारत पर चढ़ाई की और सो-केड शहर पर कब्जा कर लिया। विजयकीर्ति ने साकेत से कई बौद्ध अवशेष ले लिएऔर फ्रु-नो के स्तूप में रख दिया था ।कुषाणों के आक्रमण के कारण साकेत में बौद्ध स्थल नष्ट हो गए थे ।

कुषाण शासन के दौरान साकेत समृद्ध शहर साकेत बना है। दूसरी शताब्दी के भूगोलवेत्ता टह्लेमी ने महानगर ”सगेदा” या ”सगोडा” का उल्लेख किया है । चौथी शताब्दी में अयोध्या क्षेत्र गुप्तों के नियंत्रण में आ गया था । गुप्तकाल ने ब्राह्मणवाद को पुनर्जीवित किया। वायु पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार प्रारंभिक गुप्त राजाओं ने साकेत पर शासन किया था। पाँचवीं शताब्दी के चीनी यात्री फैक्सियन के अनुसार ”शा-ची” में बौद्ध इमारतों के खंडहर मौजूद थे। गुप्त काल के दौरान महत्वपूर्ण विकास साकेत को इक्ष्वाकु वंश की राजधानी, अयोध्या के प्रसिद्ध शहर के रूप में था । कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान जारी ४३६ ईस्वी के करमदंड (कर्मदंड) शिलालेख में, अयोध्या को कोसल प्रांत की राजधानी के रूप में नामित किया गया है । पृथ्वीसेन द्वारा अयोध्या के ब्राह्मणों को दान देने का रिकहर्ड है। गुप्त साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र से अयोध्या स्थानांतरित कर दी गई। परमार्थ में राजा विक्रमादित्य शाही दरबार को अयोध्या ले गए। जुआनज़ैंग नेपुष्टि

करते हुए कहा कि विक्रमादित्य राजा ने दरबार को “श्रावस्ती देश”, यानी कोसल में स्थानांतरित कर दिया था। रॉबर्ट मॉन्टगोमरी मार्टिन द्वारा १८३८ ई. में अयोध्या की परंपरा का उल्लेख किया है कि भगवान राम के वंशज बृहदबाला की मृत्यु के बाद शहर वीरान हो गया एवं उज्जैन के राजा विक्रमादित्य  ने अयोध्या की  प्राचीन खंडहरों को ढकने वाले जंगलों को काटा, रामगर किला बनवाया और ३६० मंदिर बनवाए थे। परमारथ के लाइफ अहफ वसुबंधु के अनुसार विद्वानों के संरक्षक विक्रमदित्य ने वसुबंधु को सोने की ३००,००० मोहरें प्रदान की थीं। वसुबंधु साकेत (”शा-की-ता”) के मूल निवासी और विक्रमादित्य को अयोध्या के राजा (”ए-यू-जा”) के रूप में वर्णित करते हैं।

धन का उपयोग अ-यु-जा (अयोध्या) देश में तीन मठों के निर्माण के लिए किया गया था। राजा बालादित्य नरसिम्हगुप्त  और उनकी मां ने भी वसुबंधु को बड़ी मात्रा में सोना दिया था।  मानव सभ्यता की प्रथम  पुरी अयोध्या को  प्राप्त है। रामजन्मभूमि , कनक भवन , हनुमानगढ़ी ,राजद्वार मंदिर ,दशरथमहल , लक्ष्मणकिला , कालेराम मन्दिर , मणिपर्वत , श्रीराम की पैड़ी , नागेश्वरनाथ , क्षीरेश्वरनाथ श्री अनादि पञ्चमुखी महादेव मन्दिर , गुप्तार घाट , बिरला मन्दिर , श्रीमणिरामदास जी की छावनी , श्रीरामवल्लभाकुञ्ज , श्रीलक्ष्मणकिला , श्रीसियारामकिला , उदासीन आश्रम रानोपाली तथा हनुमान बाग जैसे अनेक आश्रम आगन्तुकों का केन्द्र हैं।

राम जन्मभूमि -  अयोध्या शहर के पश्चिमी भाग  में रामकोट में स्थित अयोध्या का प्रमुख स्थान श्रीरामजन्मभूमि है। श्रीराम-लक्ष्मण-भरत और शत्रुघ्न चारों भाइयों के बालरूप स्थापित हैं। अयोध्या का राजा सुमित्रा द्वारा चौथीं शताब्दी ई.पू.. में मकर पद्धति का गोलाकार १७ कतारों युक्त ८५ खंभों वाला राम मंदिर का निर्माण कराया गया था। उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा श्री राम मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया था। गढ़वाल राजा गोविंद चंद्र ने ११११ ई. से ११५४ ई. तक श्री राम मंदिर को विष्णु हरि मंदिर का चतुर्दिक विकास किया था। द-शर्की आर्किटेक्चर ऑफ जौनपुर १८९६ के लेखक पुराविद एंटोन फ़्यूहरर  ने आयुष्य चंद्र केयाल १२ विन सदी में राम मंदिर भव्य कहा है। संबत १२४१ व ११८४ ई. में श्री राम मंदिर भव्य था। उज्जैन का राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्मित राम जन्मभूमि पर निर्मित श्री राम मंदिर को मुगल बादशाह बाबर का सूबेदार मीरबाँकी ने बाबर के सम्मान में १५२८ ई. में श्री राम मंदिर पर बाबरी मस्जिद का निर्माण कर बाबरी मस्जिद में तब्दील कर दिया था। ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान १८५३ ई. में हिन्दू और मुस्लिम के बीच प्रथम बार राम मंदिर के लिए विवाद प्रारम्भ हो गया था। ३० नवंबर १८५८ ई. में खालसा पंथ के बाबा फ़कीर सिंह के नेतृत्व में २५ निहंग सिखों ने श्री राम मंदिर पर निर्मित बाबरी मस्जिद पर कब्जा कर भगवान राम की उपासना स्थल बनाया था।

श्री राम मंदिर पर बने बाबरी मस्जिद को सनातन धर्मालंबियों द्वारा ध्वस्त कर श्री रामजन्म भूमि की लंबी कानूनी एवं संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त किया गया। अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि पर २२ जनवरी २०२४ सोमवार को  श्री राम मंदिर का निर्माण कर श्रीराम मंदिर के गर्भगृह में श्री राम की बाल स्वरूप मूर्ति की स्थापना भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच की गई है। श्री राम की मूर्ति की स्थापना के समय उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ एवं राज्यपाल शामिल थे।     सनातन धर्म एवं श्री राम  भक्त

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल हुए । श्री राम मंदिर की लंबाई पूरब से पश्चिम ३०० फीट ,चौड़ाई २५० फीट , उचाई १६१ फीट, मंजिल प्रत्येक की ऊँचाई २० फीट , ३६२ स्तम्भ ,४४ दरवाजा है । भूतल पर श्री राम मंदिर के गर्भगृह में शालिग्राम पाषाण में निर्मित श्री रामलला विराजमान , श्रीराम दरवार , मंडपों में नृत्य रंग , प्रार्थना , कीर्तन मंडप , प्रवेश में पूरब से १६.५ फीट , ३२ सीढ़ियां , आयताकार परकोटा ७३२ मीटर , चौड़ाई ४.५ मीटर है । श्री राम जन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह में राम लाल की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा पौष शुक्ल द्वादशी सोमवार संबत २०८० दिनांक २४ जनवरी २०२४ को को दोपहर १२ बजकर २६ मिनट ८ सेकंड से १२ बजकर ३० मिनट ३२ सेकंड के मध्य किया गया ।

कनक भवन - टीकमगढ़ की रानी द्वारा १८८१ ई. को कनक मंदिर का निर्माण कर सीता और राम के सोने मुकुट पहने प्रतिमाओं की स्थापना की गई थी ।

हनुमान गढ़ी - अयोध्या नगर के केन्द्र में स्थित राम जन्मभूमि मंदिर के सामने ऊँचे टीले पर हनुमान गढ़ी मंदिर में हनुमानजी की मूर्ति स्थापित है । भगवान राम की अयोध्या नगरी में हनुमान जी सदैव निवास करते हैं। भक्त अयोध्या आकर भगवान राम के दर्शन के पूर्व हनुमान जी के दर्शन करते हैं। हनुमान जी गुफा में निवास कर राम जन्मभूमि और रामकोट की रक्षा करते हैं। भगवान श्रीराम ने हनुमान जी को वर दिया था कि भक्त मेरे दर्शनों के लिए अयोध्या आएगा तो पहले तुम्हारा दर्शन पूजन करेगा। पवित्र नगरी अयोध्या में सरयू नदी में पाप धोने से पहले लोगों को भगवान हनुमान से आज्ञा लेनी होती है। यह मंदिर अयोध्या में अवस्थित टीले पर स्थित होने के कारण मंदिर तक पहुंचने के लिए ७६ सीढ़ियां चढ़ने के बाद पवनपुत्र हनुमान की ६ इंच की प्रतिमा के दर्शन होते हैं । हनुमान गढ़ी मंदिर में बाल हनुमान के साथ अंजनी माता की प्रतिमा है। मंदिर परिसर में मां अंजनी व बाल हनुमान जी, अपनी मां अंजनी की गोद में बालक के रूप में विराजमान हैं। अवध नवाब सुल्तान मंसूर अली का एकमात्र पुत्र गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। प्राण बचने के आसार नहीं रहे, रात्रि की कालिमा गहराने के साथ ही उसकी नाड़ी उखड़ने लगी थी ।अवध नवाब सुल्तान ने थक हार कर संकटमोचक हनुमान जी के चरणों में उसका माथा रख दिया। हनुमान ने अपने आराध्य प्रभु श्रीराम का ध्यान किया और सुल्तान के पुत्र की धड़कनें पुनः प्रारम्भ हो गई। अपने इकलौते पुत्र के प्राणों की रक्षा होने पर अवध के नवाब मंसूर अली ने बजरंगबली के चरणों में अपना माथा टेक दिया। जिसके बाद नवाब ने हनुमान गढ़ी मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और ताम्रपत्र पर लिखकर ये घोषणा की कि हनुमान गढ़ी मंदिर पर किसी राजा या शासक का कोई अधिकार नहीं रहेगा और नही यहां के चढ़ावे से कोई कर वसूल किया जाएगा। उसने ५२ बीघा भूमि हनुमान गढ़ी व इमली वन के लिए उपलब्ध करवाई। अयोध्या न जाने कितनी बार बसी और उजड़ी,के लेकिन फिर भी एक स्थान जो हमेशा अपने मूल रूप में रहा हनुमान टीला/हनुमान गढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। लंका से विजय के प्रतीक रूप में लाए गए निशान मंदिर में रखे गए लंका का प्रतीक खास मौके पर बाहर निकाल कर जगह-जगह पर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। मन्दिर में विराजमान हनुमान जी को अयोध्या का संकटमोचन माना जाता है। हनुमान जी गुफा में रहते थे और रामजन्मभूमि और रामकोट की रक्षा करते थे।

राजद्वार मंदिर - हनुमान गढ़ी के समीप भगवान राम को समर्पित राजद्वार मंदिर उच्च्व पतला शिखर वाला उच्च्व भूमि पर खड़ा है ।

श्री लक्ष्मण किला - महान संत स्वामी श्री युगलानन्यशरण जी महाराज की तपस्थली रसिकोपासना के आचार्यपीठ के रूप में प्रसिद्ध है। श्री स्वामी जी बिहार

का चिरान्द (छपरा) निवासी स्वामी श्री युगलप्रिया शरण ’जीवाराम’ जी महाराज के शिष्य बिहार का नालंदा जिले के इस्माइल पुर में १८१८ ई. में जन्मे स्वामी युगलानन्यशरण जी का रामानन्दीय वैष्णव-समाज में स्थान है। स्वामी जी ने रघुवर गुणा दर्पण,पारस-भाग,’श्री सीतारामनामप्रताप-प्रकाश’ तथा “इश्क-कान्ति” आदि लगभग सौ ग्रन्थों की रचना की है। ब्रिटिश साम्राज्य काल में ५२ बीघे में विकसित आश्रम श्री लक्ष्मण किला को रीवां राज्य (म.प्र.) द्वारा निर्मित सरयू नदी के तट पर ४१ बीघे भूमि विल्व गंधर्व दान-स्वरूप मिली थी। श्री सरयू के तट पर स्थित आश्रम श्री सीताराम जी आराधना के साथ संत-गो-ब्राह्मण सेवा संचालित होते है ।

नागेश्वर नाथ मंदिर - भगवान राम के पुत्र कुश ने नागेश्वर नाथ मंदिर का निर्माण कराया था। अवध का राजा कुश सरयू नदी में स्नान करने के क्रम में बाजूबंद खो गया था। कुश का बाजूबंद शिव भक्त नाग कन्या को प्राप्त होने के बाद कुश से प्रेम हो गया। कुश ने नाग कन्या के लिए नागेश्वरनाथ मंदिर का निर्माण कराया था । उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा नागेश्वर नाथ मंदिर पुनर्निर्माण कराया गया था ।

पञ्चमुखी महादेव मन्दिर - अन्तर्गृही अयोध्या के शिरोभाग में गोप्रतार घाट पर पञ्चमुखी शिव मंदिर है। शैवागम में वर्णित ईशान , तत्पुरुष , वामदेव , सद्योजात और अघोर नामक पाँच मुखों वाले लिंगस्वरूप की उपासना से भोग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

राघवजी का मन्दिर- अयोध्या नगर के केन्द्र में स्थित भगवान श्री राम को समर्पित राघव मंदिर है ।

सप्तहरि - मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की लीला स्थल अयोध्या में श्रीहरि के अन्य सात प्राकट्य हुए हैं । सप्तहरि स्थल पर देवताओं और मुनियों की तपस्या से प्रकट हुए थे । भगवान् विष्णु के सात स्वरूपों को ही सप्तहरि में भगवान “गुप्तहरि” , “विष्णुहरि”, “चक्रहरि”, “पुण्यहरि”, “चन्द्रहरि”, “धर्महरि” और “बिल्वहरि” हैं।

जैन मंदिर - अयोध्या को पांच जैन तीर्थकरों की जन्मभूमि है। तीर्थकर का जन्म भूमि पर तीर्थकर का मंदिरका निर्माण फैजाबाद नबाब के खजांची केशरी सिंह द्वारा कराया गया था । अयोध्या उच्चकोटि के सन्तों की साधना-भूमि है ।स्वामी श्रीरामचरणदास जी महाराज ’करुणासिन्धु जी’ स्वामी श्रीरामप्रसादाचार्य जी, स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी, पं. श्रीरामवल्लभाशरण जी महाराज, श्रीमणिरामदास जी महाराज, स्वामी श्रीरघुनाथ दास जी, पं.श्रीजानकीवरशरण जी, पं. श्री उमापति त्रिपाठी जी आदि अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।

विल्व हरिघाट - अयोध्या का राजा भगवान राम के पिता स्वायम्भुव मनु के अवतार एवं शतरूपा की अवतार कौशल्या के पति दशरथ की चिता भूमि अयोध्या से १३ . ५ किमि की दूरी पर सरयू नदी के तट पर अवस्थी चिता भूमि है । यह क्षेत्र गंधर्व राज विल्व गंधर्व के अधीन था । भगवान राम ने गंधर्व राज विल्व को उद्धार किया था । विल्व हरि घाट पर विल्व हरि शिव मंदिर में विल्व हरि शिव लिंग स्थापित है ।

गुप्तार घाट - अयोध्या का फैजाबाद के समीप सरयू नदी के तट पर अवस्थित गुप्तार घाट में भगवान राम ने आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को जल समाधि ली थी । राजा दर्शन सिंह द्वारा १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गुप्तारघाट घाट पर जलसमाधि स्थल का निर्माण कराया गया था । यहां भगवान शिव को समर्पित शिवमंदिर है ।

राम की पैड़ी - त्रेतायुग में भगवान राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ अयोध्या स्थित सरयू नदी के तट पर किया गया था । यज्ञ स्थल पर ठाकुर जी मंदिर राम की पैड़ी पर स्थापित है ।

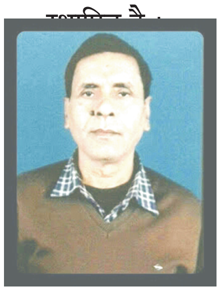


**सत्येन्द्र कुमार पाठक**
9472987491
करपी , अरवल ,
बिहार 804419



**“पहला सुख निरोगी काया”**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

# उफ्फफफ्फ़ ये प्री –वेडिंग शूट

**संस्**कृति कैसे बदलती है धीरे धीरे ये समझना होगा । अभी तक तो शादी विवाह में सेल्फी और डि जे पर थिरकना ही फैशन था । अब एक नया फैशन ट्रेंड में आ गया है । अब जब किसी नई जगह शादी विवाह में जाईयेगा तो गौर करियेगा । जहाँ ये ट्रेन्ड न दिखे आप समझ लीजियेगा की अत्यंत ही पिछड़े लोग हैं । तो चलिए अब उस ट्रेण्ड की बात कर लेते हैं । आजकल सेल्फी के पागलपन में और आधुनिकता के दौर में बीस किलो का लहँगा और जेवर पहने और दस किलो का शेरवानी पहने दूल्हा-दुल्हन को एक प्रकार से खारिज ही किया जा चुका है । जब उसी कार्यक्रम में कई अत्याधुनिक ड्रेसेस पहने सुंदरियाँ अगल-बगल थिरक रही होती हैं, तो कौन दूल्हा दुल्हन का मेकअप और भारी भरकम ड्रेस देखने की जहमत उठाएगा । ज्यादातर पुरुष वर्ग की निगाहें अगल बगल की सेल्फी लेती इन परियों की हरकतों पर ही रहता है। शायद इन्ही परिस्थितियों से ईजाद हुआ होगा 'प्री वेडिंग शूट' । तो आईये फिर ले चलते हैं आपको इस प्री वेडिंग शूट की तरफ । इसके अंतर्गत भावी दूल्हा दुल्हन को अलग अलग जगहों पर ले जाया जाता है , कभी किसी महल में तो कभी किसी बगीचे में तो कभी किसी फुलवारी में भी जहाँ वो तरह तरह के अत्याधुनिक ड्रेसेस पहने दुल्हन दूल्हा की बाँहों में झूलती नजर आती है। कभी वो भागती और दूल्हे द्वारा स्लो मोशन में उसको पकड़ने का सीन होता है तो कभी हाथ में हाथ लेकर आसमान से बातें करते और कभी तो दुल्हन शर्माती और दूल्हे द्वारा उसकी जुल्फों को संवारते दिखाया जाता है । कहने का मतलब है की आम जन भी बिल्कुल फ़िल्मी हुयी गवा है । तीन-चार घंटे का ये शूट एक ही दिन में तो कत्तई सम्भव नहीं इसलिए भावी दूल्हा दुल्हन और कैमरामैन की ये डेटिंग विवाह के पूर्व कई बार होती है और फिर उतनी ही बार दोनों के अलग अलग सुंदर ड्रेसेस और उनसे मेल खाते गहने और फिर पारलर की सजावट सबका खर्च ।

अब प्रचलन में चलने वाले दहेज की नहीं वरन आने वाले दिनों में कैसे अच्छे से अच्छा प्री-वेडिंग शूट ले लिया जाए इसकी चिंता सताएगी लोगों को । फिर तो आने वाले दिनों में घरों में बहू को घूँघट की आड़ में छुपने की जरूरत भी न होगी क्योंकि ससुराल के लगभग सभी मुख्य किरदारों के समक्ष तो वो अपने भावी दूल्हे की बाँहों में झूल जो चुकी है और वो भी कभी शोल्डरलेस ड्रेस में कभी गाउन में तो कभी जीन्स टी शर्ट में । एक और संस्कृति मुँह दिखाई का प्रचलन भी समाप्त ही हो जाएगा क्योंकि अब आधुनिक संस्कृति की दौड़ में मुँह दिखाई की जगह देह दिखाई पहले ही हो चुका होगा वो भी ,फ़ोकट में और दुल्हन को एक प्रकार से आर्थिक घाटा भी उठाना पड़ेगा । चलिए यहाँ तक तो गनीमत है पर आगे चलकर 'संस्कृतिकरण की भाग दौड़ में कहीं ' सुहाग रात का वीडियो बनाने का प्रचलन भी आ गया तो उफ्फफफ्फ़ हद्द है २.मेरी कल्पना भी कहाँ कहाँ चली जाती है २अब इतना भी आधुनिकीकरण नहीं होगा ।

हमें ऐसे में याद आता है जब मेरी छोटी बहन का विवाह तय हुआ था तो हमारे बड़े पापा और भाई ने कड़े शब्दों में सख्त हिदायत दी थी कि भूल कर भी कभी लड़के को तुम लोग फोन मत कर लेना। कोई जरूरत नहीं है ज्यादा गुफ्तगू की। और फिर जब उन्ही भाई साहब का विवाह तय हुआ तो अगले तीन माह में फोन का बिल पचास हजार पहुँच गया । बस गनीमत यही थी की होने वाली भाभी फोन से बाहर नहीं निकल आयीं अगर एक दो महीने और डेट आगे बढ़ जाती तो वो कसर भी पूरी हो जाती ।

हम सब इस समय संस्कृति का बदलाव होते देख और सुन रहे हैं साक्षी हैं । अक्सर जिन कपड़ों के पहनने पर भाईयों की आँखें हमें घूरती रहती थीं और जब तक उन कपड़ो को बदल न लिया जाता था भाई लोगों को चैन न आता था आज उनसे भी ज्यादा बोल्ड कपड़े उनकी बच्चियाँ पहनतीं हैं और वो सहज रहते हैं २. और कैसा बदलाव चाहिए समाज को ।

**सीमा"मधुरिमा"**
**लखनऊ**

# अयोध्या त्रेता से भविष्य तक –विवेक रंजन श्रीवास्तव

**भार**तीय मनीषा में मान्यता है कि देवों के देव महादेव अनादि हैं। उन्हीं भगवान् सदाशिव को वेद, पुराण और उपनिषद् ईश्वर तथा सर्वलोकमहेश्वर कहते हैं। भगवान् शिव के मन में सृष्टि रचने की इच्छा हुई। उन्होंने सोचा कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ। यह विचार आते ही सबसे पहले शिव ने अपनी परा शक्ति अम्बिका को प्रकट किया तथा उनसे कहा कि हमें सृष्टि के लिये किसी दूसरे पुरुष का सृजन करना चाहिये, जिसे सृष्टि संचालन का भार सौंपा जा सके। ऐसा निश्चय करके शक्ति अम्बिका और परमेश्वर शिव ने अपने वाम अंग के दसवें भाग पर अमृत स्पर्श कर एक दिव्य पुरुष का प्रादुर्भाव किया।

पीताम्बर से शोभित चार हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म सुशोभित उस दिव्य शक्ति पुरुष ने भगवान् शिव को प्रणाम किया। भगवान् शिव ने उनसे कहा– "हे वत्स" ! व्यापक होने के कारण तुम्हारा नाम विष्णु होगा। सृष्टि का पालन करना तुम्हारा कार्य होगा। भगवान शिव की इच्छानुसार श्री विष्णु कठोर तप में निमग्न हो गये। उस तपस्या के श्रम से उनके अंगो से जल धाराएँ निकलने लगीं, जिससे सूना आकाश भर गया। अंततः उन्होंने उसी जल में शयन किया। जल अर्थात् "नार" में शयन करने के कारण ही श्री विष्णु का एक नाम "नारायण" हुआ। तदनन्तर नारायण की नाभि से एक उत्तम कमल प्रकट हुआ। भगवान शिव ने अपने दाहिने अंग से चतुर्मुख ब्रह्मा को प्रकट करके उस कमल पर उन्हें स्थापित कर दिया।

महेश्वर की माया से मोहित ब्रह्मा जी कमल नाल में भ्रमण करते रहे, पर उन्हें अपने उत्पत्तिकर्ता का पता नहीं लग रहा था। आकाशवाणी द्वारा तप का आदेश मिलने पर ब्रह्माजी ने बारह वर्षों तक कठोर तपस्या की। आदि शिव ने प्रकट हो भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मा जी से कहा – "हे सुर श्रेष्ठ" ! आप पर जगत की सृष्टि का भार रहेगा तथा हे प्रभु विष्णु ! आप इस चराचर जगत के पालन व्यवस्था हेतु सारे विधान करें। इस प्रकार भगवान विष्णु सृष्टि के पालनहार की भूमिका के निर्वाह में कर्ताधर्ता हैं।

भागवत के अनुसार भगवान विष्णु को जग की व्यवस्था बनाये रखने के लिये दशावतार की पौराणिक मान्यता है। भगवान विष्णु अपने सातवें अवतार में त्रेता युग में स्वयं मर्यादा पुरोषत्तम श्री राम के रूप में इस धरती पर मनुष्य रूप में आये। इसके उपरांत द्वापर में श्री कृष्ण के और फिर बुद्ध के रूप में भगवान का अवतरण हो चुका है। ग्रंथों के अनुसार कलयुग में भगवान विष्णु अपने दसवें अवतार में कल्कि रूप में अवतार लेंगे। कल्कि अवतार कलियुग व सतयुग का पुनः संधिकाल होगा। कल्कि देवदत्त नामक घोड़े पर सवार होकर संसार से पापियों का विनाश करेंगे और धर्म की पुनःस्थापना करेंगे। सृष्टि का यह अनंत क्रम निरंतर क्रमबद्ध चलते रहने की अवधारणा भारतीय मनीषा में की गई है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम अवतारी परमेश्वर थे पर उन्होंने सामान्य बच्चे की तरह माता के गर्भ से जन्म लिया। श्रीराम का जन्म चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को माना जाता है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण के बाल काण्ड में श्री राम के जन्म का उल्लेख इस तरह किया गया है। जन्म सर्ग १८ वें श्लोक १८–८–१० में महर्षि वाल्मीक जी ने उल्लेख किया है कि श्री राम जी का जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को अभिजीत महूर्त में हुआ। आधुनिक वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर द्वारा गणना करने पर यह तिथि २१ फरवरी, ५११५ ईस्वी पूर्व निकलती है।

गोस्वामी तुलसीदास की रामचरित मानस के बाल काण्ड के १६० वें दोहे के बाद पहली चौपाई में तुलसीदास ने भी इसी तिथि और ग्रह नक्षत्रों का वर्णन किया है। वाल्मीकि रामायण की पुष्टि दिल्ली स्थित संस्था इंस्टीट्यूट ऑफ साइंटिफिक रिसर्च ऑन वेदा ने भी की है। वेदा ने खगौलीय स्थितियों की गणना के आधार पर ये थ्योरी बनाई है। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार जिस समय राम का जन्म हुआ उस समय पांच ग्रह अपनी उच्चतम स्थिति में थे। यूनीक एग्जीबिशन ऑन कल्चरल कॉन्टिन्यूटी फ्रॉम ऋग्वेद टू रोबहटिक्स नाम की एग्जीबिशन में प्रस्तुत रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार भगवान राम का जन्म १० जनवरी,

५११४ ईसा पूर्व सुबह बारह बजकर पांच मिनट पर हुआ (१२:०५ ए.एम.) पर हुआ था। यह तिथि इतनी अर्वाचीन है कि उसकी गणना में छोटी सी भी मानवीय त्रुटि बड़ा परिवर्तन कर सकती है अतः इस सबके ज्ञान मार्गी तर्क से परे भगवान राम के जन्म के रसमय भक्ति मार्गी आनन्द का अवगाहन ही सर्वथा उपयुक्त है।

संस्कृत के अमर ग्रंथ महाकवि कालिदास ने रघुवंश की कथा को २६ सर्गों में बाँटा है जिनमें अयोध्या के सूर्यवंश के राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, लव, कुश, अतिथि तथा बाद के २६ रघुवंशी राजाओं की कथा कही गई है। रामायण के अनुसार अयोध्या के सूर्यवंशी राजा दशरथ को चौथेपन तक संतान प्राप्ति नहीं हुई, "एक बार दशरथ मन माही, भई गलानि मोरे सुत नाही" । ईश्वरीय शक्तियों के मानवीकरण का इससे सहज उदाहरण और क्या हो सकता है ? राजा दशरथ और माता कौशल्या पुत्र कामना से अयोध्या के राजभवन में यज्ञ करते हैं। फिर राजा दशरथ को माता कौसल्या , सुमित्रा और कैकेयी रानियों से राम , लक्ष्मण , भरत , शत्रुघ्न पुत्रों का जन्म होता है। अयोध्या में खुशहाली छा जाती है।

भगवान राम सारी बाल लीलायें करते हैं "ठुमक चलत रामचंद्र , बाजत पैंजनियां "। गुरु गृह गये पढ़न रघुराई , अल्प काल विद्या सब पाई। फिर दुष्टों के संहार के जिस मूल प्रयोजन से भगवान ने अवतार लिया था , उसके लिये भगवान श्री राम अनुकूल स्थितियां रचते जाते हैं पर मानवीय स्वरूप और क्षमताओ में स्वयं को बांधकर ही मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर दुष्ट राक्षसों का अंत कर समाज में आदर्श पुत्र , आदर्श भाई , आदर्श पुरुष ,आदर्श राजा के चरित्रों की स्थापना करते हैं।

राम कथा से भारत ही नहीं दुनियां भर सुपरिचित है। विभिन्न देशों , अनेको भाषाओ में राम लीलाओ में निरंतर रामकथा कही , सुनी जाती है और जन मानस आनंद के भाव सागर में डूबता उतराता , राम सिया हनुमान की भक्ति से अपनी कठिनाईयों से मुक्ति के मार्ग बनाता जीवन दृष्टि पा रहा है।स्वाभाविक है कि अयोध्या में भगवान श्रीराम के जन्म स्थल पर एक भव्य मंदिर सदियों से विद्यमान था। जब मुगल आक्रांताओ ने भारत में आधिपत्य के लिये आक्रमण किये तब सांस्कृतिक हमले के लिये १५२८ में राम जन्म भूमि के मंदिर को तोड़कर वहां पर मस्जिद बनाई गई। हिन्दुओ को अस्तित्व के लिये बड़े संघर्ष का सामना करना पड़ा। ऐसे दुष्कर समय में साहित्य ही सहारा बना और भक्ति कालीन कवियों ने हिंदुत्व को पीढ़ीयों में जीवंत बनाये रखा । महाकवि गोस्वामी तुलसीदास कृत अवधी भाषा में लिखि गई राम चरित मानस हिन्दुओ की प्राण वायु बनी। गिरमिटिया मजदूर के रुप में विदेशों में ले जाये गये हिन्दूओ के साथ उनके मन भाव में मानस और राम कथा अनेक देशों तक जा पहुंची और रामकथा का वैश्विक विस्तार होता चला गया।

१८५३ में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच इस राम जन्म भूमि को लेकर संघर्ष हुआ। १८५६ में अंग्रेजों ने विवाद को ध्यान में रखते हुए पूजा व नमाज के लिए मुसलमानों को अन्दर का हिस्सा और हिन्दुओं को बाहर का हिस्सा उपयोग में लाने को कहा। देश की अंग्रेजों से आजादी के बाद १६४६ में अन्दर के हिस्से में भगवान राम की मूर्ति रखी गई। तनाव को बढ़ता देख सरकार ने इसके गेट में ताला लगा दिया। सन् १६८६ में जिला न्यायाधीश ने विवादित स्थल को हिंदुओं की पूजा के लिए खोलने का आदेश दिया। मुस्लिम समुदाय ने इसके विरोध में बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी गठित की।

सन् १६८६ में विश्व हिन्दू परिषद ने विवादित स्थल से सटी जमीन पर राम मंदिर की मुहिम शुरू की। ६ दिसम्बर १६६२ को अयोध्या में कथित अतिक्रमित बाबरी मस्जिद ढ़हा दी गई। आस्था के सतत सैलाब से कालांतर में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार वर्तमान स्वरूप विकसित हो सका और अब वह शुभ समय आ पहुंचा है जब पांच सौ वर्षो के बाद राम लला पुनः भव्य स्वरूप में जन्म स्थल पर सुशोभित हो रहे हैं।

अयोध्या जिसे पहले साकेत नगर के रूप में भी जाना जाता था सरयू नदी के तट पर बसी एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगरी है। अयोध्या प्राचीन समय में कोसल राज्य की राजधानी एवं प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण की पृष्ठभूमि का केंद्र थी। प्रभु श्री राम की जन्मस्थली होने के कारण अयोध्या को मोक्षदायिनी एवं हिन्दुओं की प्रमुख तीर्थस्थली के रूप में माना जाता है। राम जन्म स्थल पर नये मंदिर के निर्माण के बाद अब अयोध्या वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अंकित हो चली है और यहां जो विश्वस्तरीय जन सुविधा विकसित हो रही है उससे यह हिन्दुओ की आस्था का सुविकसित केंद्र बनकर सदा सदा हमें नई उर्जा प्रदान करती रहेगी।

–:–

# जलक्रीड़ा के लिए मशहूर कुचामन का किला

हर किला एक-सा नहीं होता। हर किले की कुछ विशेषता होती हैं। राजस्थान के कुचामन के किले का निर्माण राजा जालिम सिंह ने करवाया था। यह एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। अतिदुर्गम और विलक्षण है। तलहटी के मुख्य द्वार तक पहुंचने के लिए पुरानी अनाज मंडी के बीच से जाना होता है। सड़क के किनारे एक-दूसरे के सामने बने हवेली नुमा जैन मंदिर कुचामन के व्यापार में जैनियों के प्रभुत्व को दर्शाते हैं। पास में ही बच्चों का स्कूल और बच्चों के मुंह से निकलती राजस्थानी भाषा अनायास मन मोह लेती है। मुख्य दरवाजे के बायीं तरफ किला घूमने जाने के लिए टिकट विंडो बनी है। इस किले को देखने के लिए प्रति व्यस्क व्यक्ति ५०० रुपये का टिकट लेना जरूरी हैं। उसके बाद दो तरह से किले के बुर्ज तक पहुंचा जा सकता है। एक तो आप पैदल जाएं या फिर ट्रस्ट की ओर से मुहैया जीप में सवार होकर जाएं। जीप का किराना लाने और ले जाने का किराया १०००/-रुपए है। पैदल किले पर जाना कठिन कार्य है, लेकिन युवा हिम्मत करके पहुंचते हैं। जिनको वृद्धावस्था की दस्तक मिल चुकी है, वे जीप में सवार होकर किले के मुख्य दरवाजे के बाहर सैनिकों की गारद के रूप में बने तिखाल नुमा कमरों के सामने छोटे मैदाननुमा स्थान तक पहुंचते हैं।

जीप की सवारी किसी जान जोखिम ( थ्रिलिंग) से कम नहीं है। इतनी सफाई और कुशलता से जीप ऊपर चढ़ती है कि ड्राइवर साहब के कदम चूमने का मन कर उठता है। सुई बराबर चूक से जान से हाथ धो सकते हैं। बहरहाल पानी की पुरानी व्यवस्था के अनुसार मटकों के पानी से स्वागत खुद का करना होता है। उसके बाद गाइड श्री ईश्वर जी किले की विस्तार से जानकारी देने लगते हैं। उनकी उम्र और किले की दुर्गमता दोनों के आप कायल हुए बिना नहीं रह पाते। किलों में अकसर तोप और उनके गोलों की चर्चा होती है, लेकिन तोप में पत्थर के गोलों की चर्चा नहीं सुनी होगी। ईश्वर जी हमें तोप के सुन्दर पत्थर से गढ़े गोले दिखाते हैं और साथ में बारूद के गोले तथा कुछ विस्फोटक सामग्री भी। विस्फोटक सामग्री लड़ियों के रूप में थी। गढ़ इतना मजबूत और दुर्गम है कि आज भी आसानी से चढ़ना सहज नहीं है।

हम आगे चलते हैं। कैदियों को रखने का स्थान मुख्य जमीन से करीब ११ फीट गहरा कमरा होता है, जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता। समय की पुकार के साथ-साथ उसमें सीलन की बदबू आ रही थी। राजा का शयन कक्ष में राजा महाराजाओं की तरह मुसंद पड़े थे। कुछ मित्र उन पर बैठकर स्वयं को राजा की अनुभूति से अनुभूत कर रहे थे। इस किले को होटल स्वरूप में परिवर्तित किया जा रहा है, इसलिए राजा का पलंग आधुनिक था। इस कक्ष से राजा चारों ओर नज़र रख सकता था, कौन आ रहा है कौन जा रहा है। रानी का शयन कक्ष सुन्दर नक्कासी से सराबोर और छोटे-बड़े हजारों शीशों से सुसज्जित था। रानी के शयन कक्ष से भी शहर का विहंगमावलोकन किया जा सकता था। किले में बुर्ज तो कई हैं, लेकिन आने और जाने का मुख्य द्वार एक ही है। गुप्त रास्ते हैं जो आपात स्थिति में राजपरिवार को किले से करीब तीन किलोमीटर दूर तक ले जाते हैं। कुल देवी का मंदिर। इस वंश की कुल देवी जिसके मुकुट के ऊपर नाग बने हुए हैं।

अरे हां इस दौरान दीवार के कोने में एक काले नाग के दर्शन होते हैं। ईश्वर जी बताते हैं, जाकर हाथ फेरो बस कए सुन्दर सी बाइट (काटना) लेगा बस। हम सभी ठहाका मारकर हंस पड़ते हैं। इस उम्र में यह हंसोड़पन। वह भी समय की नजाकत को देखते हुए चुपचाप बैठा था।

कभी-कभार फन उठाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाता रहता। बच्चियों की दबी-दबी चीख निकल जाती। एक व्यंग्यकार महोदय तो लोगों को उकसा रहे थे, जाओ उसका आलिंगन करो, उसको चूमों। खुद की दाल पतली हो रही थी। हम किले में भीतर घूम-घूम कर दूर तक फैले शहर को अपलक देखते रह जाते हैं और सोचते हैं कि इतनी ऊचाई पर पानी की व्यवस्था कैसे होती है तो ईश्वर जी ने बताया- जहां आप खड़े हैं उसके ठीक नीचे दो बड़े-बड़े पानी के टैंक बने हुए हैं। उनमें बरसात के पानी को इकट्ठा किया जाता है और पूरे वर्ष इसी पानी का उपयोग किले में किया जाता रहा है। किले की मजबूती और उसकी बनावट बता रही थी किसी जमाने में इसका वैभव उच्च शिखर पर रहा होगा। हमें ईश्वर जी किले की छत पर छोड़ कर नीचे मुख्य द्वार पर आकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं।

हम लोग विभिन्न मुद्राओं में उल्टे-सीधे होकर फोटों खींचकर जब नीचे आते तो ईश्वर जी ने खड़े होकर कहा-मेरे पीछे आईए हम अनुसरण करते हुए छत से १०० फीट नीचे एक स्नानागार में अपने आपको पाते हैं। यह रानियों और राजाओं का जलक्रीड़ा प्रमोद का स्थान था। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि सन ७५० में इस प्रकार की सुविधा भी हो सकती है। छत पर स्त्रियों के अश्लील चित्र शोभायमान हो रहे थे। उनकी विभिन्न मुद्राएं देख युवा और बुजुर्ग दोंना ही सन्न रह रह थे। वहां पहुंच कर कोई भी अपने अस्तित्व को खोजने में लग जाता और राजाओं की रासलीला पर ईर्ष्याभाव लिए बिना रह पाता।

वापसी में दोबारा जीप में बैठने के पहले रूह कांप जाती हैं। जिन्हें अपनी ड्राइविंग पर बड़ा घमंड है वे एक बार उस जीप में अवश्य सवार होकर देखें, निकल जाएगी सारी हेकड़ी और आ जाएगी विनम्रता की पोटली। इतने साधन होने के बाद भी दुर्गम ही बना हुआ है। इस किले को अब होटल में तब्दील किया जा रहा है। हो सकता है भविष्य में यह किला आम आदमी की पहुंच से किले की तरह दुर्गम हो जाए।राजा हरिसिंह (अंतिम राजा) मार्ग के शुरू होने के साथ ही एक टी स्टाल पर चाय पीते हैं और कुचामन किले का भय मिश्रित आश्चर्य लेकर वापस घर की ओर निकल पड़ते हैं।

**सुनील जैन राही**

**एम-9810 960 285**


**कविता**

## क्या माँगते हैं

क्या माँगते हैं तुमसे ?
बस थोड़ा सा समय
ज़रा सा प्यार
और थोड़ी सी मनुहार
उन्होंने हमें
बहुत पुचकारा है
अब पुचकारने की
बारी हमारी है
थोड़ा उन्हें दुलार दो
ज़रा सा सम्मान दो
तुम पर दुनिया वार देगे
सारा जहाँ वो निसार देगें
तुम्हारे पीछे भागते न थकते थे
तुम्हारे नखरे उठाते न रुकते थे
सौ ख्वाहिशें पूरी करते
हर एक जुगाड़ कर के
अब तुम्हारा वक्त आया है
बुजुर्गों पर ध्यान दो
उन्हें थोड़ा सम्मान दो
उनके मन की थाह लो
ढेरो आशीर्वाद देगे
पूरी दुनिया कुर्बान देगे
बस इतना तुम काम करो
उनको दिल से मान दो


**रेनुका सिंह, लखनऊ**

**98073 03555**



**साहित्य सरोज पत्रिका के संपादन मंडल एवं स्थानीय प्रतिनिधि बनने हेतु सम्पर्क करें 9451647845**

**साहित्य सरोज के आगामी अंक के लिए कहानियां एवं संस्मरण भेजें**

sarojsahitya55@gmail.com

# जासूसी कहानियों की कमी

हिन्दी साहित्य समाज जासूसी कहानियों के लेखक को भले ही साहित्यकार का दर्जा न दें। उसके उपन्यासों को, कहानियों को साहित्य का दर्जा न दे मगर जासूसी कहानियाँ एवं उपन्यास पाठकों को ज्ञान एवं मनोरंजन दोनो देने के साथ पाठकों को पूरी तरह बांधे रखने में पूरी तरह सफल रहती हैं। इसकी कहानी हो या उपन्यास पाठक को हर शब्द के बाद सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि आगे क्या होगा? जो लेखक पाठक को आगे क्या होगा जितना सोचने पर मजबूर कर दें, किताब को खुले रखने एवं उस पर से नज़र न हटाने को मजबूर कर दे, वह लेखक उतना ही सफल माना जाता है।

जासूसी कहानियों की सबसे बड़ी बात होती है कि इसमें लेखक को अपनी कल्पना स्थापित करने के लिए खुला आसमान मिलता है। उसकी कल्पना हकीकत से परे जाकर भी हकीकत के पास लगती हैं क्योंकि पाठक तो कहानी के पात्रों में खोया रहता है। एक ही जासूसी कहानी में लेखक डर, भक्ति, प्यार, रोमांश, परिवार, खेल, होनी - अनहोनी सब कुछ दिखा सकता है। यह उसके विवेक और कहानी की बनाबट पर निर्भर करता है कि इनका प्रयोग कैसे किया जाये और इनका प्रयोग कर पाठक को कैसे बांधा जाये? क्योंकि यदि कहानी पाठक को बांधने में असमर्थ हुई तो कहानीकार का जासूसी लेखन खत्म माना जायेगा। पाठक को वह नहीं मिलेगा जो वह चाहता है।

आज २०-२० का वक्त है। पाठक से लेखक तक चार लाइनों के लेखन को पंसद करता है। और यह जासूसी कहानीयों में संभव नही है। जासूसी कहानी की अपनी एक खास लम्बाई होती है। एक खास गति होती है। एक खास कल्पना होती है। जो मिल कर पाठक को न सिर्फ बांधने का काम करती हैं बल्कि कहानी को कहानी के रूप में डालती हैं। यही कारण है कि आज जासूसी कहानियाँ अपना वजूद हो रही हैं। इसका एक कारण और भी है। किताबों की जगह मोबाइल एवं कप्यूटर-लैपटाप में पढ़ना पंसद करता है। आज पाठक किताबों की जगह मोबाइल एवं कप्यूटर लैपटाप में पढ़ना पंसद करता है। और जासूसी कहानी इस पद्धति को स्वीकार नहीं करती। जासूसी कहानियां जब तक पाठक पुस्तक के रूप में नहीं पढ़ेगा तब तक उसे पढ़ने का आनन्द आयेगा ही नहीं।

आज जरूरत है कि लेखक समाज अपने लेखन में जासूसी कहानियों को समावेश करें। अपनी कल्पना को ऊंचाई दे। लेकिन इसके लिए जरूरी होगा कि उसे जासूसी कहानियों को न सिर्फ पढ़ना होगा बल्कि जासूसी कहानी लेखन को समझना होगा। जासूसी लेखन अन्य विधा की कहानी की तरह 'मन में विचार आते गये और लेखनी चलती रही की तर्ज पर नहीं लिखा जा सकता। उसके लिए आपको घटनाक्रम तैयार करना होगा। एक अपराधी एवं एक जासूस की तरह सोचना होगा। अपराध लिखते समय अपराधी की तरह योजना बनानी होगी, उसे क्रियान्वित करना होगा और फिर अपनी लेखनी से न्याय करते हुए आपको उस घटनाक्रम तक एक सफल जासूस की तरह पहुँचना होगा।

अब आप यहां कहेगें कि हमारी ही अपराध और हमारी ही खोज तो दोनो में गोपनीयता कैसे रहेगी। तो यही जासूसी लेखक की सबसे बड़ी खाशियत होती है उसके शरीर का उसके दिमाग का, उसके दिल का, उसकी धड़कन का दो भाग हो जाता है। और एक भाग दूसरे भाग से मिल नही पाता, दोनो एक दूसरे के जानी-दुश्मन बने रहते हैं। इसके बावजूद जासूसी लेखन कहानीयों का लेखन बहुत कठिन नहीं है, बस जरूरत है तो आपके बुलंद इरादों की, आपकी सोच की ।

**अखंड प्रताप सिंह**
**प्रकाशक साहित्य सरोज**

# हमारी भी मांगें पूरी हो

आदरणीय सरकार जी,

नमस्ते, प्रणाम

आशा है कि आप कुशलतापूर्वक रहते हुए आज मतदाता दिवस पर विशेष कार्यक्रम कर के मतदाताओं को लुभाने-रूझाने और पूड़ी-पाड़ा खिलाने का काम कर रहे होगें।लेकिन बड़े दुःख के साथ हमें यह कहना पड़ रहा है कि आपका वो मतदाता, जो आपको सबसे अधिक सबसे अधिक प्यार करता है। जो आंधी-पानी, तूफान-सुनामी, सर्दी-बर्फबारी, लू-गर्मी की परवाह ना करते हुए भी आपके लिए मतदान करता है। गालियां सुनते हुए , जलील होते हुए भी भारत की अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा योगदान देता है। उसके लिए आप या आपकी सरकार कुछ नहीं करती। आप बेटी दिवस, पिता दिवस, मदर डे, डाक्टर डे, इंजिनियर डे, मजदूर डे और न जाने कौन-कौन डे मनाते हैं मगर इतने योगदान के बाद भी हमारे लिए कोई डे मतलब दिवस नहीं रखते और तो और आप सूखा डे मना कर हमें तड़पा देते हैं।

आप हमारे इतने योगदान के बाद भी हमारे लिए कोई योजना नहीं लाते कोई योजना नहीं बनाते , लेकिन हम कुछ नहीं कहते। बल्कि चुपचाप अपने गम गमनशी में मिला कर पी जाते हैं। हमें इस प्रकार रूसवा किये जाने से हमें बहुत दुख होता है। हमारी आत्मा रोती है। इस लिए आपसे निवेदन है कि आप और आपकी सरकार मिल कर हमारी आत्मा की शांति के लिए कुछ कार्य करे। योजनाएं बनाये। हमारे लिए भी दिवस घोषित करे। हमारी आपसे मांग है कि हमारी नौ-सूत्रिय मांगो पर विशेष ध्यान दें।

०१. हमें भी समाज में मान-सम्मान मिले इसके लिए अध्यादेश जारी हो।

०२. हर गांव, शहर, नगर में दो किलोमीटर पर हमारे लिए एक सुरक्षित स्थान का निर्माण हो जहां हमारे आवश्यकता की समस्त वस्तुएं आसानी से उपलब्ध हों।

०३. हमारे सेवा के लिए एक विशेष विभाग का गठन होना चाहिए जो आपात हालत में हमें खोज-खोज कर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाये।

०४. हम चूकि भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधारने में सर्वोच्च स्थान रखते हैं, हमें समाज में सर्वोच्च स्थान मिले, ऐसा आदेश पारित होना चाहिए।

०५. हमारे लिए सरकारों, संस्थाओं एवं अन्य कमेटीयों द्वारा सम्मान की व्यवस्था होनी चाहिए, समय-समय पर सम्मान मिलना चाहिए।

०६. हर शहर में जगह-जगह हमारे लिए हम आपकी सेवा में नाम का बूथ होना चाहिए, जहां हमें हमारे जरूरत की हर जानकारी मिल सके।

०७. हमें रोकने-टोकने और मना करने वालो पर सरकारी काम में बांधा पहुंचाने, देश के आर्थिक मदद को रोकने का मुकदमा दर्ज़ कर उसे तत्काल गिरफ्तार किया जाये और उस पर राष्ट्रदोह का मुकदमा भी चले।

०८. हमारे लिए भी एक पियक्कड़ संघ का निर्माण होना चाहिए और सरकार में उसके कई सदस्य होना चाहिए।

०९. प्रेमी-डे, प्रेमिका-डे , यह डे , वह डे की तर्ज पर हमारे लिए भी - प्रियक्कड़- डे घोषित हो।

सरकार जी हमें उम्मीद है कि मतदाता दिवस पर आप अपने इन विशेष मतदाताओं की मांग पर विशेष ध्यान देते हुए यथाशीघ्र मांग को पूरा करने की कृपा करें।
जल्द मिलेगें।

आपकी कृपा की प्रतिक्षा में
**आपका एक**
**महा पियक्कड़ मतदाता**
**अखंड गहमरी**
**9451647845**

# अदला बदली

**पुश्**तैनी जमीन पर ललन और कारू दोनों भाई अपने परिवार के साथ अपने-अपने हिस्से में रह रहे थे।भाईयों की आपस में कभी-कभार दो-चार बातें हो जाया करती परंतु दोनों की पत्नियां एक-दूसरे को फुटी आँख न सुहाती। अब तो एक नया बखेड़ा पैदा हो गया था जिससे आए दिन हुल-हुज्जत तय थी। पहले जमीन के आगे कच्चा रास्ता हुआ करता था। पर जबसे एन एच से जोड़े जाने की खबर उड़ी तबसे छोटे भाई कारू के घर अक्सर चिक-चिक होती रहती। सड़क बनने के क्रम में कुछ लोगों की जमीन उस हिस्से में पड़ रही थी। कारू की चार हाथ और ललन की कुछ ज्यादा ही। ज़ाहिर था सरकार के तरफ से पैसे भी उसी हिसाब से मिलना था। कारू की पत्नी को लग रहा था कि उसके साथ गलत हुआ है।ललन को पहले से ही मालूम था यह सब कि भविष्य में इधर से मुख्य मार्ग गुजरेगी, तभी उसने आसानी से हर बात मान ली। कारू तो हमेशा से शहर में रहता रहा था। उसे गाँव का कुछ खास अता-पता भी तो न था।

बार-बार उसके दिमाग में एक ही विचार कौंध रही थी आखिर कोई सामने की जगह छोड़कर तिरछा क्यूं लेना चाहेगा, जैसा कि ललन ने किया था।

गाँव वालों के सामने सर्वसम्मति से दो हिस्से हुए थे। ललन ने तो छोटे भाई की मर्जी पर ही छोड़ दिया। जिधर तुम्हें चाहिए वह ले लो। सबने ललन की दरियादिली पर भूरी-भूरी प्रशंसा भी की थी।"देखो!.आखिर ललन ने राम की मिसाल पेश कर दी। वरना कौन इस तरह किसी की मर्जी पर छोड़ता है आज के कलयुगी ज़माने में। कारू की पत्नी झट बोल पड़ी थी- "मुझे तो सामने का ही चाहिए"। चौकोर जमीन उसकी आंखों में तैर रही थी। ललन ने बस इतना ही कहा था- "भाई जमीन दो हिस्सों में बँटा है हमारे दिल नहीं बँटने चाहिए।"

उस समय कारू की पत्नी बहुत खुश थी पर आज वह अपने ही फैसले पर सर फोड़ रही थी। हर वक्त बुरा-भला कहती रहती। आज जो तुमने बात नहीं कि तो मेरा मरा मुंह देखना। अंतिम बार कह देती हूँ तुम्हें!..कारू को कहती, जाओ अपने बड़े भाई से कहो कि यह चार हाथ भी ले ले। हमें तो जान बूझ कर ठगा गया है। आज हमारे पास भी ज्यादा जमीन होती तो ज्यादा पैसे मिलते।"

वह भी चिढ़कर कह देता- भैया ने कोई जोर-जबरदस्ती नहीं दी थी। तुमने ही आगे बढ़कर कहा था जो चाहा वो मिला। ये उनका नसीब है कि उनकी जमीन रास्ते में जाएगी। मैं नहीं जाता कहने,तुम्हें जो करना है करो।" कारू किस मुंह से बड़े भाई को कहता-ललन ने उसे ही तो फैसले का अधिकार दिया था। कारू को अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। खुद ही तो आगे बढ़कर बोली थी और आज घर में कोहराम मचा रखा है।

दो दिन से खाना-पिना सब पर आफत छाई थी।बच्चे बाहर से कुछ-कुछ लाकर खा रहे थे।कारू भी कल सुबह जो गया देर शाम होने को आया ,वह घर नहीं लौटा था। न जाने क्यूँ ललन का मन बेचैन हो रहा था।खून के रिश्ते जब तक गाढ़े रहते हैं तो सुख-दुख का भी भान होता है। आज उसे कारू की चिंता सता रही थी।कुछ तो बात है।इतना सन्नाटा कि कोई आवाज भी नहीं। धड़कते दिल से बच्चों को आवाज लगाई।मालूम चला दो दिन से चुल्हा नहीं जल रहा ,खाना नहीं बन रहा है और कारू भी घर नहीं आया। अब तो यकीन पक्का हो गया था ।कुछ तो गड़बड़ है।पर क्या..?उसने टार्च उठाई और हर ठिकाने पर जा-जाकर ढूँढता रहा लोगों से पुछता रहा। किसी ने कारू को देखा है क्या..? कहीं कोई खबर नहीं ,मन में तरह-तरह के ख्याल हिलोरें मार रहे थे।आखिर गया तो कहाँ गया।तभी किसी ने बताया कि कारू को गाँव के बाहर बने देवस्थान के चबूतरे पर लेटे हुए देखा था।जहाँ कभी किसी खास मौके पर लोग जाते थे।

ललन दौड़कर उस ओर आवाज लगाया हुआ गया। "कारू !..ये क्या भाई,तू यहाँ क्यूँ लेटा है।बच्चों से मालूम चला कल सुबह ही घर से निकले हो तुम। ऐसा कोई करता है भला, दो-चार बातें पति-पत्नी में हो भी गई तो क्या हुआ। सब ठीक हो जाएगा। चलो मेरे साथ घर,गाँव वाले क्या कहेंगे..?"घर!..कौन सा घर भैया, जहाँ मेरे सर

पर तांडव करती है। सब तो उसका ही किया-धरा है फिर भी आए दिन झगड़ों से परेशान हो गया हूँ। घर में मैं सो नहीं पा रहा,यहां काफी अच्छी नींद आई।" "इस तरह की बहकी बातें मत करो ,चलो मेरे साथ।क्या बात है मुझे बताओ अगर मैं जान सकता हूँ तो। बच्चों से पुछना अच्छा नहीं लगा।तुम ही बता दो अब। मुझे बड़ा भाई मानते हो तो।" । "भैया!..मानूंगा क्यूँ नहीं,हमेशा मेरे लिए आप खड़े रहे।आपने कितने त्याग किए हैं मुझसे ज्यादा कौन जान सकता है। और वह बच्चों की तरह फुट-फुटकर रोने लगा। ललन कारू के सर पर हाथ फिराते हुए बोला-"बोल न,बात क्या है जो तुझे इतना परेशान कर रहा है।" "भैया वो कहती हैं कि वह चार हाथ जमीन भी आप ही ले लें जो सड़क बनने में जा रही है।आपकी ज्यादा गई है तो पैसे भी आपको ज्यादा मिलेगें। आपने जानबूझ कर पीछे की तरफ की जमीन ली थी। यही झगड़े की वजह है।"

"ठीक है! एक काम करो, अपनी-अपनी जगह बदल लेते हैं तब तो कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।तुम मेरे हिस्से और मैं तुम्हारे हिस्से। चलो चलकर घर में बात कर लो।""पर भैया,भाभी कुछ नहीं बोलेगी..?" "वो बाद में देख लेगें पहले अपनी पत्नी से बात तो करो। सब हल निकल जाएगा। कारू अपनी पत्नी के सामने यह प्रस्ताव रखता है। इसबार ललन की पत्नी ने भी कुछ बोलना चाहा पर सारी बात समझाने पर वह चुप ही रही।

इधर कारू अपनी पत्नी से सारी बात कहता है पहले तो वह सुनकर बहुत खुश हुई लेकिन जब दिमाग लगाया तो उसकी गणना उसे ठेंगा दिखाती मिली। ललन की जमीन हमेशा दबंगों की नजर में खटकती रहती पर ललन की भलमनसाहत और विनम्र स्वभाव उन्हें हर बार रोक लेती थी। सरकार ले रही थी तो एवज में पैसे भी दे रही थी। जिससे वह कहीं अन्य जमीन खरीद सकता था। यह बात कारू की पत्नी को पता था कि उसके स्वभाव के कारण उसकी गाँव में अच्छी छवि नहीं थी।कोई साथ भी नहीं देगा।आखिर उसने चुप रहना ही बेहतर समझा।कारू के पुछने पर उसने कहा -जो जिसे मिला वही ठीक है।मेरी चार हाथ तो चार हाथ ही सही।मुझे अदला-बदली नहीं करनी।अब दोनों भाईयों के चेहरे पर सुकून आ गई थी।

**सपना चन्द्रा**
**कहलगांव भागलपुर बिहार**
**9430451879**

## नाग के पड़े सुहार **कविता**

नाग के पड़े सुहार ,शीश गंग श्वेत हार,
मौलि चन्द्र केश मध्य, शुभ्र हो विराजते।
वाम अंग गौरि मातु, गोद में गणेश तात,

बैल पे चढ़े सुहात, शूल शंभु धारते।

मेटते कुअंक भाल, क्या करे जु वक्र काल,
हाथ फेर शंभु नाथ, भक्त को दुलारते।

कामना यही विशेष, चाहिए कृपा अशेष
छोड़ भोग मोक्ष आज, नाथ को पुकारते।

**अर्चना बाजपेई**
**हरदोझ उत्तर प्रदेश**

## ग़ज़ल

लगाने में बुझाने में शुबह से शाम करता हैद्य
कभी पानी कभी घी का गज़ब वो काम करता है।।

बुरी है मय मगर उसका जरा पीना पिलाना भी,
खुशी, गम के बड़े किस्से शहर में आम करता है।।

तवायफ ही बना डाली जरा सी जिंदगी उसने,
सुना जबसे जमाने में यहाँ सब दाम करता है।।

सियासी कम नहीं वो भी लगाके आग पानी में,
कहीं लाचार सा यारो पड़ा है राम करता है।।

अलग दुनिया नयी उसकी अलग है ढंग जीने का,
दिनो को रात रातों को छलकता जाम करता है।।

शुलगता खूब शोला सा वो इक सिगरेट के कस में,
धूआँ कर जिंदगी अपनी कजा के नाम करता है।।

उगाना चाहता तो है हथेली पर 'मृदुल' सरसों,
मगर गई जोश में कोशिश बड़ी नाकाम करता है।।

**मृदुल कुमार सह, महाराजपुर ,चिलावटी अलीगढ**

लेख

# राष्ट्र के सतत भविष्य का द्योतक हैं महिलाएं

नारी राष्ट्र का अभिमान है। नारी राष्ट्र की शान है। भारतीय परिवेश व परिधान की शोभा है नारी। नर से नारायण की कहावत को चरितार्थ करती है नारी। मानवता की मिशाल है नारी। महिला सशक्तिकरण से लैंगिक समानता का संचार होता है। महिला मानवता को धार देती है। नारी संघर्षों की कहानी है। प्यार और सम्मान की मूरत है नारी। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है समाज में महिलाओं के वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना अर्थात महिलाओं का शक्तिशाली होना। महिलाएं शक्तिशाली होंगी तो वह अपने जीवन से जुड़े प्रत्येक फैसले स्वयं ले सकती है। ऐसी महिलाएं परिवार और समाज को विकास की राह पर ले जाती हैं।

महिलाओं को दिए गए अधिकार महिला सशक्तिकरण का आधार है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार महिलाओं के विकास में निरंतर अग्रसर है। किसी ने क्या खूब कहा है - हर सफल इंसान के पीछे एक महिला का हाथ होता है, इसी प्रकार राष्ट्र निर्माण में एक नहीं बल्कि सैकड़ों महिला वैज्ञानिकों का सहयोग होता है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी, दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है। अतः उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए। राष्ट्र का गौरव है नारी सशक्तिकरण। अतएव हम कह सकते हैं कि सशक्त महिलाएं ही सशक्त देश का निर्माण करती हैं। लिंग समानता पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करती है, चाहे वह घर पर हो या शैक्षणिक संस्थानों में या कार्यस्थलों पर।

लैंगिक समानता राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समानता की गारंटी देती है। भारत में लैंगिक समानता के आधार पर महिलाओं को मिले ११ अधिकार इस प्रकार हैं-

१- समान मेहनताना का अधिकारः इक्वल रिम्यूनरेशन एक्ट में दर्ज प्रावधानों के मुताबिक सैलरी के मामलों में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते हैं। किसी कामकाजी महिला को पुरुष के बराबर सैलरी लेने का अधिकार है।

२- गरिमा और शालीनता का अधिकारः महिला को गरिमा और शालीनता से जीने का अधिकार मिला है। किसी मामले में अगर महिला आरोपी है, उसके साथ कोई मेडिकल परीक्षण हो रहा है तो यह काम किसी दूसरी महिला की मौजूदगी में ही होना चाहिए।

३- कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षाः भारतीय कानून के मुताबिक अगर किसी महिला के खिलाफ दफ्तर में शारीरिक उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न होता है, तो उसे शिकायत दर्ज करने का अधिकार है। इस कानून के तहत, महिला ३ महीने की अवधि के भीतर ब्रांच अहफिस में इंटरनल कंप्लेंट कमेटी (आई सी सी ) को लिखित शिकायत दे सकती है।

४ -घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकारः भारतीय संविधान की धारा ४९८ के अंतर्गत पत्नी, महिला लिव-इन पार्टनर या किसी घर में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार मिला है। पति, मेल लिव इन पार्टनर या रिश्तेदार अपने परिवार के महिलाओं के खिलाफ जुबानी, आर्थिक, जज्बाती या यौन हिंसा नहीं कर सकते। आरोपी को ३ साल गैर-जमानती कारावास की सजा हो सकती है या जुर्माना भरना पड़ सकता है।

५ -पहचान जाहिर नहीं करने का अधिकारः किसी महिला की निजता की सुरक्षा का अधिकार हमारे कानून में दर्ज है। अगर कोई महिला यौन उत्पीड़न का शिकार हुई है तो वह अकेले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज करा सकती है। किसी महिला पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में बयान दे सकती है।

६- मुफ्त कानूनी मदद का अधिकारः लीगल

सर्विसेज अथहरिटीज एक्ट के मुताबिक बलात्कार की शिकार महिला को मुफ्त कानूनी सलाह पाने का अधिकार है. लीगल सर्विस अथहरिटी की तरफ से किसी महिला का इंतजाम किया जाता है।

७- रात में महिला को नहीं कर सकते गिरफ्तारः किसी महिला आरोपी को सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं कर सकते। अपवाद में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के आदेश को रखा गया है। कानून यह भी कहता है कि किसी से अगर उसके घर में पूछताछ कर रहे हैं तो यह काम महिला कांस्टेबल या परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में होना चाहिए।

८- वर्चुअल शिकायत दर्ज करने का अधिकारः कोई भी महिला वर्चुअल तरीके से अपनी शिकायत दर्ज कर सकती है. इसमें वह ईमेल का सहारा ले सकती है।

महिला चाहे तो रजिस्टर्ड पोस्टल एड्रेस के साथ पुलिस थाने में चिट्ठी के जरिये अपनी शिकायत भेज सकती है। इसके बाद एसएचओ महिला के घर पर किसी कांस्टेबल को भेजेगा जो बयान दर्ज करेगा।

९-अशोभनीय भाषा का नहीं कर सकते इस्तेमालः किसी महिला (उसके रूप या शरीर के किसी अंग) को किसी भी तरह से अशोभनीय, अपमानजनक, या सार्वजनिक नैतिकता या नैतिकता को भ्रष्ट करने वाले रूप में प्रदर्शित नहीं कर सकते. ऐसा करना एक दंडनीय अपराध है।

१०- महिला का पीछा नहीं कर सकतेः आईपीसी की धारा ३५४ डी के तहत वैसे किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी जो किसी महिला का पीछे करे, बार-बार मना करने के बावजूद संपर्क करने की कोशिश करे या किसी भी इलेक्ट्रहनिक कम्युनिकेशन जैसे इंटरनेट, ईमेल के जरिये महनिटर करने की कोशिश करे।

११- जीरो एफआईआर का अधिकारः किसी महिला के खिलाफ अगर अपराध होता है तो वह किसी भी थाने में या कहीं से भी एफआईआर दर्ज करा सकती है. इसके लिए जरूरी नहीं कि कंप्लेंट उसी थाने में दर्ज हो जहां घटना हुई है. जीरो एफआईआर को बाद में उस थाने में भेज दिया जाएगा जहां अपराध हुआ हो। महिलाओं के साथ भेदभाव को समाप्त करने में अध्यात्म गहरी भूमिका निभाता है। हमारी संस्कृति में स्त्री का दर्जा पुरुष से कम नहीं माना गया है। मुगल आक्रमण से पहले स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा दिया जाता था। हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार ज्ञान की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी और शक्ति की देवी दुर्गा पूजा जाता है।

हमारे जीवन को अधिशासित करने वाले सत, रज और तम, इन तीन गुणों में सामंजस्य बनाए रखने के लिए हम देवी मां की ही प्रार्थना करते हैं। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। मनुस्मृति ३/५६ ।। जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। नारी जननी है। नारी नर का अभिमान है। नारी राष्ट्र के विकास की नींव है। नारी सृष्टि का अनमोल उपहार है । नारी से सृष्टि और सृष्टि से नारी है। नारी सशक्त बनेगी तो देश सशक्त बनेगा। नैतिक मूल्यों को अपनाने से ही नारी सशक्त बनेगी। वैदिक साहित्य में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के कारण नारी पूजनीय एवं वंदनीय थी। परंतु वर्तमान समय में नारियों का पाश्चात्य संस्कृति के कारण व्यसन, नशा विकृतियों में लिप्त होना आदि अवगुण नारी को अबला बनाता है। नारी जीवन में सदगुणों को अपनाकर फिर से देवत्व को प्राप्त हो सकती है। संस्कृति, संस्कार से बनती है। सभ्यता, नागरिकता से बनती है। नागरिकता मानव की पहचान है। नर और नारी दोनों मानव हैं। मानव ही किसी भी देश के नागरिक कहलाते हैं। नागरिक शब्द से नागरिकता का निर्माण हुआ। लैंगिक समानता किसी भी राष्ट्र के सतत भविष्य का द्योतक होता है। लैंगिक असमानता समाज के संतुलन व्यवस्था और विकास को प्रभावित करती है। समतामूलक समाज राष्ट्र को संतुलित करता है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता की पहचान उसके संतुलित समाज से ही होती है। अतएव हम कह सकते हैं कि लैंगिक समानता, समतामूलक समाज को स्थापित करता है।


**डॉ. शंकर सुवन सिंह**
**स्तम्भकार एवं शिक्षाविद**
**प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)**
**9369442448**

**"पहला सुख निरोगी काया"**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

# तकनीकी व पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता

**विशेष लेख**

**मा**ना जाता है कि जिस देश मे स्त्रियों का सम्मान होता है वह देश अधिक उन्नति करता है। भारतीय समाज में महिलाओं को देवी का दर्जा दिया जाता है लेकिन देवी का दर्जा देना ही काफी नही है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये नारी को सभी क्षेत्र में पुरुषों जितनी भागीदारी एवं समान अवसर भी देने होंगे।

नारियों के लिए आज की स्थिति फिर भी पहले से बेहतर है। लेकिन आज से कुछ वर्षो पहले किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की संख्या सिर्फ अंगुलियों पर गिनी जाने वाली थी। लेकिन अब समाज द्वारा वैश्विक स्तर पर सभी तरह के उद्यमों में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है। आज यह बात बिना किसी संदेह के साबित हो चुकी है कि कारोबार, तकनीकी, मीडिया, खेल या शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर और प्रोत्साहन मिलने पर महिलाओं की क्षमता अपने समकक्ष पुरुषों से कतई कम नहीं हैं। नारियों ने समय-समय पर इस बात को साबित भी किया है।

कुछ वर्षों पहले तक स्त्रियों को शिक्षा से तकनीकी(प्रौद्योगिकी) से दूर रखा जाता था यह बोलकर की यह उनकी समझ के कार्य नही है, जबकि ऐसा नही है, नारी यदि चाह ले तो ऐसा कोई भी कार्य नही है जो वह नही कर सकती। अगर पुराणों का भी अनुसरण करें तो उसमें भी यही पाएंगे कि नारी शक्ति से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड है। माता शक्ति से ही त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश है। देखा जाए तो नारी स्वयं एक तकनीकी है। वो जिसप्रकार अपने गर्भ में एक जीव का सृजन करती है, नौ माह तक अपने अंदर उसे पालती है। यह तकनीकी से कम नहीं है।

यह कई बार साबित हो चुका है कि महिलाएं वैज्ञानिक अनुसंधान करने और दुनिया को बदलने के लिए अपनी प्रतिभा का योगदान देने में पुरुषों से कम नहीं हैं। हमारे पास असंख्य उदाहरण हैं जो इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे हमने अपने-अपने क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं के योगदान के कारण वैज्ञानिक क्षेत्रों में अपने विचारों को बदल दिया है। खगोल विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो टेक्नोलाजी, भूगोल, पर्यावरण विज्ञान, नृजाति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, परमाणु अनुसंधान, कम्प्यूटर विज्ञान, मौसम विज्ञान, कृषि विज्ञान तथा इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में महिला वैज्ञानिको ने नित नये अनुसंधान कर अपनी बुद्धि व कौशल का लोहा मनवाया हैं। तमाम तरह की चुनौतियों के बावजूद इसरो में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबेल पुरस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपनी कला कौशल का प्रदर्शन किया है। चारदीवारी की कैद व सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर विज्ञान की दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने वाली कुछ महिला वैज्ञानिकों के नाम इस प्रकार हैं -

आनंदीबाई गोपालराव जोशी - इनका जन्म ३१ मार्च १८६५ को पुणे शहर में हुआ था। ये भारत की पहली महिला थीं जिन्होंने विदेश में डह्क्टर की डिग्री हासिल की, और भारत की पहली महिला फिजीशयन बनी। इनकी शादी महज ९ साल की उम्र में हो गई थी और १४ साल की उम्र में मां भी बन गई थीं, लेकिन इन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को दम तोड़ने नहीं दिया। किसी दवाई की कमी के कारण इनके बेटे की कम उम्र में ही मृत्यु हो गई। इस घटना ने इनके जीवन को बदलकर रख दिया और इन्हें दवाओं पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने वुमंस मेडिकल कह्लेज, पेंसिलवेनिया से पढ़ाई की। भारत लौटने के बाद इन्होंने चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी काम किया। जीवन में तमाम मुश्किलों के बावजूद उनका हौसला कभी डिगा नहीं। पर २६ फरवरी १८८७ में महज २२ साल की उम्र में बीमारी के चलते इनका निधन हो गया।

जानकी अम्मल - ४ नवंबर १८९७ को केरल में जन्मी जानकी अम्मल एक साइटोजेनेटिकिस्ट और वनस्पतिशास्त्र की वैज्ञानिक थीं। इन्होंने समाज द्वारा लगाए गए रूढ़िवादी नियमों को तोड़कर हजारों पौधों की प्रजातियों के गुणसूत्रों पर व्यापक अध्ययन व शोध करने में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इन्होंने गन्नों की हाइब्रिड प्रजाति की खोज की और क्रह्स ब्रीडिंग पर शोध किया था जिसे पूरी दुनिया में मान्यता मिली। इन्होंने ही चीनी को मीठा बनाने का कारण खोजा था। वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए साल १९५७ में इन्हें

पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। ७ फरवरी, १६८४ को इनका निधन हो गया।

कमल रणदिवे - जीव वैज्ञानिक कमल रणदिवे का जन्म १५ दिसंबर १६०५ को हुआ था। इनका मूल नाम कमल समर्थ था। इनको विज्ञान के प्रति लगाव पुणे के विख्यात फर्ग्युसन कहलेज में अपने प्रोफेसर पिता से विरासत में मिला था। देश में कैंसर के उपचार की व्यवस्था को शुरू करने में इनका अहम योगदान माना जाता है। अमेरिका के प्रतिष्ठित जहन हहपकिंस विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद वह भारतीय कैंसर शोध केंद्र से जुड़ गईं, जहां उन्होंने कोशिका कल्चर का अध्ययन किया। चूहों पर प्रयोग से उन्होंने उनकी एक ऐसी कैंसर प्रतिरोधी किस्म विकसित की। जिससे इन्हें कुष्ठ रोग का टीका विकसित करने की दिशा में कुछ अहम सुराग मिले। कुष्ठ रोग निवारण के क्षेत्र में काम के लिए ही इन्हें देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। कमल रणदिवे का योगदान केवल शोध और अनुसंधान तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने भारतीय महिला वैज्ञानिक संघ की स्थापना भी की, जिसने आने वाली पीढ़ी की महिलाओं में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार कर उन्हें इस क्षेत्र से जुड़ने के लिए अभिप्रेरित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ११ अगस्त १६७० को इनकी जीवनलीला समाप्त हो गई।

असीमा चटर्जी -कैंसर चिकित्सा, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास के लिये प्रसिद्ध असीमा चटर्जी का जन्म २३ सितंबर १६१७ को बंगाल में हुआ था। ये पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा डहक्टरेट अहफ साइंस की उपाधि दी गई थी। २००६ में ६० साल की उम्र में इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

अन्ना मणि - मौसम वैज्ञानिक के तौर पर मशहूर अन्ना मणि का जन्म २३ अगस्त १६१८ को केरल के त्रावणकोर में हुआ था। उस समय महिलाओं को विज्ञान पढ़ने या तथाकथित सामाजिक नियमों को तोड़ने की अनुमति नहीं थी। वह इन सभी नियमों को धता बताते हुए आगे बढ़ी और मौसम विज्ञान में अपना शोध शुरू किया। इन्होंने सौर विकिरण, ओजोन परत और वायु ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। वह भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (प्डक) की उप निदेशक बनीं। १६ अगस्त २००१ को इनका देहांत हो गया।

डॉ. दर्शन रंगनाथन - ४ जून १६४१ को जन्मीं दर्शन रंगनाथन ने जैव रसायन यानी बायो-केमिस्ट्री क्षेत्र में अहम योगदान दिया। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस कहलेज में व्याख्याता रहीं और रहयल कमीशन फहर द एक्जिबिशन से छात्रवृत्ति मिलने के बाद शोध के लिए अमेरिका गईं। भारत लौटकर उन्होंने सुब्रमण्या रंगनाथन से विवाह किया, जो आईआईटी, कानपुर में पढ़ाते थे। उन्होंने आईआईटी, कानपुर में ही अपने शोधकार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। लेकिन, तमाम गतिरोधों के कारण सफल नहीं हो सकीं। फिर भी, ये गतिरोध उन्हें प्रोटीन फोल्डिंग जैसे महत्वपूर्ण विषय में शोध करने से नहीं रोक सके। वह 'करंट हाईलाइट्स इन अहर्गेनिक केमिस्ट्री' नामक शोध पत्रिका के संपादन कार्य से भी जुड़ी रहीं। वह राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की फेलो भी रहीं। साथ ही, इंडियन इंस्टीट्यूट अहफ केमिकल टेक्नोलहजी, हैदराबाद की निदेशक भी रहीं। वर्ष २००१ में अपने जन्मदिवस के दिन ही उनका निधन हो गया।

रितु करिधल - भारत की राकेट महिला के रूप में मशहूर हो चुकी एयरोस्पेस इंजीनियर रितु करिधल मंगलयान प्रोजेक्ट की डिप्टी अहपरेशन डायरेक्टर रह चुकी हैं। ये भारत के सबसे महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान-२ की मिशन डायरेक्टर थीं। इन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डिग्री ली और १६६७ से इसरो से जुड़ गई। साल २००७ में पूर्व राष्ट्रपति डह. अब्दुल कलाम ने इन्हें इसरो के यंग साइंटिस्ट अहवार्ड से सम्मानित किया गया।

मुथैया वनिता - यह इसरो के इतिहास में पहला मौका था जब सबसे महत्वपूर्ण अंतग्रहीय मिशन का जिम्मा एक महिला वैज्ञानिक को दिया गया। बतौर प्रोजेक्ट डायरेक्टर मुथैया वनिता ने चंद्रयान-२ की योजना, प्रक्षेपण से लेकर लैंडिंग तक पूरी प्रकिया का नेतृत्व किया। इन्होंने मैपिंग के लिये इस्तेमाल होने वाले पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रह कार्टोसैट-१ और दूसरे महासागर अनुप्रयोग उपग्रह ओशनसैट-२ मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साल २००६ में ऐस्ट्रोनहटिकल सोसाइटी अहफ इंडिया ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और प्रतिष्ठित साइंस जर्नल 'नेचर' ने इनका नाम २०१६ की पाँच सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक की श्रेणी में रखा।

शकुंतला देवी - इनको भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जाना जाता है। इनमें कुछ ही सेकंड में जटिल से

जटिल गणितीय अहृपरेशन करने की उल्लेखनीय शक्ति थी। शकुंतला देवी के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। फिर भी वह ६ वर्ष की आयु से ही अपनी गणितीय क्षमताओं का प्रदर्शन करती रही। इन्होंने एक बार २०१ अंकों वाली एक संख्या के २३ वें मूल की गणना की। इन्होंने इसे मानसिक रूप से बिना किसी उपकरण या कलम का उपयोग किए किया और यह कार्य इन्होंने १९७७ के सबसे तेज कंप्यूटर न्छप्ट।ब से १२ सेकंड तेजी से किया।

टेसी थॉमस - १९६३ में जन्मी, इन्होंने मानक सामाजिक नियमों को तोड़ा और एक भारतीय मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करने वाली अग्रणी वैज्ञानिकों में से एक बन गईं। कल्पना कीजिए कि कैसे वह रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के एक पुरुष प्रधान वैज्ञानिक क्षेत्र में एक शानदार योगदानकर्ता बनने में कामयाब रही। वह इस तरह की एक महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली भारतीय वैज्ञानिक थीं, जिसने अब हमारे पास सैन्य शक्ति के स्तर को बढ़ा दिया है। वह अग्नि प्ट और ट मिसाइलों के विकास के लिए परियोजना निदेशक बनीं। यह एक ठोस ईंधन वाली अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल है जिसकी मारक क्षमता ५,५०० किलोमीटर होती है।

कल्पना चावला - भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के बारे में छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर कोई जानता है। कल्पना एक एरोनहृटिकल इंजीनियर थी और अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला। वह ३७६ घंटे ३४ मिनट तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने धरती के २५२ चक्कर लगाए थे। १ फरवरी २००३ को हुई अंतरिक्ष इतिहास की एक मनहूस दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई।

सुनीता विलियम्स - सुनीता विलियम्स अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के जरिये अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं। सुनीता विलियम्स ने एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में १९५ दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

ये सभी भारतीय मूल के नाम है और इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय महिलाओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसीप्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महिलाओं ने बहुत संघर्ष किया और अपने कार्य से अपनी एक अलग पहचान बनाई व पत्रकारिता को एक नई दिशा दी।

आज से कुछ वर्ष पहले तक मीडिया में महिलाओं के कुछ गिने-चुने नाम ही मुश्किल से याद आते हैं, क्योंकि मीडिया इंडस्ट्री में महिला पत्रकारों के सामने कई प्रकार की चुनौतियां रहीं है, क्योकि इस पुरुष प्रधान पेशे में महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता रहा। महिलाओं की प्रताड़ना, शोषण, अत्याचार के कई प्रकरण है जिसकी वजह से महिलाएं इस पेशे में आने से कतराती थी। महिलाओं का इस क्षेत्र में न कार्य न करने का एक कारण रात के समय कार्य करना भी रहा। पर आज मीडिया-जगत का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ महिलाएँ आत्मविश्वास और दक्षता से मोर्चा नहीं संभाल रही हो। विगत वर्षों में प्रिंट, इलेक्ट्रहृनिक और इंटरनेट पत्रकारिता की दुनिया में महिला स्वर प्रखरता से उभर रहा है।

इस जगमगाहट का एक अहम कारण यह है कि पत्रकारिता के लिए जिस वांछित संवेदनशीलता की जरुरत होती है वह महिलाओं में नैसर्गिक रूप से पाई जाती है। पत्रकारिता में एक विशिष्ट किस्म की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है और समानांतर रूप से कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त करने की भी। संवाद और संवेदना के सुनियोजित सम्मिश्रण का नाम ही सुन्दर पत्रकारिता है। महिलाओं में संवाद के स्तर पर स्वयं को अभिव्यक्त करने का गुण भी पुरुषों की तुलना में अधिक बेहतर होता है। यही वजह रही है कि मीडिया में महिलाओं का गरिमामयी वर्चस्व बढ़ा है।

संवेदना के स्तर पर जब तक वंचितों की आह, पुकार और जरुरत एक पत्रकार को विचलित नहीं करती उसकी लेखनी में गहनता नहीं आ सकती। लेकिन महज संवेदनशील होकर पत्रकारिता नहीं की जा सकती क्योंकि इससे भी अधिक अहम है उस आह या पुकार को दृढ़तापूर्वक एक मंच प्रदान करना। यहाँ जिस सुयोग्य संतुलन की दरकार है वह भी निःसंदेह महिलाओं में निहित होती है, जिसे वैज्ञानिक भी प्रमाणित कर चुके हैं। इसके साथ ही पत्रकार में गहन अवलोकन क्षमता और पैनी दृष्टि होनी चाहिए, जोकि महिलाओं में कूट-कूट कर भरी होती है। क्योंकि, जिस बारीकी से वह बाल की खाल निकाल सकती है वह सिर्फ उन्हीं के बस की बात है। महिला पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान करने वाली ऐसी ही

कुछ चुनिंदा महिला पत्रकारों के नाम इस प्रकार है –

विद्या मुंशी-विद्या मुंशी को भारत की पहली महिला पत्रकार माना जाता है। मुंबई में जन्मी विद्या ने अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में कार्य किया। १९५२-६२ के बीच वे रूसी करंजिया के चर्चित अखबार ब्लिट्ज़ की कलकत्ता संवाददाता रहीं। उन्होंने उस वक्त सरकार की नीतियों पर प्रभावी लेखन किया। खोजी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने स्मगलिंग, अवैध उत्खनन के कई स्कूप उजागर किए।

विमला पाटिल – भारतीय महिला पत्रकारों में इनका नाम सम्मान से लिया जाता है। संभवतः ये पहली महिला थी जिन्होंने द टेलीग्राफ से जुड़कर लेखिका, स्तंभकार और पत्रकार के तौर पर अपना करियर शुरू किया। १९५९ से १९९३ तक वे लगातार संपादक और महत्वपूर्ण पदों पर रहीं। उन्होंने टाइम्स ग्रुप की पत्रिका फेमिना को भी एक ब्रांड के तौर पर स्थापित किया।

प्रभा दत्त – ये १९६५ के भारत-पाक यद्ध में कवरेज करने वाली प्रथम महिला थी। ये अंग्रेजी अखबार हिंदुस्तान टाइम्स के लिए कार्य करती थी। इनकी बेटी बरखा दत्त आज के समय की एक जानी मानी एनडीटीवी चैनल रिपोर्टर व एंकर है, जोकि कारगिल युद्ध की कवरेज करने के लिए बहुत प्रसिद्ध हुई।

नीरजा चौधरी – ये आज भी महिला पत्रकारिता में एक मिसाल के तौर पर कार्य कर रही हैं। इन्होंने ६० के दशक में मुंबई के हिम्मत अखबार से अपनी यात्रा शुरू की। इन्होंने स्वयं को एक राजनैतिक पत्रकार के तौर पर स्थापित किया। ये आज दिल्ली में स्थित महिलाओं के प्रेस क्लब से जुड़ी है। देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख छपते है।

मृणाल पाण्डे – इन्होंने उस वक्त सम्पादक की कुर्सी सम्भाली जब इस पेशे में महिलाओं का औसत बिल्कुल नगण्य था। इन्होंने उस वक्त के प्रतिष्ठित दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्र हिंदुस्तान के संपादकीय दायित्व को निभाया। इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कई कीर्तिमान रचे। ये २००८ में पीटीआई बोर्ड की सदस्य बनी और बाद में प्रसार भारती की चैयरपर्सन भी रहीं।

चित्रा सुब्रमण्यम-: ये एक प्रभावशाली व्यक्तित्व है जिन्होंने अपनी खोजी पत्रकारिता से पत्रकारिता में महिला प्रभुत्व को स्थापित कर दिया। चित्रा सुब्रमण्यम ने जनसंचार में डिग्री-डिप्लोमा हासिल कर इंडिया टुडे में कार्य किया। द हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस, स्टेट्समैन से जुड़कर इन्होंने बोफोर्स कांड(तोपों की खरीदी में अवैध तरीके से भुगतान का मामला) को उजागर किया। यह भारतीय राजनीति का चर्चित स्कैण्डल रहा।

मधु त्रेहान -: ये भारत की प्रख्यात महिला पत्रकार हैं जिन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में मास्टर डिग्री लेने के बाद १९७५ में इंडिया टुडे के अंग्रेजी संस्करण की नींव रखी। वे इसकी संस्थापक संपादक रही। १९८६ में इन्होंने न्यूट्रेक नाम की पहली वीडियो मैगज़ीन की शुरुआत कर पत्रकारिता के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। वे आज भी आउटलुक, हिंदुस्तान टाइम्स सहित अन्य स्थानों पर सक्रिय लेखन कर रही है।

इसके अतिरिक्त मालिनी पार्थसारथी द हिन्दू की मुख्य संपादक रही, आरती जेरथ टाइम्स अहफ इंडिया में महत्वपूर्ण पद पर रहीं। कादंबरी मुरली स्पोर्ट्स इलेस्ट्रेट में खेल संपादक के तौर पर तो शोभा चौधरी तहलका की प्रबंध संपादक का दायित्व संभालती है। शोभा डे, वर्तिका नंदा, शारदा उगरा, सागरिका घोष, भाषा सिंह, क्षिप्रा माथुर, स्मिता मिश्र, उपमिता वाजपेयी जैसी महिलाएं पत्रकारिता के मोर्चे पर डटीं हैं। इलेक्ट्रहनिक मीडिया में नीलम शर्मा, निधि कुलपति, ऋचा अनिरुध्द, मीमांसा मालिक, अनुराधा प्रसाद, श्वेता सिंह, अंजना ओम कश्यप, नेहा पंत, कादम्बिनी शर्मा सहित अनेकों नाम है, जिन्होंने अपनी अलग छाप छोड़ी है।

**सोनल मंजू श्री ओमर**
**राजकोट, गुजरात**

**"पहला सुख निरोगी काया"**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

**कहानी**

# पैसे की कीमत

बात आज़ादी के तुरंत बाद की हैं। एक क़स्बे में दो घनिष्ठ मित्र रहते थे। एक धनी था, एक इतना धनी नहीं था । रोज़ाना कमाना और गुजर बसर करना, पर दोस्ती की लोग मिसाल दिया करते थे। दोनों दोस्त अपने-अपने माँ बाप की इकलौती संतान थे। एक दिन दोनों दोस्त साथ-साथ अपने-अपने घरों को जा रहे थे, विदा लेते समय निर्धन दोस्त ने अपने दोस्त से १० रुपये उधार माँगे, धनी दोस्त ने देर नहीं की देने में और बोला कुछ और चाहिए तो बता। नहीं-नहीं मुझे तो बस १० रुपये ही चाहिए।

अगले दिन धनी दोस्त अपने दोस्त का इंतज़ार करता रहा, सुबह से दोपहर हो गईं, आपस में नहीं मिले चिंता होने लगी। बहुत इंतज़ार करने के बाद धनी दोस्त अपने दोस्त को देखने उसके घर की ओर चल दिया। घर पर ताला लगा था। पड़ोसियों से पूछा सब ने मना कर दिया हमें कुछ नहीं बता कर गया हैं। हाँ सुबह क़रीब ४ बजे कुछ हलचल तो थी। धनी दोस्त सोच में पड़ गया आख़िर बिना बताये कहाँ चला गया।

हर रिश्तेदार के यहाँ पता लगाया पर कुछ पता न चला, समय बीतता रहा। धनी दोस्त कुछ समय के लिए तो परेशान रहा,कुछ समय बाद शादी हो गई बच्चे हो गये,अपने काम में व्यस्त रहने लगा। जब भी समय मिलता रिश्तेदारों से पूछताछ करता रहता था पर पता न चला। क़रीब २५ साल बाद धनी सेठ को अपने व्यापार के लिए लखनऊ जाना हुआ, काम के कारण सेठ को क़रीब एक सप्ताह रुकना था। सेठ सोचने लगे क्यों न शहर भी घूम लिया जाये।

एक दिन दोपहरी का खाना खाने एक होटल में रुका ।ग़रीब दोस्त अपने धनी दोस्त को पहचान गया,जैसे ही सेठ खाना खाने के बाद पैसे देने के लिए काउंटर पर आया,दोस्त ने पैसे लेने से मना कर दिया। धनी दोस्त के पैर पकड़ कर ज़ोर- ज़ोर से रोने लगा और कहने लगा मैं तुझे वो १० रुपये नहीं दूँगा। जैसे ही धनी दोस्त ने ये सुना तुरंत गले से लगा लिया, दोनों दोस्त गले लग कर आपस में बहुत रोये। धनी दोस्त रोते हुए बोला पगले मैं तेरे से १० रुपये लेने नहीं आया हूँ। मैं तेरे से बहुत नाराज़ हूँ बिना बतायें यहाँ आ गया।

मुझे पता हैं पर मैं क्या करता? इसके लिए मुझे माफ़ कर दें पर ईश्वर ने हमें फिर से आज मिलवा दिया। आपस में बहुत बातें हुई अपने दोस्त को घर ले गया और अपने बच्चों से मिलवाया, अपने बेटे से बोला जा अपने ताऊ का सामान उस होटल से ले आ जिसमें ठहरें हुए हैं,रात का खाना खाने के बाद,सब बैठ कर बातें कर रहे थे, ग़रीब दोस्त ने अपने बचपन के दोस्त के बारे में बताया और मैंने १० रुपये उधार लेकर बिना बतायें अपने माँ बाप को लेकर मैं यहाँ आ गया,उन १० रुपयों से मैंने चाट की रेहड़ी लगाई मेहनत की, आज एक होटल हैं और ये एक मकान। मुझे पता हैं उन १० रुपयों की क़ीमत आज मैं जो भी हूँ उन १० रुपयों की वजह से हूँ,मुझे पता हैं "पैसे की क़ीमत", और हाँ वो १० रुपये मैं वापस नहीं करूँगा। परिवार में आपस में आना जाना शुरू हो गया,सबको पता चल गया दो बिछड़े दोस्त दुबारा से मिल गये हैं। लखनऊ वाला दोस्त बोला जो हमारा पुश्तैनी मकान हैं वो मैं तेरे नाम करता हूँ,एक दिन आकर सब से मिल भी लूँगा और मकान के कागज तेरे को दें दूँगा।

**पीयूष गोयल**
**आदर्श नगर, दादरी**
**( उ.प्र.)**

**"पहला सुख निरोगी काया"**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

# "बेदर्द दिल"

अभी १८ साल उम्र भी पूरी नहीं किया था कि खेल कोटे से सीमा सड़क संगठन में सिपाही के पद पर तेजपुर असम में नौकरी लग गई। पूरा परिवार खुशियों से झूम गया। अभी नौकरी करते दो साल भी नहीं बीता कि रिश्तेदारों ने विवाह के लिए परेशान कर दिया। अन्त में पिता जी ने आनन-फानन में विवाह कर दिया। पत्नी के रूप में न सिर्फ सुन्दर बल्कि सुशील पत्नी पाकर मैं खुशियों से झूम गया।

पहाड़ी इलाके में नौकरी के कारण मैं परिवार अपने साथ नहीं रख सकता था। नई शादी पत्नी दूर गुस्सा तो आता था, लेकिन किया भी क्या जा सकता था। जिन्दगी की गाड़ी चलने लगी। मन तो बहुत करता कि पत्नी को साथ लेकर घूमा-फिरा जाये लेकिन परिवार में अभी के इतना खुलापन नहीं था इस लिए यह संभव नहीं हो पा रहा था। सोचा चलों बाद में यह सपना भी पूरा किया जायेगा। समय के साथ साथ मैनें अपना परिवार मुजफ्फरपुर से दिल्ली परिवार को सिफ्ट कर दिया।

समय के साथ-साथ मेरे आंगन में दो फूल खिले। बच्चों की पढ़ाई एवं परिवारिक जिम्मेदारीयों के कारण हम दोनो कहीं घूम नहीं सके। सोचा चलो बच्चे कुछ बड़े हो जाये तो साथ-साथ घूमेंगें। बच्चे बड़े हो गये। उनका विवाह हो गया, बेटा और बेटी दोनो दुबई में सिफ्ट हो गये। अब भी घूमने और जिन्दगी का मज़ा लेने का अवसर नहीं मिला। अब कारण घर किसके बल पर छोड़े।

मैं तो नौकरी में कभी पाकिस्तान बार्डर, तो कभी चाइना बार्डर, कभी पहाड़ो में तो कभी जंगलों में घूमता रहा। धीरे-धीरे नौकरी के ३८ साल और उम्र का ५८ साल पूरा हो गया। मगर पत्नी को घुमाने का सपना अधूरा रह गया। फरवरी २०२४ में घर में शादी पड़ी। पूरा परिवार जमा हुआ। बच्चे भी विदेश से आये। मैं भी अपने युनिट से अवकाश लेकर दिल्ली पहुँचा। शादी संम्पन हुई और सभी मेहमान रूकसत हो गये। बच्चों भी विदेश चले गये।

हिम्मत कर हमने सोचा कि चलों कम से कम पत्नी को रामलला के दर्शन करा दें और लगे हाथ तेजपुर ही घुमा दें, कुछ दिन साथ-साथ रहेगें। १८ फरवरी २०२४ को दिल्ली से पहली बार आखिर हम दोनो कार से तेजपुर असम के लिए निकले। कार भी खुश थी। आखिर आज उसकी भी चाहत पूरी होने को थी। ड्राइविंग सीट पर ड्राइव कर रहे दिलवर की दिलरूवा आज पहली बार लम्बें सफर पर उसकी बायीं सीट पर जो बैठी थी।

आज इनके बीच कोई न था। न मानव, न जिम्मेदारी, न कर्तव्य न समस्या। थी तो बस एक होती दिल की धड़कन, सपने, चाहत।

दिल्ली से अयोध्या आकर रामलला के दर्शन किये। और अगले दिन फिर चल पड़े अपने अलगे पड़ाव की तरफ। शाम तक हम मुजफ्फरपुर पहुँच गये। घर, ससुराल एवं साली का आवास सब आसपास थे। साली साहिबा मुझ पर कुछ विशेष मेहरबान थी। जम कर खिलाया पिलाया। रात में मुझे कुछ बेचैनी और सीना भारी महसूस हुआ। मैनें गैस समझकर टाल दिया। सुबह बुखार भी महसूस किया। परन्तु एक टेबलेट बुखार को चलता किया। मैनें सोचा नानवेज भोजन एवं लम्बा ड्राइव इसका कारण होगा।

तीन दिन रूकने के बाद हम दोनो चल पड़े तेजपुर की तरफ। मगर गाड़ी चलाते समय सीने में भारीपन महसूस करता रहा। युनिट पहुँच कर श्रीमती जी की सलाह पर हास्पीटल पहुँचा। डाक्टर ने कुछ टेस्ट किया और अपने दोस्तों को बुलाने को कहा। जब सब आ गये तो उसने एक बम फोड़ा। बताया कि आपको एडमिट होना पड़ेगा। आपको दिल का दौरा पड़ा है। इतना सुनते ही हमारे तो होश उड़ गये।

कहां तो हम अपनी दिलरूबा के साथ जीवन की खुशियां बाटने निकले थे, लेकिन बेदर्द दिल ने यहां धोखा दे दिया। हम पहाड़ो की सैर छोड़ कर अपनी दिलरूवा के साथ दिल के इलाज के लिए फिर उसी शहर में चल दिये जहां से वर्षो बाद अपने दिल को बहलाने निकले थे। शायद हमारे ही दिल को हमारी खुशियां देखी नहीं गई। हम बस इतना ही कह पाये वाह रे! "बेदर्द दिल"।

**अखंड गहमरी**
**9451647845**

**26 फरवरी को डिब्रुगढ़ राजधानी में मिले एक सहयात्री संजय चौधरी जी के जीवन पर आधारित सच्ची कहानी**

लेख

# 55 साल की हुई राजधानी

**आज** से 55 वर्ष पूर्व 3 मार्च 1969 को भारतीय रेलवे ने इतिहास रचते हुए देश की राजधानी दिल्ली से पश्चिम बंगाल की राजधानी हाबड़ा के बीच दक्षिण एशिया की पहली तीव्र गति की पूर्ण वातानुकूलित एक लक्जरी ट्रेन का परिचालन शुरू किया। 1969 में आलीशान लक्जरी और सबसे तेज भागने वाली पूर्ण वातानुकूलित ट्रेन जिसने पहली बार 17 घंटे 20 के रिकार्ड समय में 1450 किलोमीटर का अपने पहले फेरे सफर तय किया । शुरुआत में वैक्यूम ब्रेक से परिपूर्ण इस ट्रेन में दो पावर कार, 5 एसी चेयर कार, एक एसी डायनिंग कार और एक एसी प्रथम श्रेणी के कोच समेत कुछ 9 कोच थे। ट्रेन में न सिर्फ आधुनिक कोच लगे हुए थे बल्कि सभी को बिस्तर, कंबल, तकिया, पत्रिका हिन्दी व अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषा के समाचार पत्र, पानी, नास्ता एवं भोजन भी दिया जाता था।

आधुनिक कोचों से सजी यह ट्रेन आम आदमीयों के पहुँच से भले दूर थी लेकिन भारत के ट्रेनों के इतिहास में एक विशेष महत्व रखती थी। यह ट्रेन भारत के हर राज्य की राजधानी से देश की राजधानी दिल्ली को जोड़ने एवं सफर का समय कम करने के उद्वेश्य से चलाई गयी थी। इस ट्रेन को चलाने का मुख्य कारण यह भी था कि राज्यों में तैनात अधिकारी, व्यापारी, समाजसेवी देश की राजधानी से जुड़ कर विकास एवं बाजार व्यवस्था में तेजी लाये। राजधानी ट्रेन में चलने वाले महत्वपूर्ण लोगों एवं इसकी तीव्रगति के कारण इसके गुजरने से पहले ही स्टेशनों पर तैनात कर्मचारी पूरी तरह से सर्तक हो जाते थे। आम ट्रेनों को मुख्य पटरी से हटा कर लूप में खड़ा कर दिया जाता था। एक मिनट की देरी होने पर रेलमंत्रालय एक्शन में आ जाता था। लगभग 50 सालों तक यह ट्रेन भारत की मुख्य ट्रेन रही। भोजन व्यवस्था से लेकर कोचों की साफ-सफाई, कोचों की स्थिति, यात्रीयों की सुविधा विशेष स्तर की होती थी। पूरी ट्रेन नये एवं आधुनिक कोचों से विशेष से रूप से धजी रहती थी।

आज भारत में कुल 20 जोड़ी राजधानी ट्रनों का परिचालन हो रहा है। नई दिल्ली को अहमदाबाद, बंगलोर, भुवनेश्वर, बिलसपुर, चेन्न , गुवाहाटी/डिब्रूगढ, राँची, कोलकाता, जम्मू, मुंबई, पटना, सिकंदराबाद तथा त्रिवेंद्रम से जोड़ती है। राजधानी एक्सप्रेस की यह खासियत रही है कि यह न सिर्फ आम एक्सप्रेस ट्रेनों की जगह अपने गंतव्य पर पहुँचने में काफी कम समय लेती है बल्कि इसका ठहराव भी आम मेल एक्सप्रेस ट्रेनों की जगह काफी कम रहता है।

भारत में सबसे अधिक दूरी तय करने वाली त्रिवेंद्रम राजधानी एक्सप्रेस है जो अपने 2842 किलोमीटर के सफ़र को 41 मिनट 19 मिनट में पूरी करती है बल्कि इसका पहला स्टापेज 400 किलोमीटर के बाद आता है। इसके साथ भारत की सबसे छोटी राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली-जम्मूतवी राजधानी एक्सप्रेस है जो मात्र 576 किलोमीटर का सफर तय करती है जिसके लिए वह 8 घंटे 20 मिनट

का समय लेती है।

विशेष कोच लगे होने और रेलवे के अनुभवी चालक एवं परिचालकों के होने के कारण राजधानी एक्सप्रेस में दुर्घटना में काफी कमी रहती है। राजधानी एक्सप्रेस के 55 सालों के इतिहास में एक हादसा ऐसा है जिसे कोई भूल नहीं पायेगा। 09 सितम्बर 2002 को दिल्ली-हाबड़ा राजधानी एक्सप्रेस 10 बजकर 40 मिनट पर रफीगंज रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर आगे बढ़ी और धावा नदी पुल के पास पहुंची, तभी अचानक एक जोरदार धमाका होता है । रेल का इंजन तो पुल पार कर गया था लेकिन 13 बोगियां दुर्घटनाग्रस्त हो गई । हादसा इतना भयानक था कि जो रेलवे की पैंट्री कार थी, वो टुकड़ों में बदल गई थी। यात्रीयों के शव तक की पहचान मुश्किल  थी। बोगियां एक-दूसरे से टकराने से ऐसी टूट गई कि उसमें से शव को निकलना भी परेशानी भरा था। इस हादसे में 134 लोगों की जान चली गई और 250 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हुए ।

इसके साथ 25 जून 2014 को फिर एक बार राजधानी एक्सप्रेस हादसे का शिकार बनी। दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस सारण जिले के पास हादसे का शिकार बन गई। ट्रेन की दर्जन भर बोगियां पटरी से नीचे उतर गयी और इस हादसे में करीब 4 लोगों की मौत और दर्जनों यात्री जख्मी हो गये ।

वक्त के साथ-साथ चलते हुए भले अभी भी राजधानी एक्सप्रेस भारतीय रेल की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था है लेकिन यात्री सुविधा, कोचों की हालत दिन प्रतिदिन औसत से भी नीचे आ रही है। राजधानी का भी नीजी करण करते हुए राजधानी के नाम के साथ तेजस जोड़ कर यात्रीयों की सुविधा को बढ़ाने का प्रयास किया गया। लेकिन यह व्यवस्था भी राजधानी की हालत सुधार नहीं पाई ।

आज राजधानी एक्सप्रेस में नये और सुविधा जनक कोचों की जगह आम कोच लगाये जा रहे हैं। पानी की कमी, शौचालयों एवं कोचों की सफाई, यात्रीयों को मिलने वाले तकिये, कंबल, चादर की सफाई औसत दर्जे से भी कम हो गई है। यात्रीयों के सुरक्षा के नाम पर ट्रेन में दो-तीन वर्दीधारी तैनात रहते है। यात्रीयों के प्रयोग किये गये बिस्तरों का बंडल बना कर उन्हें गेट पर दरवाजे को जाम कर दिया जाता है। भोजन एवं नास्ते की ट्रेनों में आपको कभी किसी अच्छी कम्पनी के बिस्किट, नमकीन, नहीं मिलेगें। चाय के दूध, चाय पत्ती तो ऐसी कम्पनीयों के दिये जाते है जो बाजार में ढूढ़ने पर आपको कही नहीं मिलेगें। ट्रेन के पेंटिकार में भोजन अब कम ही बनता। भोजन-नास्ता रिमोट लोकेशनों के स्टेशनों पर बाहर से मंगाया जाता है। जिसकी शुद्वता एवं ताजेपन पर हमेशा सवाल उठता है।नानवेज भोजन में मिलने वाले की प्लेट में आप चिकन ढूढ़ते रह जायेगें। भोजन की मात्रा भी इतनी कि शायद आपके भूख का कुछ प्रतिशत ही मिट पाये। स्वाद तो ऐसा कि आप पूरा भोजन कर ही नहीं पायेगें। आये दिन यात्रीयों द्वारा कोच के अटेन्डेंटों द्वारा बत्तमीजी की शिकायत आती रही है।

राजधानी एक्सप्रेस भारत के रेल इतिहास में एक नया अध्याय लिख चुकी है। भले ही वन्देभारत, तेजस, शताब्दी जैसे ट्रेनें आज रेलयाता का हिस्सा है लेकिन राजधानी का रूतवा अभी भी वैसा है जैसा 55 सालों पूर्व था। बस आवश्यकता रेलवे को पुनः विचार करते हुए इसकी व्यवस्था, इसके कोचों, इसके खान-पान को अपग्रेड करने की ताकि वर्षो पूर्व बनाये गये इतिहास को आज भी कायम रख सकें।

**साहित्य सरोज**

# फटे जूते

संस्मरण

मुझे याद है उसे समय मेरे घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। पिताजी के पास आय का कोई साधन नहीं था। वह अक्सर ठेला में भजिया पकौड़ी की दुकान खोल रखे थे। जिसमें दो वक्त की रोटी आना मुश्किल होता था। जिसकी वजह से माँ पिताजी के बीच अलगाव की स्थिति आ जाती थी। न जाने कब माता-पिता अलग हो गए। लेकिन मेरी मां ने संघर्ष करके मेरी पढ़ाई के लिए पैसे जुटाना शुरू कर दी थी, इसलिए मुझे पैसे का महत्व मालूम था। बात उन दिनों की है जब मेरे पास एक जोड़ी जूता था जो ज्यादा इस्तेमाल करने की वजह से जगह-जगह से फट गया था। आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण मैंने कभी नए जूतों की मांग नहीं की। अक्सर मैं अपने जूतों को पालिश मार कर पहन लिया करती थी ताकि वो नये दिखने लगे।जब बरसात आती है तो मुझे स्कूल की वो बात अक्सर याद आती है।

मैं जब भी स्कूल जाती थी तो अपने संगठन में सबसे लंबी मैं ही थी, इसलिए सहेलियों के साथ सड़कों में कदम मिलाकर नहीं चलती थी उनसे हटकर चलती थी। मेरे लिए बरसात में अक्सर पैदल चलना सबसे बड़ी मुसीबत था, क्योंकि मेरे जूते फटे हुए होते थे। जिसके कारण बरसात का पानी उसमें भर जाता था। जिसकी वजह से बड़ी परेशानी झेलनी पड़ती थी मुझे रास्तों में और उससे ज्यादा मुझे रोना आ जाता था कि दूसरे दिन जूते पहन कर स्कूल कैसे जाऊँगी? क्योंकि दो जोड़ी जूते नहीं थे मेरे पास और मैं दूसरे के जूते पहन नहीं सकती थी, मेरे पैर बड़े होने की वजह से साइज की दिक्कत आती थी।

मैं अक्सर घर जाकर उन्हीं जूतों को पहले साफ पानी से धोती थी। फिर जितने अखबार होते थे उन्हें उसके अंदर भर देती थी, ताकि जूते जल्दी सूख जाए और मैं उसे दूसरे दिन फिर पहन पाऊँ।मुझे जूतों ने ये जरूर सिखाया था समस्या का हल निकलता जरूर है बस दिमाग लगाने की जरूरत है। स्कूल में जूतों को लेकर टीचर अक्सर शिकायत करती थी। दूसरे जूते खरीदने पर जोर देती थी। पर उन्हें कैसे बताती मैं कि इतना आसान नहीं था मेरे लिए नए जूते खरीदना। मेरे ग्रुप मे पांच सहेलियाँ थी वो लोग अक्सर हमारे लिए सोचती थी। उनमे से एक क्लास की मानीटर थी। उसने मेरे लिए सालाना मिलने वाली स्कूल सुविधाओं में मेरे लिए नए जूते की मांग की थी। जब नए जूते मेरे हाथ आए तो थोड़ा रोना भी आया, लेकिन मैं अपनी उस सहेली भावुक हो कर को गले लगा ली। उसने जो मेरे लिए की थी उस के लिए जान हाजिर थी।अब तो सब सहेलियाँ बिछड़ गई वो भी नहीं मिली आज तक। लेकिन उसका किया ये एक काम मुझे याद आता है तो उसे दिल से याद करती हूं। लेकिन एक बात जरूर है संघर्षमय जीवन में उन फटे जूतों से समस्या के समाधान का महत्व मुझे समझ में आ गया।

**पूजा गुप्ता**
**मिर्जापुर**

## बसंत ऋतु

फिर से आया माघ महीना,
फिर आया ऋतुराज बसंत।
गंध बिखेरें उपवन उपवन,
रंग बिरंगे पुष्प अनंत।

फूल रही है पीली सरसों,
झूम रही है डाली डाली।
झूम रहे रस पीकर भंवरे,
कूक रही है कोयल काली।

रंग बिरंगी तितली घूमें,
फूल खिलें हैं क्यारी क्यारी।
हरियाली अपने यौवन पर,
हर बगिया लगती है प्यारी।

**विनय बंसल,आगरा**

# ये कहां आ गये हम



जब आज दोनों मिले तो न जाने कैसा जुनून सवार था दोनों पर । आखिर दोनों ने अपनी-अपनी प्रेमिकाओं को मंहगी डायमण्ड रिंग देने का वादा जो कर लिया था । मंहगी गिफ्ट देने के साथ ही किसी फाइव स्टार होटल में डिनर और नाईट शो का प्लान बना चुके थे । जबसे हरीश ने कॉलेज ज्वाईन किया पता नहीं कब वो प्रकाश का दोस्त बन गया । प्रकाश जो उसे पहले ही दिन दोस्ती के बहाने शहर के हुक्का बार में ले गया था । हरीश वहां कॉलेज की अन्य लड़कियों को लड़कों के साथ हुक्का पीते देख हतप्रभ रह गया था । एक बार तो उसे डर लगा था कि कहीं उसे पुलिस न पकड़ ले, कहीं घर वालों को पता न चल जाये । मगर प्रकाश ने उसे विश्वास दिलाया था- "खंमखां में डरता है । कैसा मर्द है यार...? देख लड़कियां भी क्या मज़े से हुक्का पी रहीं हैं, तू उनसे भी गया बीता है क्या ? देख डरने की ज़रूरत नहीं है । हम सब तेरे साथ हैं । होटल वाले की सेटिंग है पुलिस से .कुछ नहीं होगा ।" कहते हुए उसे जबरन हुक्के वाली टेबल पर बैठा दिया था ।

उसी टेबल पर बैठी रीना ने हरीश का हाथ अपने नर्म कोमल हाथों में लेकर नशे में हुई मदभरी आंखों में ढेरों प्यार समेटकर कहा था- "कम ऑन यार क्या नाम है तुम्हारा? डरो मत आओ मेरे साथ शेयर करो ।" "हरीश ...हरीश है इसका नाम । न्यू एडमीशन है रीना । आज से ये तुम्हारा पार्टनर ।" रीना ने हरीश के आगे नशे में हाथ बढ़ा दिया था- "ग्लैड टू मीट यू हरीश डार्लिंग ।" और तब प्रकाश और उसकी पार्टनर टीना एक दूसरे को आंख मारकर मुस्करा उठे थे । और फिर हरीश के मुंह से हुक्का लगा दिया था । हरीश एक दो कश के बाद मदहोश हो गया था । होटल के कमरे में तमाम लड़के-लड़कियां जोड़ा बनाये हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे । कुछ नशे में चूर हो एक-दूसरे को बांहों में लेकर चूमने लगे थे । हरीश ये सब दृश्य देखकर जैसे पगला गया था । फिर क्या रोज़ कॉलेज से गोत मार कर प्रकाश के साथ रीना को मोटर साईकिल पर बैठा पहुंचने लगा था हुक्का बार । शुरू-शुरू में तो कभी प्रकाश, कभी रीना और कभी टीना होटल का बिल चुकाते रहे । फिर जैसे-जैसे हरीश को लत पड़ती गई वैसे-वैसे

वह स्वयं ही अपनी मन से पैसे मांग मांगकर खर्च करने लगा । और न जाने कब उन्होंने आपने मंहगे शौक पूरे करने और अपनी प्रेमिकाओं की मांग को पूरा करने के लिए चेन स्नेचिंग करना शुरू कर दिया था । शुरू शुरू में तो दोनों ऐसा कार्य करने से डरते रहे । मगर पकड़े नहीं जाने पर उनका दिल खुलता गया और वे दोनों आये दिन भेष बदल-बदलकर चेन स्नेचिंग जैसे घोर घृणित कार्य करने लगे ।

आज उन्होंने कोई बड़ा हाथ मारने का पक्का इरादा कर लिया था जिससे वे अपनी अपनी प्रेमिकाओं को डायमण्ड रिंग गिफ्ट कर सकें । रात के लगभग नौ बजे होंगे । दोनों ने शराब का सेवन करने के बाद सिगरेट सुलगा ली थी और शहर के एकान्त इलाके में शिकार का इन्तज़ार करने लगे थे । सर्दियों के दिन थे । दोनों ने सिर पर हेलमेट के अलावा जैकेट पर भी कंबल लपेट लिये थे जिससे वारदात करने के बाद वे कंबल उतारकर किसी झाड़ी में फेंक सकें और जैकेट में लोग उन्हें पहचान नहीं सकें । सर्दियों के कारण उस स्थान पर अंधेरा होने के साथ ही बिल्कुल एकांत था । शहर का बाहरी इलाका होने के कारण इक्का-दुक्का लोग ही वहां से गुज़र रहे थे । क्योंकि यहां विवाह समारोह स्थल था अतः लोग शादी में खाना खाकर अपने-अपने घर लौट रहे थे । समारोह स्थल चुनने का एक ही मकसद था, ज़ेवर आदि से सज़ा-धजा ग्राहक आसानी से मिलने की पूरी उम्मीद थी ।

अनायास ही पास से तेज़ गति से कोई जोड़ा मोटर साईकिल पर गुज़रा जिसके पीछे बैठी महिला ने भारी ज़ेवर पहन रखे थे । हरीश लघुशंका के लिए गया था । उसके आते ही प्रकाश ने उसे पीछे बैठाकर मोटर साईकिल दौड़ा दी । जिस स्थान पर वे शिकार तक पहुंचे वहां काफी अंधेरा था । प्रकाश के इशारा करते ही हरीश ने शातिर बदमाश की भांति अंदाज़े से पीछे शॉल ओढ़े बैठी महिला के थोड़े से शॉल से अनढके खुले गले पर झपट्टा मारा और हाथ में जेवर आते ही फुर्र से आगे निकल लिये । पीछे वो जोड़ा वारदात के कारण दहशत में आकर लड़खड़ाकर मोटरसाईकिल सहित सड़क पर गिर पड़ा ।

उनके गिरने के कुछ ही देर बाद उनके आस-पास भीड़ इकट्ठी हो गई । लोग पकड़ो-पकड़ो करते तब तक वे सुरक्षित स्थान पर पहुंच चुके थे । वहां जाते ही दोनों ने घबराहट मिटाने के लिए रम की बोतल खोल कर जल्दी से गटागट ढेर सारी शराब गले से उतारी और औंधे मुंह पड़कर सो गये ।

सुबह उठे तो अखबार में रात की वारदात की खबर

पढ़ते ही हरीश के होश उड़ गये । रात जिसका शिकार किया था वो कोई और नहीं उसके मम्मी-पापा थे जो रात को रिश्तेदार की शादी से लौट रहे थे । उसे तो पता ही नहीं था क्योंकि वो तो उन्हें प्रतियोगी परीक्षा देने के बहाने शहर से बाहर जाने की कहकर घर से भाग आया था । उसके पिता के सिर में गहरी चोट आई थी जिन्हें रात में ही लोगों ने एम्बुलेंस बुलाकर अस्पताल में भर्ती करवा दिया था ।

हरीश का खून जैसे जम गया । वह आंखों में प्रायश्चित के आंसू लिये हरीश से कह उठा-

“ये क्या हो गया ? हम ये क्या कर रहे हैं ? प्रकाश हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई यार....। मां-बाप ने हमारा जीवन संवारने के लिए हमें कॉलेज में दाखिला करवाया । अपना पेट काट-काटकर ऊंची ऊंची फीस भर रहे थे और हम कहां से कहां आ गये ....? मेरे दोस्त हमसे बहुत बड़ी ग़लती हुई है । आज मेरे माता-पिता थे, कल तेरे भी हो सकते हैं। ये तो बाल-बाल बच गये, कहीं कुछ हो जाता तो ?”कहते-कहते प्रकाश के कन्धे पर सिर रखकर हरीश फफक-फफककर रो पड़ा । लगा जैसे कांच की किरचें उसके पैरों में धंस गईं हों । जैसे किसी घने रेगिस्तान में भटक गया हो जहां से निकल पाना उनके लिये बहुत मुश्किल हो । रोते-रोते अनायास ही हरीश ने प्रकाश को झिंझोड़ डाला - “मुझे नहीं चाहिये ये सब, मुझे मेरे पापा चाहिये । प्रकाश कुछ कर ....। तू तो मेरा पक्का दोस्त है ? बता न इस दलदल से कैसे निकलेंगे हम.....? पुलिस को क्या बताएंगे...? पापा को कैसे कहेंगे कि अपनी ही मां के गले पर झपट्टा मारा है हमने....। कैसे मुंह दिखाएंगे...?

रीना-टीना को क्या ये कहेंगे कि हम लुटेरे हैं.... बदमाश, चोर हैं.....? वो तो हमें रईस समझकर ही हमसे प्यार करती हैं । रिश्ते-नातेदार, आस-पडौस.......।“ हरीश ने आंखों में आंसू लिये पश्चात्ताप से अपने बाल नोंच लिये थे । प्रकाश किंकर्तव्यविमूढ़ सा कुछ सोचता रहा फिर हरीश के कंधे पर हाथ रख बोला- “जल्दी चल अस्पताल । तेरे ही पापा नहीं, वो मेरे पापा भी हैं । हम अपने गुनाहों की उनके चरणों में सर रखकर माफी मांगेगे । वो जो सज़ा देंगे हम कबूल करेंगे । मुझे पूरा विश्वास है कि वो हमें ज़रूर माफ़ कर देंगे । हमने जिस जिस की स्नेचिंग की है उनके घर जाकर उनके जेवर या उनका पैरा माफी मांगते हुए लौटा देंगे । हरीश विश्वास रख सब ठीक हो जायेगा । बस आज ये कसम खाते हैं कि हम कभी ऐसा घो[illegible] करेंगे मेरे दोस्त...।“ कहकर वह भी हरी[illegible]

**राजेश कुमार भटनागर**
**कहानीकार, जयपुर**
**89494 15256**

कविता

## मंदिर में रामलला आए

मंदिर में राम लला आए।
रावण दल देखो घबड़ाए।।
था सरयू का जल लाल हुआ,
गद्दार-राज था काल हुआ,
भक्तों पर गोली चलवाए।
पीड़ित साधु अब मस्त हुए,
सब असुर निशाचर पस्त हुए,
माँ शबरी फिर से हरसाए।
कुब्जा की कहीं कुबोली फिर ,
खल-शूर्पनखा की टोली फिर,
कहिं कीर्तन गा जन हरसाए।
कहिं मंगल गान सुहाते हैं,
तीरथ वैदिक धुन गाते हैं,
घर-घर में भगवा लहराए।
कहिं झालर सजे सितारों से,
कहिं आँगन सजे, बहारों से,
शिशुपाल कहीं पर टटराए।
मन हरि गुन गाए मस्ती से,
जन झूमे नाचे, हस्ती से,
नर ढोल मजीरा बलखाए।
'रवि' भाव सुमन अर्पित करता,
प्रभु-गीत कवित्त हिया रमता,
मन राम चरन में लपटाए।

**उमेश कुमार पाठक ”रवि”**
**बक्सर बिहार**


**“पहला सुख निरोगी काया”**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

**साहित्य सरोज पत्रिका के संपादन मंडल एवं स्थानीय प्रतिनिधि बनने हेतु सम्पर्क करें 9451647845**

गहमर, गाजीपुर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित
स्थापना वर्ष 2015
त्रैमासिक पत्रिका साहित्य सरोज
RNI No- UPHIN/2017/74520 ISSN: 2584-0843 (Print)

**साहित्य सरोज के आगामी अंक के लिए कहानियां एवं संस्मरण भेजें**
sarojsahitya55@gmail.com

# जुनूनी लड़की-सुनीता छाबड़ा

जुनून क्या होता है? किसी भी चीज को पाने की लालसा। पाने की चाह में इस तरह पागलपन कि जब तक वह नाम मिल जाए। जुनून किसी भी चीज का हो सकता है। चाहे प्यार का हो, घर बनाने का हो या अपने करियर का हो। जब तक वह लक्ष्य प्राप्त न हो, तब तक उसके लिए जझते रहना। जुनून में उम्र मायने नहीं रखती यह २ साल की उम्र में भी शुरू हो सकता है और ६० साल की उम्र में भी।

अक्सर लड़कियों का जुनून बड़ी अवस्था तक चलता है और शुरू भी होता है। जब जुनून शुरू होता है तो सुविधा मायने नहीं रखती हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को जब विजय प्राप्त करने का जुनून उठा तब उन्होंने अपने छोटे से पुत्र को पीठ पर बांधकर युद्ध प्रारंभ किया और विजय प्राप्त कर अपना नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित कराया।

मैंने उस २ वर्ष की अबोध बालिका मिस फुटबॉल का ऐसा जुनून देखा कि सुविधा न होने पर भी जुनून होने के कारण विश्व चैंपियन बन गई। यहां तक कि ना तो जूते खरीदने के लिए पैसे थे ना ही फुटबॉल के लिए। कपड़े की कतरनों से फुटबॉल बना पुराने जूते से अभ्यास प्रारंभ किया। उसे लड़की के विषय में क्या कहूं? उसका जुनून तो ऐसा था शादी हो गई, बच्चे हो गए और बच्चे अपने-अपने कामों में कामयाब भी हो गए। पर , उसके सपने अधूरे रह गए थे।

आप उसका जुनून फिर से उभर आया, वह अपने सपनों के विषय में सोचने लगी। सोचते ही उसका जुनून उसे पर इस कदर हावी हो गया कि उसने अपने सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात एक करके दिलो जान से मेहनत की और सफलता के मुकाम को पा लिया। एकलव्य का जुनून तो ऐसा था कि गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उनका ध्यान मंत्र कर बाढ़ विद्या का अभ्यास आरंभ किया। धनुर्विद्या में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि गुरु को ही उनके दाहिने हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा रूप में लेना पड़ा।

छोटा सा बालक श्रवण कुमार को ही ले लीजिए। अपने आंधी माता-पिता को अपने कंधे पर कमर में बिठाकर तीर्थ यात्रा कराने के जुनून ने उन्हें मातृ पितृ भक्त का सबसे बड़ा उदाहरण बना दिया। युगो युगो से उनका नाम अमर हो गया।

जुनून एक ऐसा कीड़ा है जो जीवन भर दिमाग से नहीं निकलता है जब तक की सफलता ना मिल जाए सपने पूरे ना हो जाए।जननी व्यक्ति को जब भी मौका मिलता है वह अपने कार्य में सफल हो जाता है। ऐसे अनेकों उदाहरण है हमारे सामने जैसे-एडिसन, अगर इन लोगों में जुनून नहीं होता तो आज बल्ब का आविष्कार नहीं होता आज रात को दिन में बदल पाते हैं बाप के इंजन का आविष्कार नहीं होता यह सब उनके जुनून के कारण हुआ कि हम दूसरों द्वारा चांद तक पहुंच गया। जुनून अच्छी चीज का होता है तो वह विरोध को भी जन्म देता है।

गांव में कोई भी चिकित्सा केंद्र ना होने पर कितनी असुविधाओं सामना करना पड़ता है। यह देखकर जब उसे लड़की ने डॉक्टर बनने का निश्चय किया तो घर और गांव के लोगों के विरोध करने पर भी उसके जुनून ने उसे पर हावी होकर उसे उसके मुकाम तक पहुंचा दिया। अंत में वह डहक्टर बन गांव में चिकित्सालय खुलवाकर सेवा में लग गई। यह सब जुनून के कारण ही संभव हो पाया।

**सुनीता छाबड़ा**
**गाजियाबाद**
**9953216663**

**"पहला सुख निरोगी काया"**
70% बिमारियों का कारण वजन का अधिक होना
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

**साहित्य सरोज पत्रिका के संपादन मंडल एवं स्थानीय प्रतिनिधि बनने हेतु सम्पर्क करें 9451647845**

गहमर, गाजीपुर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित
स्थापना वर्ष 2015
त्रैमासिक पत्रिका साहित्य सरोज
RNI No- UPHIN/2017/74520 ISSN: 2584-0843 (Print)

**साहित्य सरोज के आगामी अंक के लिए कहानियां एवं संस्मरण भेजें**
sarojsahitya55@gmail.com

# बाल साहित्य :-विभिन्न आयु वर्ग में लेखक की भूमिका :-

**शोध**

**सा**हस, पराक्रम, प्रेम, और नवोन्मेषशाली प्रतिभा बालकों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। किंतु वर्षो की दासता ने हमारे स्वभाव को विदेशी बना दिया और हमारे साहस और उत्साह की आग को बुझा दिया। परन्तु वर्तमान पीढ़ी और आगामी पीढ़ी में पुनः उत्साह से भरा जा सकता है अच्छे बाल साहित्य के माध्यम से ।

आज के वर्तमान परिपेक्ष में बाल साहित्य के सृजन पर सबसे अधिक जोर देने की आवश्यकता है ताकि बालक अनुकूल जलवायु पाकर अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों और प्रतिभा का विकास कर सके। वस्तुतः बालकों के लिए लिखना सरल नहीं है । उसका क्षेत्र जितना व्यापक है, उसकी कक्षाएँ उतनी ही सीमित है और बच्चों के लिए लिखने की कला उतनी ही कठिन है, जितनी उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करने की ।

यदि हम बाल साहित्य को गंभीरता से लेना चाहे तो हमें बाल साहित्य के स्वरूप पर विचार करना होगा। एक बाल साहित्यकार जानता है की बालक की विभिन्न अवस्था पर विकास की एक ही प्रक्रिया के विभिन्न चरण होते है । शिशु, जन्म लेने के बाद से लंबे समय तक नितांत असहाय होता है । इस अवधि में उसे पूर्णतः दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यहीं पर निर्भरता उसके सामाजिक जीवन की सबसे महत्वपूर्ण प्रशिक्षण अवधि होती है । इस समय बालक जो कुछ भी सीखता है उससे उसकी आगामी जीवन दशा तय होती है । यह विकास ही उसे भावी प्रशिक्षण अवधि की कठिन जिम्मेदारियों को उठाने के लिए तैयार करता है। भाषा ज्ञान के आधार पर ही बालक की पहली अवस्था की सीमा तय की जाती है आरंभ में हर वस्तु बच्चों के लिए नया अनुभव होती है यह अनुभव उसकी क्रियाओ के परिणाम होते हैं।

इस अवस्था में उसका मुख्य मानसिक कार्य क्रियाओं और अनुभवों के बीच संबंध स्थापित करना होता है। इस उम्र के बच्चों के लिए लिखना बहुत कठिन कार्य है ।केवल ४ से ६ वर्ष के बच्चों के लिए तुम पुस्तक तैयार की जा सकती हैं लेकिन उन्हें तैयार करना अकेले लेखक के बस की बात नहीं है । क्योंकि लेखक के पास अपनी बात कहने के लिए भाषा के बिना और कुछ भी नहीं होता और इस वर्ग के बच्चे अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से कहने,सुनने और सीखने की प्रक्रिया के बीच होते हैं। इसलिए लेखक को अपनी बात बच्चों तक पहुंचाने के लिए चित्रकारों की सहायता लेनी पड़ती है और इस सहायता का अनुपात लेखक के अपने काम से अधिक होता है।

बालक भाषा के माध्यम से अपनी बात कहने लायक हो जाता है। बालक के संपूर्ण विकसित, कल्पनाशील किंतु अछूते मस्तिष्क पर इस विशाल संसार की एकदम अनहोनी, अनजानी, अनदेखी और अनसुनी घटनाओं का एक साथ असर पड़ता है और उसे इन नाना प्रकार के प्रभावों को और उनसे प्राप्त अनुभवों को बिना किसी पूर्व अनुभव के वर्गीकृत करना पड़ता है।

इस अवस्था में ही बालक की इस निराले संसार की नींव पड़ती है जहां रंग बिरंगी परियों, भयानक राक्षसो, विशालकाय जिन्नो,मनुष्यों की तरह बोलने वाले जानवरों और तरह-तरह के जादू चमत्कारों का खुले दिल से स्वागत होता है।

छःसे दस वर्ष तक की आयु की अवस्था बालक की द्वितीय अवस्था होती है। इसमें बालक प्रथम आयु वर्ग की विशेषताओं से धीरे-धीरे मुक्त होने लगता है और स्वयं को मनुष्य की तरह बोलने वाले पशु -पक्षी, कल्पना प्रधान लोक कथाओं, पहेलियों, गणित के प्रश्नों, वस्तुएँ बनाने के विभिन्न तरीको आदि से जोड़कर अपने मस्तिष्क का विकास करता है। ऐसे में एक लेखक का दायित्व बनता है कि वह उन्हीं शब्दों, विचारों, बातों, कल्पनाओं और भावों का उपयोग करें जिससे बालक का भाषा ज्ञान विकसित अवश्य हो जाता है। १० से १४ वर्ष तक की आयु सबसे महत्वपूर्ण आयु होती है । इस उम्र में बालक अपने मस्तिष्क की क्षमता का पूरा उपयोग करने योग्य हो जाता है और विभिन्न विषयों की परिकल्पना अपने स्तर से करने लगता है । उसका मस्तिष्क वस्तु जगत और विविध भौतिक अभौतिक संबंधों, घटनाओं आदि के बारे में तार्किक रूप से सोचने योग्य हो जाता है । इस आयु में बचकानापन कम और समर्थ अधिक होने लगता है । अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने में बाधा डाले जाने पर किसी न किसी रूप में क्रोध प्रकट करने लगता है । वह दो- चार मित्रों का दल बनाकर जगत के असीम विस्तार को टटोलत हुआ

इधर-उधर घूमने लगता है। उसमें अनजाने को जानने,प्रकल्पित को परखने और छिपे हुए को देखने का उत्कंट उत्साह बढ़ाने लगता है। इस उत्साह की फसलस्वरूप इस आयु वर्ग के बच्चों को रोमांचकारी यात्राएं, खोज की कथाएं एवं साहसिक कथाएं आदि अत्यंत प्रिय लगने लगती हैं।

इस समय उन्हें उनके मतलब की बहुत सी बातें बताई जा सकती हैं। शरीर की रक्षा,व्यवस्था घरेलू काम आदि से संबंध रखने की वाली कथा-कहानी लिखी जा सकती है तथा कथित रोमांटिक एवं प्रेम कथाओं को इस आयु के लड़के -लड़कियों द्वारा पसंद किया जाता है । एक लेखक के लिए आवश्यक नहीं कि वह कोई वैज्ञानिक तथ्य को समझाने के लिए मुक्त आधार ही दें। एक लेखक अपनी कलम के माध्यम से अमूर्त से प्रारंभ कर उसका विस्तार करते हुए तथ्य विशेष का स्पष्टीकरण कर सकता है ।

इस आयु में साहित्य एक मित्र, मार्गदर्शन, शिक्षक और सब कुछ होता है थोड़ी सी काव्य में भाषा लिखकर बच्चों के हृदय और बुद्धि को स्पष्ट कर सकता है। रंगीन चित्र पहले दो आयु वर्ग के बालकों को आकर्षित करते हैं लेकिन अब उन्हें आकर्षित करता है कथा का अंतरंग बाल मनोविज्ञान की सैद्धांतिक बातें स्वस्थ और समर्थ बाल साहित्य के विकास में बहुत सहायक हो सकती हैं विषय की गंभीरता को समझने वाले साहित्यकारों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-१)बाल सुरभि, रजत जयंती स्मारिका २) वीणा,अंक :१०-११, वर्ष 1974 (३)माँ की गोद में तथा शरणागति, प्रकाशक :राधा-कृष्णा चेरेटी ट्रस्ट, कलकत्ता, संस्करण १९८७

**प्रियंका खंडेलवाल**
**मथुरा, उत्तर प्रदेश**

कविता

## अब ना हटेगें कदम

ऐ सुन मेरे भाई मत बोल तीखा,
अभी तो मैंने बस चलना है सीखा।
पूरा है भरोसा स्वयं पर मुझको,
मुकद्दर से मैंने लड़ना है सीखा।
लगा ले चाहे कोई जोर कितना,
दुसाध्य है यारो मुझको जीतना।
तोड़कर रहेंगे हर एक आलान,
मैंने भी तो अब उड़ना है सीखा।

कहता हूँ जो वो मैं कर के रहूँगा,
जुल्मों सितम अब ना हरगिज सहूँगा।
मुझे बैसाखी की नहीं है जरूरत ,
अकेले ही मैंने लड़ना है सीखा।
चाहे जमाना ये कहर बरपाए,
राह में चाहे फूलों को बिछाए।
पड़ता नहीं अब कोई फर्क मुझपे,
शोलों पर मैंने चलना है सीखा।

हटेंगे ना पीछे अब कदम मेरे,
चाहे हो कोहरा जितना घनेरे,
करेंगे एकदिन अम्बर को वश में,
अनंत में विचरण करना है सीखा।

**कुमकुम कुमारी "काव्यकृति"**
**मुंगेर, बिहार**

## नाग के पड़े सुहार -अर्चना बाजपेयी

नाग के पड़े सुहार ,शीश गंग श्वेत हार,
मौलि चन्द्र केश मध्य, शुभ्र हो विराजते।
वाम अंग गौरि मातु, गोद में गणेश तात,
बैल पे चढ़े सुहात, शूल शंभु धारते।
मेटते कुअंक भाल, क्या करे जु वक्र काल,
हाथ फेर शंभु नाथ, भक्त को दुलारते।
कामना यही विशेष, चाहिए कृपा अशेष
छोड़ भोग मोक्ष आज, नाथ को पुकारते।

**अर्चना बाजपेयी, हरदोई**

गहमर, गाजीपुर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित
स्थापना वर्ष 2015
त्रैमासिक पत्रिका साहित्य सरोज
RNI No- UPHIN/2017/74520 ISSN: 2584-0843 (Print)

Fitness केवल वज़न कम या अधिक करने
अथवा मोटा या पतला होने को नहीं कहते
Fitness means
F resh
I ntelligent
T ension free
N onegativity
E nergetic
S tylish
S ocial
F itness means
E njoy colorful life
Jagruti Nutrition Club Of India
JNC
8004975834
"पहला सुख निरोगी काया"
70% बिमारियों का कारण मोटापा होता है
स्वस्थ्य एवं सक्रिय जीवन शैली का राज
JNC के साथ, कॉल करें 7985798456

देश के साहित्यकारों,कलाकारों,शिक्षकों एवं गहमर क्षेत्रवासियों द्वारा 09 से 17 अप्रैल 2024 तक

नौनिहालों के लिए गाय का दूध, शिशुओं को दूध पिलाने की व्यवस्था, गुड़ व ठंडा पानी, गर्म पानी, आकस्मिक चिकित्सा, रात्रि विश्राम, जरूरतमंद को रात में भोजन गुलाब जल छिड़काव, सूचना प्रसारण, स्वास्थ व फिटनेस जांच, प्रतिदिन प्रतिभा प्रदर्शन व सांस्कृतिक कार्यक्रम , पुस्तक एवं घरेलू उत्पाद प्रदर्शनी व अन्य कार्यक्रम

**9 दिवसीय**
**दर्शनार्थी सेवा शिविर**

स्थान-: माँ कामाख्या धाम,
गहमर, गाजीपुर (उ0प्र0)

नौनिहालों के लिए गाय का दूध,
शिशुओं को दूध पिलाने की व्यवस्था
गुड़ और ठंडा पानी,
गर्म पानी,
आकस्मिक चिकित्सा,
रात्रि विश्राम,
रात में भंडारा,
गुलाब जल छिड़काव
नौ दिन प्रतिभा प्रदर्शन व सांस्कृतिक कार्यक्रम
पुस्तक एवं घरेलु उत्पाद प्रदर्शनी

हेतु सहयोगी का नाम..............................
पता..............................
मोबाइल नम्बर..............................
प्राप्त धनराशि..............................

प्राप्तकर्ता

देश के साहित्यकारों,कलाकारों,शिक्षकों एवं गहमर क्षेत्रवासियों द्वारा 09 से 17 अप्रैल 2024 तक

**9 दिवसीय दर्शनार्थी सेवा शिविर**

स्थान-: माँ कामाख्या धाम, गहमर, गाजीपुर (उ0प्र0)

क्रमांक .................................... दिनांक..............

सहयोगी का नाम..........................................

पता..........................................................

........................पिन...........मोबाइल.................

प्राप्त धनराशि..............................................

व्यवस्थापक

**गहमर वेलफेयर सोसाइटी**
ग्राम व पोस्ट गहमर,तहसील सेवराई,जिला गाजीपुर(उ0प्र0) 232327
मोबाइल 9451647845 मेल akhandgahmari@gmail.com
रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र संख्या 445/2013-14 नवीनीकरण संख्या R/GAZ/05753/2023-2024

प्राप्तकर्ता

सहयोग करना और करना दोनो लक्ष्य हमारा

**सेवा शिविर में अपना सहयोग अवश्य दें,**
**काल करें 9451647845**